वर्ष 27 | फाल्गुन-चैत्र | मार्च-2022 | अंक 1 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

79वा जन्मोत्सव

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

''मैं शरीर नहीं हूं परन्तु उससे भिन्न ज्ञायक आत्मा हूं तथा नित्य-शाश्वत हूं। यह वेदना केवल पूर्व कर्म की है परन्तु वह मेरा स्वरुप नाश करने को समर्थ नहीं, अतः मुझे खेद नहीं करना चाहिये।'' -आत्मार्थी का ऐसा अनुप्रेक्षण होता है।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा।
समो णिंदापसंसासु, तहा माणावमाणओ॥

साधक लाभ और अलाभ में, सुख और दुःख में, जीवन और मरण में, निन्दा और प्रशंसा में तथा मान और अपमान में समभाव रखता है। ***- उत्तरा. सूत्र, 19.91***

पाथेय

बस ''सत्य'' के लिये ही है प्रभु मैं तुमसे विनंती करता हूं इस मन को फिर से सक्रिय बनाओ। और इसे वह ज्ञान प्रदान करो कि तुम्हारी इच्छा को समझ सके। तुम एक-एक कर सभी बाधाओं को तोड़ डालो, जिससे यह आधार अभिव्यक्ति की सभी संभावनाओं के साथ अपनी सर्वागीण निपुणता कर सकेगा प्राप्त। हे प्रभु पृथ्वी सभी आकांक्षाएं मेरे अन्दर हो जाऐं एकत्र, जिससे तुम उन पर दृष्टिपात कर सको और तुम्हारी इच्छा ही उनमें काम करें, छोटे से छोटे प्यारे, स्पष्टतः प्रमुखता एवं निश्चयता के साथ इस प्रकार चिर प्रतीक्षित मुर्हूत के उदय का समय शीघ्र आएगा समीप यह मेरी सम्पूर्ण सत्ता गहरे आनन्द एवं अपूर्ण विशालता में हो रही उल्लसित और तुम्हारे विचार एवं कार्य पद्धति मेरे अन्दर हो रहे है स्पष्ट उदित।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-27 फाल्गुन-चैत्र मार्च 2022 अंक-3

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- खुद निर्मोही : जग को हरनेवाले गुरुवर नवरत्न (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन	5
4- नवरत्न : एक अलौकिक दिव्य विभूति, अनुभूति	6
5- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा.	7-8
6- सर्वतोन्मुखी प्रतिभा पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा	9
7- गुरु महिमा, सद्ज्ञान और आचरण	10
8- मैं अदमु क्ता-पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म. जिन शासन की क्रियाएं भी हितकारी....	11-12
9- आम	13-14
10- सद्गुरु की कृपा के अवतरण का महापर्व , गुरु और शिष्य	15-16
11- अलौकिक सुख और नवरत्न गुरुवर	17
12- धर्म और शाकाहार-श्रीमती सुशीला पाटनी, चमत्कार का दूसरा नाम है जैन मुनि भगवंत	18-19
13- विपदाएं स्थिर नहीं रहती	20-21
14- प्रतीक्षा में न बैठे, स्वयं ही बढ़ चलें, गुरु	22-23
15- आत्मिक प्रगति को सरल बनाती है, रोटी	24-25
16- गुरु-शिष्यों के अन्तर्संबंधों पर टिकी संस्कृति चेतना, अच्छी नीयत	26-28
17- वर्गपहेली- 322 - जयंतीलाल जैन	29
18- ज्ञान गंगोत्री- 322 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.	30
19- शासन-समाचार	31-41
20- हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक	42

संपादकीय

खुद निर्मोही : जग को हरनेवाले गुरुवर नवरत्न

महान पुरुषों के गुणगान जब हम करते है तब हम उनके संस्कारों के ही गीत गाते है। चाहे गुरुदेव आज हमारे बीच नहीं है लेकिन पूज्यश्री जिन सद्गुणों की सम्पत्ति देकर गये है उससे आज हम समृद्धशाली है। पूज्यश्री भौतिक स्वरुप में आज हमारे बीच नहीं है लेकिन आपश्री की उपस्थिति को मैंने अनेक अवसरों पर अपने समक्ष पाया है, पूज्यश्री के सम्पर्क में आनेवाला हर व्यक्ति यह अनुभव करता था कि पूज्यश्री मेरे ही है। जबकि ऐसा नहीं था वे सबके थे जिससे बात करते थे उसको यही लगता था कि गुरुदेव मेरे है। गुरुदेव के प्रति समर्पण भाव से मिलने आनेवाले अनेक प्रकार की आशा और कामना लेकर आते थे, यह मैंने कई बार देखा है। सब अपनी भावना पूज्यश्री के पास रखते थे, मैंने भी अपनी बात दो-तीन बार रखी थी, पूज्यश्री फर्माते थे कि मैं कुछ नहीं करता हूं, आपके भाग्य में, कर्म में जो लिखा है वह होगा पर पूज्यश्री सबकी भावना को पूरा करते ही थे, अनेकोनेक गुरुभक्तों की कामना को आपश्री ने पूर्ण किया, मेरे पास ऐसे एक नहीं सैकड़ों उदाहरण है, कई बार आगमोद्धारक में भी मैंने उन्हें प्रकाशित किया है।

सर्वजन शुभकांक्षी मालव भूषण जैन जगत में चेतना का पांचजन्य फूंक कर तो चले गये है लेकिन पूज्यश्री हमारे बीच धर्म संस्कारों की चेतना लहर को छोड़ गये है किसी के जीवन में भोग विलास की दरारें पड़ गई तो किसी के जीवन में अध्यात्म की कोंपतें फूट गई। कोई भक्ति रस पान से अपनी प्यास बुझाने लगा किसी की जिंदगी में ठंडा पड़ा उत्साह धर्म-प्रभु भक्ति के रुप में पुनः जीवन में रंग भर गया, धार्मिष्ठों में श्रद्धा और आस्था का संचार हो गया, जिसने जीवन में कभी धर्म-मंदिर-गुरु नहीं देखे ऐसे भविकजन जिसमें जैन-अजैन दोनों है, के जीवन में गुरुदेव की वाणी स्वाति की बूंद बनकर अमृत बरसा गई। कभी मंदिर नहीं जाने तत्कालिक सामाजिक-पारिवारिक परिवेश से असंतुष्ट आक्रोश से भरे विद्रोही युवा यौवन की मस्ती में मदहोश-संयम त्याग के पथ से कोसों दूर राग रंग की सतरंगी दुनिया में खोये रहनेवाले सैकड़ों युवाओं के जीवन को धर्म और मंदिर की ओर मोड़ने वाले गुरुदेव की कमी सबको खल रही है लेकिन गुरुदेव की चेतना आज भी गुरुभक्तों में तेजोमयी बनी हुई है। पूज्यपादश्री का विचार वैसे तो रोज ही मन मस्तिष्क में स्थायी जगह बनाकर स्थापित है फिर भी आपश्री की एक भोली भाली निश्चल निष्कपट निर्दोष चन्द्रमां जैसी शीतलता देनेवाली मंगलवर्द्धिनी सौम्य मूर्ति नेत्रों को हमेशा मंगल वंदना का भाव देती है। मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि पूज्य गुरुदेव वर्तमान युग के आध्यात्मिक अलौकिक संत, श्रमण परम्परा की अविस्मरणीय उपलब्धियों के उत्तुंग शिखर, वात्सल्य मूर्ति एवं अद्वितीय अपनत्व प्रदान करनेवाले थे उनके जैसा गुरु अब कहां मिलेगा ?

मैंने कई बार गुरुदेव के ज्योतिर्मय व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में बांधने का प्रयास किया किन्तु हर बार फेल हुआ क्योंकि शब्दों को कागज पर उतारते ही, गुरुदेव का एक नया गुण सामने आ जाता और मेरे शब्द हार जाते। पूज्यश्री के जीवन और व्यक्तित्व में अलौकिक ज्ञान और सहृयता का समन्वय है। जब यह दोनों गुण किसी प्रबुद्ध आत्मन् में समाविष्ट हो जाते हैं तो वह जनमानस की श्रद्धा का केन्द्र और आराध्य बनकर परमेश्वर का रुप धारण कर लेता है। पूज्य गुरुदेवश्री का जीवन दर्शन भी ऐसा ही था। निरभिमानी जीवन के मंत्रदाता संकल्प और साधना के सुमेरु वात्सल्य की प्रति मूर्ति ऐसे सम्यक् द्रष्टा गुरुदेव जीवन में हमेशा याद आते रहेंगे।

गुरुदेव के जीवन चरित्र से जैनों से अधिक अजैन प्रभावित हो जाते थे। पूज्यश्री का साधुवेश इस भौतिकतावादी युग में सबके प्रति गुरुदेव का उदारतावादी मंगल आर्शीवाद भाव उन्हें परम आश्चर्यकारी और कौतुहलजन्य लगता था ऐसे में गुरुदेव का महान व्यक्तित्व मानव संस्कृति की एक महान प्रयोगशाला के रुप में सामना आता है, जनमानस गुरुदेव के प्रति इसलिये तो दीवाना था गुरुदेव का उदारभाव सबके कल्याण की कामना करता था आत्मसिद्धि के मार्ग पर जानेवाले गुरुदेव इसी कारण सबकी यादों में बसे हुए है और हमेशा रहेंगे।

समय, साल व्यतीत हो जाते है पर स्मृतियां सदैव के लिये हृदय में अंकित हो जाती है। आज जब यह लिख रहा हूं तो गुरुदेव के साथ बीते समय की अमिट स्मृतियां ध्यान में आ रही है, जिन्हें मैंने स्मृतियों को देवता में रुप प्रतिष्ठित किया है ऐसे परम आराध्य संत सिरोमणी गुरुदेव के व्यक्तित्व को शब्द और कार्यो से समझना कठिन रहा पर अनुभव और चारित्र से समझना आसान है, पूज्यश्री को देखते ही मन अनायास कह उठता- **चिदानन्दमय देह तुम्हारी,** गुरुदेव के सम्पर्क में आने पर बस इतना ही लगा था कि उद्देश्यहीन जीवन को उद्देश्य मिल गया। हां मैंने कभी भाग्य किस्मत और नियति जैसे शब्दों के अर्थ नहीं खोजे परन्तु जिस दिन गुरुदेव का साथ छुटा उस दिन नियति का शब्दार्थ जान पाया। बस नियति मानकर ही सब कुछ स्वीकारना होता है जो होना है नियति वही कराती है।

गुरुदेव का नित्य स्मरण ही मेरी हर रोज गुरु पूर्णिमा है मेरे अंदर धर्म का अंकुरण करनेववाले पूज्यपाद गुरुदेवश्री की प्रत्येक कर्मशीलता हम गुरुभक्तों को प्रेरणा दे रही है हमें हमेशा उपकृत करती रहे, इसी भाव से इस युग के महान संत को सादर वंदना।

** डॉ. सुभाष जैन*

नवरत्न :एक अलौकिक दिव्य विभूति

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, कांके लागू पाँव।
बलिहारी गुरुदेव की, जिन दियो गोविन्द बताय।

एक दिव्य आत्मा, एक अलौकिक महापुरुष जिसने इस धरती पर जन्म लिया। संयम त्याग के मार्ग पर आगे बढ़कर जैन श्रमण संघ को चार चांद लगाये और अपने अनमोल ज्ञान के प्रकाश से सारे विश्व को प्रकाशित कर गये हैं, जो हमारे सागर श्रमण संघ के सरताज हैं। उनके चरण जहां पड़ते थे वहां संयम की सुगंध से सारा वातावरण महक जाता है। जिनकी वाणी में मिश्री से भी ज्यादा मिठास थी, वे एक जादू थे ,उनके दर्शन इतने पावन थे कि आत्मा पवित्र हो जाती थी। जो एक बार दर्शन कर लेता वह बार-बार उनके चरणों में जाना चाहता था उनका प्रवचन ऐसा अद्भूत है जो एक बार सुन लेता है भाव विभोर होकर अपनी सुध-बुध खो बैठता है अर्थात् मंत्र मुग्ध हो जाता है, जिनके नाम से सारे संकट मिट जाते थे जिनमें धर्म सी धीरता, सागर सी गंभीरता चंदन सी शीतलता, गंगा सी पवित्राता था जिनका ज्ञान अथाह सागरथा जिनका चेहरा हमेशा गुलाब की तरह खिला रहता था। खुद प्रसन्न रहते थे और दूसरों को भी प्रसन्न रहने का, आनन्द मंगल में रहने का आशीर्वाद देते रहते थे। उन महान गुरुदेव का क्या वर्णन करें।

जिनके संयम का अखाण्ड दीपक हमेशा जलता रहता है वैसे तो सभी गुरु भगवंत संयम में महान है, ज्ञान, दर्शन और चारित्र के धनी है फिर भी कोई विरला ही ऐसा महापुरुष होता है, जो हर चीज से निर्लिपत है, जो सम्मान से हमेशा दूर भागते हैं। फिर भी इन्हें उपाधियों से सम्मानित किया जाता है। कहते हैं ना जो जिस चीज से दूर भागता है वह उनके उतनी ही करीब आती है। यही हाल इन महान पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा का है।

''जो इतने बड़े होने के बाद भी अपने को छोटा कहते थे अपने को गुरु का छोटा सा शिष्य समझते थे, कहते है यह सब गुरुदेव का ही तो है। कितना समर्पण भाव, कितनी भक्ति, कितनी श्रद्धा थी अपने गुरुदेव के प्रति, गौतम स्वामी जैसी विनय अपने गुरुदेव के प्रति उस महापुरुष में कूट- कूट कर भरी पड़ी थी। हमेशा स्व-निन्दा और पर-प्रशंसा करना जिनकी आदत थी उन गुरुदेव की महिमा का किनारा कहां मिलता है। वह क्षीर सागर है जो अपार है, असीम है, कितना लिखें जन्म जन्मांतरों तक लिखें जायें फिर भी कितना लिख पायेंगे हम। सागर की केवल दो बूंदे, उन महापुरुष आराध्य गुरु भगवंत के संयम सौरभ की सुगंध चारों दिशाओं में बिखर रही है।

जिनका नाम विशाल, जिनका हृदय विशाल, जिनका ज्ञानसंयम चारित्र विशाल, उस विशाल विशालता का क्या वर्णन करें। ऐसे दिव्य महान पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा म. के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम

जल की बूंद सागर में घुलने लगी तो उसे अपने अस्तित्व के समाप्त होने का बड़ा दुःख हुआ। सागर ने सांत्वना दी- ''बेटी! तुम्हारी जैसी असंख्य बूंदों का तो मैं सम्मिलित रुप हूं। यहां आकर तुम लघु से विराट का अनुभव करोगी।'' बूंद को सागर की बात भायी नहीं। वह उड़कर बादल में चली गई। बादल बरसे। बूंद भी जमीन पर आ गिरी। अबकी बार वह धूल धूसरित भी हुई और नदी के प्रवाह में दुर्गति कराती हुई पुनः सागर की ओर बह चली। वहां पर पहुंच कर उसे बड़ा पछतावा हुआ कि उसने सागर की बात यदि पहले मान ली होती तो इतना उठा-पटक एवं व्यर्थ के श्रम से बचती एवं सच्ची शांति का अनुभव करती।

यही है समर्पण। विराट में समर्पित होकर स्वयं भी हम विराट बन जाते हैं।

अनुभूति- सत्य तर्क मात्र नहीं है। तर्क सत्य का विश्लेषण कर सकता है, उसे जान नहीं सकता। जानना मूलतः अनुभूति है। इसलिए जब तक तर्कोत्पन्न सत्य अनुभूति-सिद्ध नहीं होता तब तक वह वास्तविक ज्ञान नहीं होता। एक फूल का वैज्ञानिक विश्लेषण उसके बारे में सब कुछ बता सकता है, लेकिन फूल की सुंदरता और उसकी सुगंध का अनुभव नहीं करवा सकता और यदि फूल में सुगंध और सुंदरता नहीं है तो उसके होने का अर्थ कुछ और होगा। यह अनुभूति ही है जिसमें ज्ञान और ज्ञानी का भेद मिट जाता है। अनुभूति ज्ञान को बासी नहीं होने देती क्योंकि वह सदैव मौलिक और ताजा होती है।

पाप की सजा भारी...! *प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

निंदा में किसको फायदा ? किसको नुकसान :-

इस विषय का भी विचार किया जाय कि दो में से किसको फायदा है ? निंदा करने वाले को या जिसकी निंदा की जाय उसको ? एक बात में दो व्यक्ति निमित्त कारण है। एक तो निंदा करने वाला है और दूसरा जिसके विषय में निंदा की जाय वह। अब इतने विवेचन से यदि परपरिवाद-पराई निंदा का विषय काफी समझ में आ गया होगा ? अतः इस प्रश्न का उत्तर आप ही विचारिए कि दो में से किसको फायदा है ? किसको नुकसान है ? क्या जिसकी निंदा की जाती है उसको कुछ भी नुकसान है ? शायद थोड़ी समाज अप्रतिष्ठा-अपकीर्ति हो सकती है लेकिन लोग मूर्ख नहीं है। किसी की बात सुननेवाले की भी कीमत तो कर ही लेते है। वह निंदक कितना अच्छा है या कैसा है ? कितना पानी में है यह कीमत लोग कर ही लेते हैं। आप बताइए क्या सभ्य समाज में किसी निंदक की ज्यादा कीमत है ? ज्यादा मान-सम्मान है ? क्या उसे कभी कोई पद-प्रतिष्ठा या सत्ता मिली है ? नहीं ? क्यों नहीं ? समाज के लोग चूंकि उसे अच्छी तरह समझते है। जानते है। अतः ऐसी व्यक्ति को कौन मान-सन्मान-पद-प्रतिष्ठा कौन देगा ? कोई नहीं देगा ? अतः निंदकों की किमत समाज के सामाजिक कुत्ते, कौए या धौबी की सो होती है। उपाध्यायजी उसे असराल की उपमा देते हैं।

बापड़ो जीवड़ो तेह मूरखपणे,
गज परे निज शिरे धूल नांखे।
द्राक्ष-साकर-सरस-वस्तु सवि परिहरो,
काक जेम चांचशुं मेल चूंथे॥
निंदकी तेम गुण कोड़ी करी,
चित्त मां पर तणां दोष गुथे ॥
अंग जेम गोपवो मीन ने मारवा,
बग रहे ताकी जीभ नीर नाके।
नीच तेम छिद्र गोपवी करी आपणां,
रात-दिन आरका छिद्र ताके॥
निपट लंपट पणे लंपटी कूतरो,
वमन देखी करी नफ्ट नाचे।
दोष लववेश पामी तथा पातकी,
अधम जनसबल मन मांहि माचे॥

निंदा की सज्झाय में कहते है कि-निंदक बेचारा मूर्ख मनुष्य की तरह जैसे हाथी अपनी ही सूंढ से अपने सिर पर धूल डालता है वैसे ही किसी किसी के दोषों की निंदा करना अर्थात् उसके का भार अपने सिर पर डालने जैसा है। धूल नहीं बिगड़ती परन्तु हाथी का सिर बिगड़ता है। उसी तरह जिसकी निंदा की जाती है उसका कुछ नहीं बिगड़ता है। उसी तरह जिसकी निंदा की जाती है उसका कुछ नहीं बिगड़ता परन्तु निंदक का ही बिगड़ता है। जैसे द्राक्ष शक्कर जैसी मीठी वस्तु को छोड़कर कौआ बेचारा रास्ते पर के गंदे मेल कफ-थूंक में हाथ डालता है उसी तरह निंदक भी गुणों को छोड़कर दोष-दुर्गुणों में मुंह डालता है अतः वह अतः वह कौए के जैसा है। जिस तरह बगुला अपने अंगों को संकुचित करके एक पैर पर पानी में खड़ा रहता है लेकिन वह ठग भगत मछली को पकड़ने, खाने की तलाश में स्थिर है। उसी तरह नीच निंदक भी रात-दिन पराए छिंद्र देखने में मस्त रहता है। दीवाल के छिद्र में से भी बात सुनने के लिये वह कान लगाए रहता है। खिड़की की तिराड़में से भी यदि कुछ सुनने को मिले तो वह वहां लगा रहता है। वह सतत अपने ग्राहक को ढूंढता फिरता है। उसके पीछे-पीछे जाता है। धर्म स्थान में धर्माराधना करने का बहाना बनाकर भी वह वहां भी किसी की दो बातें करने तथा सुनने जाता है (अतः उसे बबुले की तरह ठग भगत कहा है।) उसी तरह कुत्ते की उपमा देते कहा है कि- एक कुत्ता भी किसी को हुई कै (वमन) देखकर भी पूंछ पटपटा कर खाने दौड़ता है और जीभ से चाटता है उसी तरह निंदक भी किसी का अंश मात्र भी दुर्गुणदोष दिखा नहीं को भागा ही है और कुत्ते की वमन चांटने रुप वह कहीं न कहीं से दो-चार बातें ढूंढ ही लाता है उसके लिये यहां से वहां भागता है। इस तरह अनेक उपमा और उदाहरणों के साथ निंदक की तुलना की गई है परन्तु एक भी ऊंची अच्छी उपमा नहीं दी है। सब हल्की-खराब उपमा दी है।

निंदा न करशो कोइ नी पारकी रे,
निंदा ना बहोला महा पाप रे।
वैर विरोध वाधे घणो रे,
निंदा करतो न गणे मायने बापरे॥

समय सुन्दर मुनि इस तरह कहते हैं कि-अरे भाई ! कभी भी किसी पराए की निंदा मत करना, इसके अनेक महापाप है। एक तो बैर-वैमनस्य किसी के साथ बढ़ता है और निंदा करने के व्यसनवाला फिर अपने माता-पिता को भी नहीं छोड़ता। समय पड़ने पर उनकी भी निंदा करने में नहीं थकता। आज किसको पसंद है कि मेरी निंदा हो तो अच्छा है ? नहीं किसी को भी पसंद नहीं है, प्रिय नहीं है और फिर भी यदि कोई निंदा करता है तो वह उसके साथ दुश्मनता खड़ी करता है। दोनों के बीच वैर-वैमनस्य बढ़ता है और कभी-

कभी बड़ा लम्बा झगड़ा हो जाता है। मारपीट भी होती है। ऐसे समय में निंदक दो मार भी खाता है और फिर मृषावाद-असत्य का सहारा लेकर अपने आप को छुड़ाने का प्रयत्न करता है। आगे कहते है कि-**''निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप-जप कीधुं सहु जाय रे।''** निंदा करने वाले निंदक-परपरिवादी की नरक गति होती है। भयंकर दुर्गति होती है। अतः निंदक मर के नरक गति में जाकर नारकी बनता है। महावेदना सहन करता है। अतः किसी भी दृष्टि से देखा जाय तो भी जो निंदा करता है उसी को नुकसान है परन्तु जिसके विषय में निंदा की जाय उसे तो संभव है फायदा भी हो। मान लो आज हम किसी की निंदा करते है और उसको यदि बुरा लगा, खराब लगा या दुःख हुआ तो समझीए संभव है वह सुधर भी जाय, वह अपने दोष सुधार भी ले। अपनी भूल को क्षमायाचना भी कर ले और सुधर कर अच्छा सज्जन सुशील भी बन जाय परन्तु निंदक में सुधार होगा कि नहीं ? यह पता नहीं ? जिसके विषय में निंदा की जाय, आत्मा कल्याण भी साथ ले परन्तु निंदक तो निंदा करके मैला ही बना। पाप से भारी ही बना। उसका कल्याण कब होगा ? वह अपने पाप कब धोएगा, कई महापुरुष आत्म कल्याण साध गए। कई खराब, दुष्ट-दुर्जन सज्जन-संत महात्मा बनकर मोक्ष में चले गये। लेकिन उनकी निंदा करनेवाले निंदक संसार में ही परिभ्रमण करते रहे। अतः किसी की निंदा करना अर्थात् उस प्रकार का अपने को बनाना। दोषवान-दुष्टदुर्जन बनना। अतः अनेक दृष्टिकोण से देखने पर भी निंदक को ही नुकशान है। उसी का बिगड़ता है। यह जन्म और आगामी जन्म भी उसी के बिगड़ते हैं।

किसे निंदा नहीं कहते है ?:-

रुप न कोइनुं धारीए, दाखीए निज निज रंग हो।
तेमां कांई निंदा नहीं, बोले बीजुं अंग हो ॥
एह कुशीलणो इम कहे, कोप हुए जेह भारव हो।
तेह वचन छे निंदातणु दसवैकालिक शाख हो ॥

यहां पर यशोविजयजी वाचकवर्यजी फरमाते है कि किसी के विषय में राग-द्रेष रहित माध्यस्थ भाव से वस्तु का यथार्थ स्वरुप कहना, लेकिन वह निंदा की बुद्धि से न कहना, और न ही किसी बात में या किसी बात चे नमक-मिर्ची या मसाला अपनी तरफ से डालकर बात उपजाना या खाड़ी करने की वृत्ति न रखाते हुए प्रिय सत्य स्वरुप हित बुद्धि से किसी को सुधारने के हेतु से कहा जाय अत्यन्त निष्पकर-सरलता से कही जाय तो वह निंदा नहीं कहलाती है। बात कहते समय अपने मन में किसी व्यक्ति का रुप-स्वरुप नाम भी न आए परन्तु जीवों के कर्म संयोगवश जैसे दुर्गुण हो वैसे ही कहने में निंदा का पाप नहीं लगता है। दुर्गुणों को दुर्गुण के ही स्वरुप में दिखाना यह निंदा नहीं कहलाती। व्यक्ति को सुधारने के लिये उसे ही कहा जाय या उसके माता-पिता-मित्रादि को कहा जाय वह निंदा नहीं कहलाती। इस तरह दूसरे अंगसूत्र सूत्रकृतांग (सूयगडांग) सूत्र नामक आगम निंदा किसे कहने में कहा गया है। परन्तु श्री दशवैकालिक आगम में निंदा किसे कहते है यह बताते हुए स्पष्टकहा है कि- क्रोधादि कषाय के आधीन होकर किसी भी स्त्री-पुरुष के विषय में यह दुष्ट-दुर्जन-कुशील-लंपट है इत्यादि कहना और उसकी दुष्टता को चार व्यक्तियों में बाहर भी कहना तथा किसी स्त्री या पुरुष का नामादि लेकर कहना और विपरित रुप से बात को विकृत बनाकर अपनी तरफ से उस बात में नमक-मिर्ची डालकर बात करना यह जरुर निंदा कहलाएगी। ऐसी विपरीत बात खाड़ी करनी कि जिसे सुनकर सुननेवाले को भी क्रोध उत्पन्न हो, कषाय जगे, यह निंदा का स्वरुप कहलाएगी। पर के विषय में विपरीत बात करना परपरिवाद-पराई निंदा का पाप कहलाएगी।

सम्यक्त्वव्रत के अतिचार में भी कहा है कि- **''महात्माना भात-पाणी-मल-शोभा तणी निंदा कीधी''** साधु-संत महात्मा को गोचरी आदि लेते (वहोराते) देखकर,उनको एक साथ इकट्ठी लेते देखकर, इकट्ठा खाते देखकर, या उनके शरीर पर मैल है, कपड़े मैले है तथा शरीर की भी कोई शोभा कुछ भी नहीं है इत्यादि देखकर यदि साधु-संत महात्मा की जाए तो श्रावक भी बृहद अतिचार के अनुसार पाप (दोष) अतिचार लगता है। अतः ऐसी साधु-संतों की, देव, गुरु-धर्म की निंदा कभी नहीं करनी चाहिये। जिस देव-गुरु-धर्म की निंदा कभी नहीं करनी चाहिये जिस देव-गुरु-धर्म की श्रद्धा में हमारे सम्यक्त्व का आधार रहा हुआ है जिससे हमारा कल्याण होता है और फिर भी हम यदि उसी की निंदा करते रहें तो यह कितना दोषयुक्त है ? कितना खराब है ? इससे अवश्य ही बचना चाहिये।

चौदहवें पैशुन्य का पाप स्थान है और सोलहवें परपरिवाद (परनिंदा) का पाप स्थान है। अतः ये दोनों एक सरीखे नहीं है। इन दोनों में भी काफी अन्तर है। पैशुन्य में तो सिर्फ चुगली खाने की ही बात है। किसी के विषय में चुगली खाई, कि इसने ऐसा कहा है। इसने कुछ चुराया है। जबकि सोलहवें परपरिवाद के पापस्थान में तो विपरीत बात है। निंदा में बात को विपरीत-विकृत रुप दिया जाता है जबकि पैशुन्य में न होते हुए भी चुगली खाई जा सकती है। इस तरह दोनों में अन्तर है। हां एक बात जरुर है कि- दोनों पाप स्थान है। दोनों ही पाप की ही जात है। अतः दोनों ही त्याज्य है।

(आगे और भी है...!)

चैत्य वदी-3 21/3/2022 आचार्य गुरुदेव नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के 79 वां जन्म दिवस पर विशेष

सर्वतोन्मुखी प्रतिभा पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा

पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा का विचार मन में आते ही सहसा एक भोली-भाली निश्छल, निष्कपट, निर्दोष, चन्द्रमा जैसी शीतल मंगलबुर्द्धिनी सौम्य मूर्ति नेत्रों के सामने आ झलकती है। पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा वर्तमान युग के आध्यात्मिक, अलौकिक संत, श्रमण परंपरा की अविस्मरणीय उपलब्धियों के उत्तुंग शिखर, वात्सल्य मूर्ति एवं अद्वितीय व्यक्ति सुधारक रहे हैं। बीसवीं सदी के अंतिम चरण की ओर बढ़ते हुए बौद्धिक और सांस्कृतिक क्षरण के शिकार एवं अन्धकार में डूबे भारत को एक ऐसे प्रकाश पुंज की आवश्यकता थी, जो पीड़ित मानवता को सन्मार्ग दिखाकर उत्थान की ओर ले जा सके। ऐसी विषम परिस्थितियों में रात के अन्धकार को चीरकर स्वर्ण रश्मियों से जब पृथ्वी को छुआ तो मालवा का अंचल जिला राजगढ अनिवर्चनीय आभा से भर उठा। जहां पिता श्री लालचंद्रजी एवं माता माणिकबाई के घर एक दिव्य प्रकाश पुंज ने पुत्ररत्न के रुप में जन्म लिया, नाम मिला रतन। बालक रतन बचपन से ही निश्छल, निष्कपट, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न था। बाल्यावस्था में ही वैराग्य का सूर्य रतन के अन्तःस्थल में अपनी शत-सहस्र रश्मियों को लेकर पूरी तेजस्विता के साथ उठा और रतन को आचार्यश्री चन्दसागरसूरीजी का सानिध्य पाकर ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर गृहत्याग कर दिया। इनकी दृढ़इच्छाशक्ति, अदम्य साहस और निरन्त जागरुकता ने आचार्यश्रीचन्दसागरसूरीजी महाराजा को इतना प्रभावित किया कि गुरुवर ने प्रसन्न होकर उन्हें पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा बना दिया विशाल जनसमुह के बीच मुनि दीक्षा प्रदान कर नवरत्नसागर के नाम से अलंकृत किया।

पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा के ज्योतिर्मय व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में बांधना बड़ा कठिन है फिर भी धृष्टतावश हृदय में अपार शक्ति और श्रद्धा के कारण अपनी अल्प व तुच्छ वृद्धि से कुछ अक्षर पंक्तिबद्ध कर रहा हूं। पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा का लालिमायुक्त भव्य-दिव्य गेहुंवर्ण तेजस्वी मुख मुद्रा, इकहरा बदन, मध्यम कद, अन्वेषिकी दृष्टि, तप और साधना की प्रतिमूर्ति एवं उदीप्त ललाट, अत्यंत आकर्षक और मोहक है। इनकी तो भुजाओं ने सर्पो नेत्रों ने कमलों एवं मुख ने चन्द्रमा को भी रुप की स्पर्द्धा में पीछे छोड़ दिया है।

पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा के तो मौन में भी गूढ़ ज्ञान अन्तर्निहित था। इनका सकारात्मक चिन्तन चुम्बकीय आकर्षण शक्ति से युक्त है जो प्रतिकूलतम एवं विषमतम परिस्थितियों में भी अनुकूलतम शक्तियां अपनी ओर खींचने में सक्षम रहा हैं। इनका सकारात्मक चिन्तन ही जन-मानस को वैचारिक प्रदूषण से मुक्ति प्रदान कर निरंतर सकारात्मक जीवन की प्रेरणा आज भी प्रदान कर रहा है। मानसिक दुश्चिन्ताएं, कुंठाएँ, अहंकार आदि विकार इनके समक्ष आते ही अपना दम तोड़ देते थे।

पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा ने जितनी भी तपस्या का सृजन किया था, वे सब एक से बढ़कर एक उत्कृष्टता की अनुभूति कराती हैं। पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा के व्यक्तित्व में अलौकिक ज्ञान और सहृदयता का समन्वय रहा है। जब ये दोनों गुण किसी एक व्यक्तित्व में समाविष्ट हो जाते हैं, तो वह जनमानस की श्रद्धा का केन्द्र तथा आराध्य बनकर परमेश्वर का रुप धारण कर लेता है। पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा एक ओर तो अपने अलौकिक ज्ञान से जनमानस को उपयुक्त-अनुपयुक्त में भेद तथा धर्मशास्त्रों का सार समझाते हुए अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाते थे, तो दूसरी ओर उसमें करुणा, प्रेम, दया, आस्था और विश्वास जगाकर परम सुख की अनुभूति कराते थे।

ऐसे मानवता के मसीहा, करुणा के सागर, श्रमणत्व के संरक्षक, युगीन दिशा निर्देशक, निरभिमान जीवन के मंत्रदाता, संकल्प एवं साधना सुमेरु, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, अक्षर-अक्षर में बहती ज्ञानामृत की धारा एवं सम्यक्द्रष्टा के चरणों में मेरा सदा-सर्वदा कोटिशः नमन-नमन-नमन।

गुरु महिमा

गुरुवर के चरणों, में मस्तक मै झुकाता हूं।
इन्हीं गुरुवर के प्रकाश में कुछ कह सुनाता हूं॥
है जितनी अक्ल मुझ नाचीज में, वह तुमसे कहता हूं।
अगर हो कोई गलती तो, उसकी माफी चाहता हूं॥

गुरुवर की महिमा का वर्णन में जितना भी करुं कम है। प्रेम और करुणा से भरे मेरे गुरुदेव मैं उन्हें नमस्कार करता हूं। गुरु और प्रभु ही साक्षात् शिव है। उन प्रभु को जो सबके अन्दर शक्ति रुप से मौजूद हैं। हमें गुरु चरणों में जाकर गुरु सेवा में अपनी भक्ति को निवेदित करना चाहिये। गुरु-भक्त जनों के जीवन में अपनी आत्म ज्योति से ज्योत जलाते हैं। हमें सन्तों के अमृत उपदेशों का पान करना चाहिये। सन्तों का प्रभाव इतना दयालु होता है कि वे हम पर हमेशा अपनी कृपा बरसाते रहते हैं, संतों के वचन अटल होते हैं। वे कभी टल नहीं सकते। गुरु मुखारबिन्द से दिया गया मंत्र बड़ा शक्तिशाली होता है। जब हम गुरुजी से दीक्षा लेते है तो हमें महसूस होता है कि हमारा दूसरा जन्म हुआ है। गुरु मंत्र एक बीज की तरह होता है। जैसे जब तक वह पौधा नहीं बन जाता हम उसकी रक्षा करते हैं और बड़ा होने पर उस पर फूल फूल स्वयं लग जाते हैं इसी प्रकार हमें उस नाम की (मंत्र की) जाप करनी है और हमें स्वयं ही लाभ होने लग जाते हैं। समस्त सांसारिक इच्छाएं जब समाप्त होती है तो हमें समझना चाहिये कि अब हमें गुरु की कृपा प्राप्त हुई है, सन्त अपनी वाणी और दया दृष्टि से हमारे अन्तःकरण को धो देते हैं, गुरु की दया दृष्टिही आत्मा को परमात्मा की ओर ले जाती है, गुरु सत्संग में प्रवचनों द्वारा आगम के रहस्यों को खोलते हैं और हमें सम्यक मार्ग दिखाते हैं। गुरु उपदेश देकर हमें मोह रुपी कीचड़ से निकालते हैं, गुरु और प्रभु के चरणों में हाथ जोड़कर जाएं। गुरु अपने भक्त से कुछ नहीं मांगते वह तो श्रद्धा और भाव देखते हैं इसलिये गुरु अपने भक्तों के सब दुःख संकट हरते हैं। कभी भी गुरु से कुछ मांगना नहीं चाहिये, वह तो अन्तर्यामी है। अगर मांगना भी हो तो मेरे गुरुवर से उनकी दया दृष्टिऔर आर्शीवाद मांगो। माता-पिता तो हमें सिर्फ जन्म देते हैं लेकिन गुरु जीवन देते हैं हमें मनुष्य चोला बड़े भाग्य से मिला है और यह तो जिन्दगी है वह सांसों के आधार पर मिली है। हमें श्वासों को व्यर्थ नहीं गवाना चाहिये। हर स्वास प्रभु का नाम जपना चाहिये। पता नहीं कौन सी घड़ी स्वास को छीन ले जाए। हमने भगवान को तो नहीं देखा परन्तु मैं अपने गुरुदेव में साक्षात् भगवान देखता हूं। मेरे प्रभु, मेरे गुरुवर मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरे मन को संतोष और धैर्य प्रदान करें। मैं आपकी शरण में रहकर अपने जीवन को सफल बनाऊं।

सद्ज्ञान और आचरण

संसार में प्राप्त करने योग्य सर्वश्रेष्ठ वस्तु सद्ज्ञान है जिसे प्राप्त कर लिया जाए तो कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है। इसे जितना भी प्राप्त किया जा सकता है। इसे जितना भी प्राप्त किया जाए यह उतना ही कम मालूम पड़ता है। सद्ज्ञान के बल पर ही हम सही विचार कर सकते हैं सही काम कर सकते हैं और सही परिणाम को उपलब्ध हो सकते हैं। संसार में सब पदार्थ उपलब्ध है पर अज्ञानी और अकर्मण्य व्यक्ति उनसे वंचित रहता है। अज्ञानी यही समझता है कि वह बहुत कुछ समझता है लेकिन जो सही-सही समझता है वह यही समझता है कि वह बहुत कम समझता है और जो ऐसा समझता है वह सद्ज्ञानी है। क्या हितकर है क्या अहितकर है, क्या सही है क्या गलत है, क्या करने योग्य है क्या न करने योग्य है, क्या प्राप्त करने योग्य है, क्या त्यागने योग्य है, क्या पथ्य है और क्या अपथ्य है यह जानना सद्ज्ञान और न जानना अज्ञान है। जीवन में सफलता, उन्नति और विकास को उपलब्ध होने के लिए सद्ज्ञान का होना अनिवार्य है और सद्ज्ञान के अनुसार आचरण करना सोने पर सुहागे के समान है इसलिये हमें प्रतिपल सद्ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील और इसको कटिबद्ध रहना चाहिये क्योंकि आचरण के बिना सद्ज्ञान का होना न होना बराबर होता है।

संत नानक एक गांव मे गए। वहां के निवासियों ने उनका बड़ा आदर किया। चलते समय नानकजी ने आर्शीवाद दिया- ''उजड़ जाओ।'' वे दूसरे गांव में गए तो वहां के लोगों ने उनका तिरस्कार किया, कटु वचन बोले और लड़ने-झगड़ने पर उतारु हो गए। नानकजी ने आर्शीवाद दिया- ''आबाद रहो।'' साथ में चल रहे शिष्यों ने पूछा- भगवन ! आपने आदर करनेवालों को ''उजड़ जाओ'' और तिरस्कार करने वालों को ''आबाद रहो'' का आर्शीवाद क्यों दिया ? नानक ने कहा- ''सज्जन लोग उजड़ेंगे तो वे बिखरकर जहां भी जाएंगे सज्जनता फैलाएँगे, इसलिये उनका उजड़ना ही ठीक है किन्तु दुर्जन सर्वत्र अशांति उत्पन्न न करें, इसलिये उनके एक ही जगह रहने में भलाई है।''

मैं अइमुत्त

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

मैं तो गलियों में लड़कों के साथ भटक रहा था। मुझे तब कल्पना भी नहीं थी कि मैं कुछ समय में ही मुनि बन जानेवाला हूं। परन्तु भाग्य पलटते हैं तब पलभर में पलट जाते हैं, इस सत्य की प्रतीति मेरा जीवन देखने से होगी।

खेलते-खेलते मैंने श्री गौतमस्वामी को देखा। मुझे पता चल गया कि महाराज वहोरने आये हैं। खेल बाजू पर रखकर मैं तो दौड़ा। महाराज का दंडा पकड़ लिया और कहा- महाराज! मेरे घर वहोरने के लिये पधारो। महाराज को गोचरी का खप नहीं था। वे मना करने लगे, लेकिन मैं भी कहां उनका पीछा छोड़नेवाला था ? मैंने तो दंडा बराबर पकड़ रखा। महाराज को आखिर मानना ही पड़ा। मैं भूल गया कि महाराज को मैंने पकड़ लिये.... लेकिन सचमुच तो महाराज ने मुझे पकड़ लिया था। संभव है कि महाराज ने उसी समय मेरा भविष्य जान लिया हो, इसलिये मेरे घर पधारे हो। चार ज्ञान के स्वामी श्री गौतमस्वामी महाराज के लिये क्या असंभव था ?

मैंने और मेरे मम्मी ने महाराज को भाव से लड्डू वहोराये। महाराज की झोली एकदम वजनदार हो गई। मैंने कहा- महाराज! मुझे उठाने दो। लेकिन महाराज ने कहा- इसके लिये ''महाराज'' बनना पड़ता है। संसार का त्याग करना पड़ता हैं। मैंने हां कह दी। कौन जाने क्यों ? किन्तु मुझे बचपन से ही महाराज बहुत ही अच्छे लगते। उनको देखते ही मैं उनके पास दौड़ जाता। उनके जैसा बनने का मन भी हो जाता। मेरी मम्मी भी मुझे बहुतबार कहती- बेटा! संसार में रहने जैसा नहीं है। मुनि ही बनने जैसा है। संसार का त्याग किये बिना मुनि बना नहीं जा सकता। मुझे मम्मी को ऐसी बातें बहुत अच्छी लगती। गौतमस्वामी महाराज ने भी मुझे ऐसी ही बातें कही। संसार की असारता और संयम की सार्थकता समझायी। मैंने मन ही मन निश्चय कर डाला- मुझे दीक्षा ही लेनी है और तुरन्त ही लेनी है। मैंने घर जाकर मम्मी से दीक्षा की बात की.... लेकिन यह क्या ? जो मम्मी पहले मुझे दीक्षा लेने के लिये समझाती थी वही मम्मी नट गई, दीक्षा के लिये आनाकानी करने लगी। बेटा! तू बहुत छोटा है। दीक्षा का पालन बहुत कठिन है। इसमें तेरा काम नहीं है। दीक्षा लेने जैसी सही, किन्तु अभी नहीं, बड़ी उम्र हो जाने के बाद ले लेना। ऐसा कहकर मुझे दीक्षा लेने से रोकने लगी। लेकिन मैं भी कच्चा नहीं था। ऐसी समझावट का मुझ पर कोई असर नहीं हुआ। मैं अपने ध्येय में निश्चल था। माता की आजिजी में मोह का तूफान मैं देख रहा था।

मैंने कहा- मैं जानता हूं फिर भी नहीं जानता हूं। मैं नहीं जानता हूं। मेरी ऐसी ''गूढ वानी'' मेरी माता समझ नहीं सकी। इसलिये उसके आग्रह से मैंने ही खुलासा करते कहा- हे मां! मैं जानता हूं कि एक दिन मैं मर जाने वाला हूं, लेकिन कब मारने वाला हूं वह मैं नहीं जानता हूं। इसीलिए ही मैं कहता हूं कि मैं जानता हूं फिर भी नहीं जानता हूं। और इसी को उल्टाकर ऐसा भी कहा जाता है कि मैं नहीं जानता फिर भी जानता हूं। मेरी मृत्यु कब होगी वह मैं नहीं जानता लेकिन एक दिन तो होगी ही यह मैं जानता ही हूं। इसीलिए ही मैं ऐसा कहना चाहता हूं कि मृत्यु कभी भी आ सकती है। मृत्यु के दरबार में छोटे-बड़े का कोई क्रम नहीं है। यदि मैं कभी भी मर सकता हूं तो कभी भी दीक्षा क्यों न ले सकूं ?

मेरी मां तो बड़े आदमी जैसी मेरी दलीलें सुनकर विस्मित ही हो गयी। वह चुप ही हो गयी! चुप हो ही जायेगी न! अन्तमुर्हत में द्वादशांगी बनानेवाले गुरु गौतमस्वामी का मुझ पर हाथ फिरा था।

आखिर बहुत आनाकानी के बाद मेरी माँ ने दीक्षा के लिये मुझे अनुमति दी। चाहे कुछ भी हो तो भी उसके हृदय में जैन शासन बसा हुआ था। दीक्षा उसे प्यारी लगी हुई थी।

धामधूम से मेरी दीक्षा हुई। भगवान श्री महावीरदेव ने मुझे ओघा दिया तब मैं नाच उठा। अनमोल ओघा मिलने के बाद कौन नहीं नाचता ? भगवान ने मुझे शिक्षा-दीक्षा के लिये मुझे स्थविर साधुओं को सौंपा। मैं वृद्धों से ग्रहण शिक्षा और आसेवन शिक्षा से मेरी आत्मा का निर्माण करने लगा।

एक बार चौमासे के समय मैं एक वृद्ध साधु के साथ स्थंडिल भूमि गया। मैं काम पूरा करके वृद्ध साधु का इंतजार करते रास्ते पर खड़ा रहा। आकाश बादलों से घिरा था। मेरी नजर प्राकृतिक सौंदर्य पर पड़ी। धरती पर हरियाली फूटी थी। मोर पिहुक रहे थे। जगह-जगह पर पानी के डबरे भरे हुए थे। मेरे पास ही एक पानी का डबरा था। वहां बच्चे खेल रहे थे। मेरी ही उम्र के वे बच्चे थे। पत्ते की नाव बनाकर डबरे में तिरा रहे थे। यह देखकर मेरी भी खेलने की वृत्ति सतेज हो उठी। आखिर आत्मा निमित्त वासी है। जैसे निमित्त मिलते है वैसी ही बन जाती है। बच्चों को खेलते देखकर मैं भी खेलने के लिये तैयार हो गया। आखिर मैं बालक ही था न ? बाल सहज वृत्ति मेरे लिये स्वाभाविक थी। मैं उन बालकों की टोली में घुस गया। मुझे देखकर वे खुश हो गये। साधु महाराज

जैसे दोस्त मिले फिर कौन खुश नहीं होता ? एक लड़के ने मुझ से कहा- महाराज ! हमारी नाव इस पानी में तैर रही हैं । आपकी नाव कहां ? मैं भी कहां कम था ? मैंने तुरन्त ही तरपनी पर रही हुई काचली (छोटा सा काष्ठपात्र) निकालकर उस डबरे पर तैरती रखी और मैं गाने लगा- ''छोटी सी तलावड़ी और छोटी सी नावड़ी'' मेरे साथ सभी लड़के भी गाने लगे । हमारा खेल सोलह कला से खिल उठा था । लेकिन अचानक ही रंग में भंग पड़ा । ''अरे अइमुत्ता ! यह क्या लगा रखा है ? साधु होकर ऐसा किया जाता है ? चल.... छोड़ खेलना । चल, मेरे साथ ।'' दूर से आवाज सुनाई दी । किनकी थी वह आवाज ? जिन वृद्ध साधु मैं बहिर्भूमि आया हुआ था वे साधु काम पूरा करके आ गये थे और मुझे बुला रहे थे । उनकी सख्त आवाज और अकड़ता भरा चेहरा देखकर मैं कांप उठा । उन्होंने मेरी जोरदार तर्जना की- मूर्ख के जाम ! साधु होकर यह क्या खेल लगा रखा है ? खेलना ही था तो साधु क्यों बना ? कच्चे पानी को हम छू भी नहीं सकते और तूने उस पर काचली तिराई ? पानी के एक बूंद में कितने जीव होते हैं यह तू जानता है ? एक बूंद के जीव यदि सरसौं जितने हो जाये तो पूरे जंबूद्वीप में नहीं समाते । तूने कितने सारे जीवों की विराधना की ? पाप से मुक्त होने के लिये दीक्षा ली है या पाप बढ़ाने के लिये दीक्षा ली है ? मैं उनकी वाणी नतमस्तक होकर सुनता रहा । मुझे मेरी भूल समझ में आयी ।

वे वृद्ध साधु सीधे भगवान के पास पहुंचे और मेरे नाम की बूम लगाने लगे : प्रभु ! आपने इस बच्चे को दीक्षा दी है परन्तु उसमें आराधना-विराधना का पृथक्करण करने जितनी भी अक्कल तो है नहीं.... ऐसे को दीक्षा देने से क्या फायदा ? अभी उसने पानी में काचली तैराकर कितने कर्म बांधे ? बेचारा कब इन कर्मो से छूटेगा ? कब मोक्ष में जायेगा ?

''महात्मन् ! चिंता मत करो । यह अइमुत्ता तो चरमशरीरी है । इसी भव में मोक्ष में जानेवाला है ।'' प्रभु ने धीरे-धीरे गंभीर स्वर से कहा ।

मैं तुरन्त ही प्रभु के पास पहुंचा । प्रभु के चरण में मस्तक रखकर मैं फूट-फूटकर रोने लगा : प्रभु ! मुझसे अप्काय की बहुत बड़ी विराधना हुई है । भगवन् ! मुझे प्रायश्चित दो । प्रभु ने कहा- वत्स ! भूल होनी अस्वाभाविक हैं । छद्मस्थ मात्र भूल के पात्र ! तू इरियावहियं कर ले ! तेरी शुद्धि हो जायेगी । अन्य तप इत्यादि कोई घोर साधना करने की तुझे जरुरत नहीं है । भावपूर्वक इरियावहियं यही तेरी बड़ी साधना है । प्रभु की बात का स्वीकार करके मैं इरियावहियं करने लगा । इरियावहियं करते-करते मैं ऐसे भावों में चढ़ा, मेरे हृदय में पश्चाताप की ऐसी अग्निज्वाला उत्पन्न हुई कि जिसमें मेरे पापकर्म ईंधन की तरह जलने लगे । ''पणग दग'' पद के ऊपर पहुंचते मैं एकदम शुभध्यान में चढ़ा । क्षपक श्रेणी पर आरोहण किया और घनघाती कर्मो को नष्ट करके मैं केवली बन गया । मेरे जनम-जनम के पाप साफ हो गये ।

केवलज्ञान मिलने पर मोक्ष निश्चित मिलता ही है । फिर मैं सिद्धाचल की पवित्र भूमि पर अघाती कर्मो का भी क्षय करके इस शरीर का त्याग करके मोक्ष में पहुंच गया !

बंधुओं ! आज मैं संसार में नहीं हूं । सिद्धशिला पर आत्मा का स्वाभाविक सुख भोग रहा हूं । ''अइमुत्ता'' या ऐसा कोई मेरा नाम नहीं है, मैं अनामी हूं । मेरा कोई शरीर या रुप नहीं है, मैं अरुपी हूं । अनामी और अरुपी मैं अनंत सुख का अनुभव कर रहा हूं । बालकों ! आपको यहां आना है न ? इरियावहियं करो तब तुझे याद करना । मेरे जैसे भाव लाने का प्रयत्न करना । यदि ऐसा करते रहोगे तो मेरी तरह एक दिन तुम्हारा भी निस्तार हो जायेगा ।

जिनशासन की क्रियाएं भी हितकारी....

साधु जीवन में प्रतिदिन दो बार पडिलेहण-प्रतिलेखन करने का नियम दिया गया है । भगवान के द्वारा बताई गई यह दैनिक क्रिया कितनी महत्वपूर्ण है इसका अनुभव जिसे भी हुआ हो, उसका मस्तक परमात्मा के चरणों में झुंके बिना नहीं रह सकता । करुणा निधान परमात्मा का शासन कितना कल्याणकारी है यह समझाने के लिये यहां एक घटना प्रस्तुत की जाती हैः- एक दिन एक साधु महात्मा अपने गुरुबंधु का पडिलेहण करने गये । आसन का पडिलेहण करते समय उसमें ऊन के टुकड़े जैसा कुछ है, ऐसा आभास हुआ । ध्यान से देखने पर कीड़े जैसा कुछ लगा । पुनः ठीक से देखा तो छोटा सा जहरीला कीड़ा-बिच्छु आसन में था ! जयणा पूर्वक उसे दूर किया गया ! गुरु बंधु बच गये !!! परमात्मा के शासन के प्रति उनकी श्रद्धा में अहोभाव में अनेकशः वृद्धि हुई ।

शतशः वंदना हो इस जिनशासन को जिसने नित्यप्रति दो बार पडिलेहण की क्रिया की आज्ञा दी है !! ऐसी सुंदर प्रतिलेखन की क्रिया की योजना अन्य किसी भी धर्म में नहीं की गई है । सर्वज्ञ भगवंत द्वारा बतलाई गई सर्व धर्मक्रियाएँ स्व का एवं पर का हित करनेवाली ही है ।

आम

आम सबसे ज्यादा पंसद किया जाना वाला फल है। संसार भर के फलों में इसका अपना विशिष्ट स्थान है। भारत फलों के बादशाह आम का घर है। आम का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। भारतीय प्राचीन साहित्य में यत्र-तत्र आम का वर्णन पढ़ने को मिलता है जिससे पता चलता है कि आम वैदिक काल से ही भारत में उपलब्ध बना हुआ है। विश्व में आम की उपज का 60 प्रतिशत से अधिक भारत में ही पैदा होता है।

अपने स्वाद के साथ-साथ वह बड़ा उपयोगी है। यह कच्चा और पका दोनों ही रुप में खाया जाता है। आम दोनों ही रुपों में औषधीय गुणों से युक्त होता है। इसका प्रत्येक भाग छिलका, गुठली व गूदा अपना विशेष महत्व रखते हैं। आम प्रकृति का सबसे बड़ा वरदान है। यह सबसे लोकप्रिय फल है।

गर्मियों में आम का पन्ना अमृत सामान है। यहअत्यन्त स्वादिष्ट होने के साथ ही एनीमिया तथा हैजा के रोग में लाभप्रद है। यह शरीर को सोडियम तथा जिंक प्रदान करता है। यह गर्मी तथा लू के प्रभाव से बचाकर शरीर के तापमान को स्थिर रखता है।

इसे संस्कृत में- आम्र, हिन्दी में-आम, मराठी में-आंबा, गुजराती में-कैरी, बंगला में-आम, तेलगु में- पाविड़ी तामिल में-मांग, मांगाय, मलयालम में-माबु, कन्नड़ में-माविन फल, मावु, फारसी में-आम्बा, अंबज तथा अंग्रेजी में-मेंगों, कहते हैं। इसका लैटिन नाम मेग्नीफेरा इण्डिका है।

आम के गुण अवस्था के अनुसार थोड़े भिन्न होते है। पका हुआ आम पौष्टिक, स्निग्ध, शक्तिवर्द्धक, भारी, वातनाशक, सुखदायक, हृदय को हितकारी, रंग निखारने वाला, शीतल, पित्त को न बढ़ाने वाला, कषाय रस युक्त तथा जठराग्नि, कफ की वृद्धि करनेवाला होता है। कच्चा आम कसैला, खट्टा, रुचिकारक, वात-पित्त कारक, रुखा और रक्तविकार उत्पन्न करने वाला होता है। पेड़ पर पका आम भारी, वातनाशक, मधुर अम्ल रसवाला तथा पित्त कारक होता है। कृत्रिम रुप से पकाया गया आम रुचिकर, बलवीर्यवर्द्धक, हल्का, शीतल, पाचक, सारक और वात-पित्त का शमन करनेवाला होता है।

आम के फूल शीतल, रुचिकारक, ग्राही, वातजनक अतिसार, कफ, पित्त प्रमेह और रक्तदोष दूर करने वाले होते हैं। आम की गुठली की मींगी कषाय, मधुर थोड़ी खट्टी तथा उल्टी, अतिसार, दर्द निवारक तथा हृदय के दाह को दूर करने वाली होती है। रक्तस्त्राव रोकने वाली, संकोचक तथा उल्टी, अतिसार तथा बवासीर में उपयोगी होती है। इसके कोमल पत्ते रुचिकारक और कप-पित्त का शमन करने वाले होते हैं। इसकी गुठली के गूदे में पाया जाने वाला तेल खाने योग्य होता है तथा विशेष तौर से हृदय व रक्तचाप के मरीजों के लिये उपयोगी होता है।

आम के पके फल में आर्द्रता 81.0 प्रतिशत, प्रोटीन 0.6 प्रतिशत, वसा 0.4 प्रतिशत, खनिज द्रव्य 0 प्रतिशत, रेश 0.7 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 16.9 प्रतिशत, ऊर्जा 74 प्रतिशत कैल्शियम 14 प्रतिशत, फास्फोरस 16 प्रतिशत और लौहा 1.3 प्रतिशत पाये जाते हैं इसके अलावा विटामिन ए बी सी तथ डी भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। साइट्रिक एसिड, गेलिक एसिड भी अल्प मात्रा में पाया जाता है। इनके अलावा सोडियम, पोटेशियम, ताम्र, गंधक, मैग्नीशियम, क्लोरीन तथा नियसीन पाए जाते हैं।

आम की गुठली के गूदे में प्रोटीन 5 प्रतिशत, रेशे 1-2 प्रतिशत, राख 2-3 प्रतिशत तथा टेनिन 0.19-0-44 प्रतिशत पाए जाते हैं।

मसाले लगाकर कृत्रिमतापूर्वक पकाए गए आम की अपेक्षा प्राकृतिक रुप से पके हुए आम गुणों से भरपूर होते हैं। आम को 1-2 घंटे पानी में भिगोकर ही खाना चाहिये अन्यथा हाजमा खराब हो जाता है।

आम शक्तिवर्द्धक होता है। आम खाने से मांस बढ़ता है, खून की मात्रा बढ़ती है और शरीर की थकान दूर होती है। नेत्र रोगियों को आम का सेवन करने से लाभ होता है।

आम के औषधीय उपयोग निम्न हैः-

1- आग से जलनाः- शरीर का कोई अंग जल जाए तो आम के पत्तों की राख को घी या पानी में मिलाकर उस जगह पर लेप करें, फायदा होगा।

2- क्षय रोगः- 1 कप आम का रस, 50 ग्राम शहद के साथ सुबह-शाम पीने से क्षय रोग में काफी आराम होता है।

3- वायु रोगः- 8-10 चम्मच आम के पेड़ की छाल का रस 125 ग्राम बकरी के दूध में मिलाकर पीने से लाभ होता है।

4- पेचिशः- आम की गुठली के गूदे का चूर्ण, वेल के रस व अदरक के साथ मिलाकर खाने से फायदा होता है।

5- मासिक धर्म की अनियमितताः- आम की गुठली की गिरी को गर्म राख में भूनकर खाने में मासिक धर्म अनियमितता दूर होती हैं।

6- हैजाः- 25 ग्राम आम की छिलका, 200 ग्राम दही में घोंटकर, उसमें कपूर व नमक मिलाकर रोगी को देने से लाभ होता है।

7- प्रमेहः- 50 ग्राम पिसा हुआ आम का छिलका व

10-20 ग्राम चूने का पानी मिलाकर सुबह-शाम कुछ दिनों तक लेने से मूत्र के साथ मवाद आना व जलन ठीक होती है।

8- कान का दर्दः- आम के ताजा हरे पत्ते का रस गुनगुना गरम करके कान में डालने से लाभ होता है।

9- नकसीरः-

✲ आम की गुठली की गिरी रस नामक में टपकाने से खून बहना बंद हो जाता है।

✲ आम के बौर को बारीक पीसकर सूंघने से शीघ्र लाभ होता है।

10- नपुंसकताः-

✲ आम के रस में शहद मिलाकर प्रतिदिन प्रातः 15-20 दिन तक सेवन करने से शिकायत दूर होती है।

✲ 2-3 माह तक शाम को पके आमों का रस, चीनी, पानी व दूध मिलाकर पीने से मर्दाना ताकत बढ़ती है।

11- दमाः-

✲ आम की गुठली का चूर्ण 5 ग्राम पानी के साथ प्रातः सेवन करें।

✲ आम की गुठली का चूर्ण शहद मिलाकर चाटने से लाभ होता है।

12- पाचन शक्ति बढ़ानाः- आम का रस 50 ग्राम में पिसी सौंठ मिलाकर सेवन करने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

13-मूत्रावरोधः- आम की जड़ का छिलका व शीशम के पत्ते, एक कप पानी में उबालकर, ठण्डा होने पर मिश्री मिलाकर पीने से पेशाब खुलकर आने लगता है।

14- दस्तः-

✲ आम की भीतरी छाल पीस-छान कर पानी, चीनी के साथ पीने से दस्त रुक जाते हैं।

✲ कच्चे आम और जामुन के पत्तों का रस गुनगुना करके 2-3 चम्मच पीने से दस्तों में आराम मिलता है।

✲ आम की गुठली की गिरी को पानी में पीसकर नाभि पर लेप करने से दस्त बंद हो जाते हैं।

15- उल्टीः- आम व पुदीने के पत्ते समभाग लेकर काढ़ा बनाकर, शहद के साथ पिलाने से उल्टियां बंद हो जाती है।

16- क्षय रोगः- एक कप आम का रस 50 ग्राम शहद के साथ सुबह-शाम पीने से लाभ होता है।

17- लू लगनाः- कच्चे आम की पना बनाकर पीने या कच्चे आमों को आग में भून कर गूदा निकालकर, उसे पानी बर्फ और चीनी डालकर पीने से लू नहीं लगती।

18- दाद :- अमचूर और सैंधा नमक पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

19- मकड़ी का विषः- सूखे आम पानी में घिसकर लगाने से विष प्रभावहीन हो जाता है। आम की गुठली पानी में घीसकर लगाने से जहरीले कीट के काटे की दाहकता शांत हो जाती है।

20- गले का दर्दः- आम के पत्तों को जलाकर इसका धुंआ पीने से दर्द ठीक हो जाता है।

21- पेट के कीड़ेः- आम की गुठली पीसकर खाने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं।

22- बवासीरः- कच्चे आम का रस नियमित पीने से लाभ होता है। आम की पत्तियों को पीसकर, चीनी मिलाकर पानी में घोलकर पीने से बवासीर एक महीने में ठीक हो जाते हैं।

23- हृदय रोगः- आमरस में आधा चम्मच अदरक का रस मिलाकर पीने से आराम होता है।

24- फुंसियांः- अमचूर को पानी में पीसकर लगाने से फूंसियां ठीक हो जाती है।

25- बिवाइयांः-

✲ आम का छिलका रगड़ने से बिवाइयां ठीक हो जाती है।

✲ अमचूर का लेप करने से या कच्चे आम की चटनी का लेप करने से भी बिवाई ठीक हो जाती है।

✲ 26- कब्जः- हरे आम की चटनी, गुड़, पुदीना, जीरा, नमक, काली मिर्च डाल कर खाने से कब्ज दूर होती है। आम की भुनी गिरी, नमक मिलाकर प्रतिदिन खाने से कब्ज दूर होती है।

27- पथरीः- आम के पत्ते छाया में सुखाकर पीस लें। आधा चम्मच चूर्ण दिन में तीन बार गर्म पानी से कुछ दिन तक सेवन करें।

28- रक्तप्रदर, रक्तातिसारः- आम की भुनी हुई गिरी 25 ग्राम को थोड़ेसे नींबू के रस में घोलकर उसमें 3 ग्राम काला नमक व 10 ग्राम अजवायन को मिलाकर पीस लें। 2 मात्रा गर्म पानी के साथ सुबह-शाम भोजन के बाद लेने से रक्त प्रदर, संग्रहणी, रक्तातिसार व आमतिसार रोग में लाभ होता है।

29- तिल्लीः- 100 ग्राम पके आम के रस में 15 ग्राम शहद मिलाकर 3 सप्ताह तक पीने से तिल्ली की सूजन ठीक हो जाती है।

30- मधुमेहः- आज व जामून का रस समभाग मिलाकर कुछ समय तक पीयें।

31-संग्रहणीः- ठण्डे दूध में पके आम का गूद मिलाकर 20-25 दिन तक सेवन करने से रोग ठीक हो जाता है।

32- खांसीः- पके आम को भूभल में भूनकर, ठण्डा करके चूसने से खांसी ठीक हो जाती है।

✲ सफलता एक दिन में नहीं मिलती, लेकिन एक दिन जरुर मिलती है।

सद्‌गुरु की कृपा के अवतरण का महापर्व

हम चाहे जो हों, जैसे हो, गुरु हममें से हर एक के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। अपने जीवन के अतीत के बारे में सोचें, वर्तमान को परखें और भविष्य पर नजर डालें तो समूचा अस्तित्व एक साकार प्रश्न लगेगा। इस गहरी आत्मसमीक्षा में इस सत्य की स्पष्ट अनुभूति होगी कि सार्थक जीवन के लिय हमें एक दिशा, एक उद्‌देश्य एवं एक लक्ष्य की आवश्यकता है। इसके बिना हमारा समूचा जीवन प्रायः एक भटकन में ही बीत जाता है। हालांकि हम जीवनभर तरह-तरह के सूखों में जीवन की सार्थकता को खोजने की कोशिश करते हैं किंतु अंत में हमें इन सुखों की भ्रामक प्रकृति की अनुभूति होती है और बुढ़ापे में ऐसा लगने लगता है कि हम तो ठगे गये। अब तक जो किया, जो पाया वह सब व्यर्थ और अर्थहीन था।

हालांकि सारा जीवन हम यही कहते रहते हैं कि न तो एक पल की चैन है और न ही एक पल की फुरसत है। जाने-अनजाने कुछ खोजते रहते हैं। अनेकों दरवाजे खटखटाते है, पर असफल होकर लौटते हैं। धन-प्रतिष्ठा के पीछे भागते है, जैसे-तैसे ये मिलते भी है तो हैं तो भी हम असंतुष्ट एवं अतृप्त रह जाते हैं। यदि जिस किसी तरह हमें हमारे काल्पनिक सुखी एवं सफल जीवन के सभी साधन-सौंदर्य सुख, संपत्ति और सफलताएं उपलब्ध भी हो जाएं तो भी एक असुरक्षा की भावना हमें रह-रहकर परेशान करती रहती है। इन सभी साधनों के खो जाने का भय, बुढ़ापे और मौत का डर एकांत के क्षणों में हमें व्याकुल करता रहता है और यह व्याकुलता हमारे मन-मस्तिष्क के टुकड़े-टुकड़े कर देती है।

जीवन की यह भटकन प्रायः सभी के साथ होती है। केवल ज्ञानीजन ही जीवन के संदेश को समझ पाते हैं। वे ही सहजता से यह स्वीकार कर पाते हैं कि भौतिक सुख-सुविधाओं की अपेक्षा अन्य महत्वपूर्ण चीजें भी हैं। यह ज्ञान उन्हें अंतर्मुखी बनाता है तथा वे जीवन के अधिक अर्थपूर्ण संबंधों की खोज करने लगते हैं। यहीं ज्ञान उन्हें अंतरात्मा की खोज की ओर उन्मुख भी करता है और तभी यह बात समझ में आती है कि समस्या जगत में एवं गुणों में नहीं बल्कि हमारे अपने में ही है। हम अपनी सामान्य जीवनशैली के माध्यम से सांसारिक वस्तुओं को अपरिवर्तनशील, स्थायी एवं चिरंतन सिद्ध करने का प्रयास करते रहते हैं। पर यह तो हमारा दृष्टिकोण की गलती है। विश्व के साथ स्थायित्व या स्थिरता जैसी कोई बात है ही नहीं। सतत गतिशीलता ही विश्व का पर्याप्त है। सृजन, पोषण एवं विध्वंस तो प्रकृति के नियम है। इसे हममें से कोई रोक सकता।इसके बावजूद हमें सदा ही एक ऐसा तत्व उपलब्ध है, जो पूर्ण अनंत एवं शाश्वत है। यह तत्व हमारे स्वयं अपने अंदर ही स्थित है। इसे कहीं बाहर नहीं खोजना है। ज्ञानीजनों ने इसे ही आत्मा कहा है। इस तत्व का संबंध हमारे भौतिक अस्तित्व या अहंकार से नहीं है, जिसके साथ हम प्रायः अपना तादात्म्य स्थापित करते रहते हैं। यह तत्व तो सत्य है, वह आत्मा है जो हमें अपने शाश्वत सुख का आमंत्रण देता रहता है। इसके सतत आमंत्रण के बाद भी हम इससे वंचित रहते हैं, तो इसका एक मात्र कारण है सद्‌गुरु का अभाव। क्योंकि अंतरात्मा की यात्रा का यह मार्ग लंबा, संकटापन्न, तलवार की धार के समान तीक्ष्ण तथा गुप्त आपदाओं से भरा है। हम इस पथ को भला कैसे जान सकते हैं। सवाल सिर्फ लंबी एवं आपदाओं से भरी हुई यात्रा पर रवाना होने का नहीं है, सवाल उस जीवन लक्ष्य का भी है, जो हमें मालूम ही नहीं है, ऐसी स्थिति के लिये ही तो गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज ने कहा है- **''गुरु बिनु होहि न ज्ञान''** अर्थात् गुरु के बिना इसका ज्ञान नहीं होता।

जिन महनीयजनों गुरु-शिष्य संबंधों की खोज की, उन्हें सामाजिक, सांसारिक संबंधों की सीमाओं के बारे में पूरा ज्ञान था। वे जानते थे कि सामान्य संसारी व्यक्ति चाहे वह हमारा कितना ही सगा या घनिष्ठ क्यों न हो, हमारा मार्गदर्शक नहीं हो सकता। इसके लिये परम प्रज्ञावान् एवं अनुभवी व्यक्ति की आवश्यकता है, भले ही वह सांसारिक दृष्टि से धन, पद अथवा प्रतिष्ठा से रहित हो।

अनेक लोग तर्क प्रस्तुत करते है कि गुरु आवश्यक नहीं है, वास्तविक गुरु तो हमारे अंदर है। यह बात सैद्धांतिक रुप से सच भी है, परन्तु हम में से ऐसे कितने लोग हैं जो अंतःकरण में स्थिति सद्‌गुरु की आवाज को सुनते-समझते हैं, उसके निर्देशों को समझते एवं आचरण में लाते हैं। यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि मनुष्य की मानसिक अवधारणाएं सीमित एवं स्थूल हैं। मानव-मन विक्षुब्ध वासनाओं, इच्छाओं एवं महत्वाकांक्षाओं का संगम है। इस हलचल के बीच अंतः स्थित सद्‌गुरु की आवाज को सुनना भला कैसे संभव हो सकता है। उसकी आवाज तो नीरवता की, शांति की आवाज है। यदि हम अपनी नीरवता की इस आवाज को सुनना-समझना चाहते है, तो हमें अपने मन के आंतरिक कोलाहल को बंद करना पड़ेगा। परन्तु हम तो सामान्यक्रम में अपने मन की

संरचना ही नहीं समझते। हमें यह भी नहीं मालूम कि हम आसक्ति, क्रोध, ईर्ष्या, घृणा और वासना का अनुभव क्यों करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि हम इस कोलाहल को दबाने का जितना प्रयास करते है, उसकी आवाज तो उतनी ही तीव्र होती चली जाती है। इस आंतरिक अशांति को रोकने के लिये ही हमें गुरु की आवश्यकता होती है। वे ही उन विधियों के विशेषज्ञ हैं जिनके द्वारा शरीर, मन एवं अंतरात्मा का नियंत्रण व नियमन होता है। वे ही वह मार्ग दिखा सकते हैं जिस पर चलकर हम अपने मन की उन नकारात्मक प्रवृत्तियों को बदल सकते हैं, जो हमारे आत्मविश्वास में बाधा हैं।

गुरु ज्ञान की प्रज्वलित मशाल हैं। भौतिक शरीरधारी होने पर भी उनकी आत्मा उच्च एवं अज्ञात जगत में विचरती रहती है। वह अपने लिए नहीं, बल्कि हमारे लिए इस धरती से जुड़े रहते हैं। उनका प्रयोजन स्वार्थ रहित है। उनकी न तो कोई इच्छा होती है और न ही आकांक्षा। ये गुरु ही हमारे जीवन की पूर्णता होते हैं। वे पवित्राता, शांति, प्रेम एवं ज्ञान की साक्षात् मूर्ति हैं। व साकार भी है और निराकार भी। देहधारी होने पर भी देहातीत हैं। देहत्याग देने पर भी उनका अस्तित्व मिटता नहीं, बल्कि और अधिक प्रखर हो जाता है। उन्हें पाने के लिये, उनसे मिलने के लिये आवश्यक है हमारी चाहत। इसके लिये अनिवार्य है हमारे अपने अंतर्मन में उभरती तीव्र पुकार। **गुरु के जन्म दिवस का महापर्व हममें से हर एक संदेश लेकर आया है कि हमारे गुरुदेव हम सबसे दूर नहीं है। वे देहधारी होने पर भी देहातीत थे और अब देह का त्याग कर देने पर तो सर्वव्यापी हो गये है। उनका सदा ही यह आश्वासन है कि उन्हें पुकारने वाला उनके अनुदानों से कभी भी वंचित नहीं रहेगा।**

जीवन में हमारी कोई भी भूमिका हो हम धनी हो या गरीब, सुखी हों या फिर दुखी, स्वस्थ हों अथवा निरोग, हमारी चेतना विकसित हो या अविकसित, हममें से हर एक के लिये गुरुदेव के पास कुछ-न-कुछ अवश्य है। उनके पास हम सभी लोगों के लिए एक-न-एक संदेश है। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में कभी भी किसी तरह की कठिनाईयों का अनुभव नहीं किया है वह भी यह बात दावे के साथ नहीं कह सकता कि उसके जीवन में निराशा, असंतोष व रिक्तता के पल-क्षण नहीं आए। गुरुदेव हम सभी के जीवन की इस रिक्तता की पूर्ति करने के लिये कृत-संकल्प है। तपोमूर्ति गुरुदेव के श्रद्धापूर्वक आव्हान एवं हम सबके जीवन में उनकी कृपा के अवतरण का पर्व है।

गुरु और शिष्य

वर्षा ऋतु का समय था। चारों तरफ बादल उमड़ रहे थे। किसान लोग खेतों में जा रहे थे। स्थान-स्थान पर गड्डों में पानी भर गया था। मेंढक टर्र-टर्र कर रहे थे। कहीं-कहीं पानी में से निकलकर छोटे-छोटे मेंढक कूद फांद रहे थे। उस समय किसी कार्य से कोई गुरु और शिष्य कहीं जा रहे थे। अचानक असावधानी से गुरु के पैरों तले एक मेंढक आ गया और वह मर गया। शिष्य ने हाथ जोड़कर गुरु से निवेदन किया और प्रायश्चित लेने के लिए प्रार्थना की। गुरु ने सुना अनसुना कर दिया। कुछ भी बोले नहीं। दोनों अपने स्थान पर पहुंच गये। शिष्य आया। नमस्कार कर बोला- गुरुदेव उसका प्रायश्चित करना है। यह सुनते ही गुरु क्रोध में लाल हो गये, रोषपूर्ण वक्र दृष्टि से शिष्य को देखने लगे। शिष्य ने सोचा, अभी कहना उपयुक्त नहीं था, क्योंकि गुरुजी कार्य में व्यस्त है। सायंकाल प्रतिक्रमण के समय याद दिलाना उपयुक्त होगा। वह उठा और अपने स्थान पर चला गया।

सूर्य अस्त हुआ। प्रतिक्रमण करने के लिये सभी संतगण उद्यत हुए। आलोचना लेने के लिये गुरु के समक्ष वह शिष्य आया। दिन संबंधी अपने दोष कार्य की आलोचना करके बड़ी विनम्रता से हाथ जोड़कर वह बोला- पूज्यवर, आज मार्ग में आपके पैरों से मेंढक की हत्या हो गई थी। उसकी आप भी आलोचना कर ले। गुरुजी अब अपने कर्त्तव्य को भूल गये, गुस्से में विवेकहीन बन गये और अपना डण्डा लेकर शिष्य के पीछे झपटे। उसे पकड़ने के लिये दौड़े और बोले- जरा इधर आ, तुझे बताऊं मेंढक की हत्या कैसे हुई और कैसे होती है? शिष्य आगे और गुरु के पीछे यों उपाश्रय में दौड़ने लगे। गुरु को इस तरह आवेश में देखकर शिष्य कहीं छिप गया। उपाश्रय में गहरा अंधेरा था। खंभे भी बहुत थे। अचानक एक खंभे से गुरुजी टकरा गये और गिरते ही उनका देहान्त हो गया। उनकी आत्मा उस शरीर को छोड़कर चण्ड कौशिक सर्प के रुप में उत्पन्न हुई।

क्रोध के कारण उनकी संयम साधना सफल न हो सकी और उनको तिर्यंच गति में जन्म धारण करना पड़ा। अतः किसी भी स्थिति में क्रोध करना श्रेयस्कर नहीं है।

क्रोध भयंकर आग है, होते तप-जप नष्ट।
गुरु के इस आख्यान से, दिखा रहा है स्पष्ट॥

आलौकिक सुख और नवरत्न गुरुवर

मुझे बचपन से ही धर्म के प्रति, ईश्वर के प्रति श्रद्धा थी मम्मी भी नित्य पूजा करती थी और व्रत उपवास भी। तो बस धर्म के प्रति श्रद्धा ही रही लगाव नहीं हुआ जैसे-जैसे बड़ा होता गया धर्म की कई पुस्तकें पढ़ी, प्रभावित भी हुआ पर अन्दर तक किसी ने नहीं छुआ, बस जब तक पढ़ा असर रहा, पुस्तक बन्द और थोड़ी देर बाद प्रतिशत नहीं के बराबर। धर्म की चन्द लाईन जिसने सबसे अधिक प्रभावित किया वह लाईन थी कि- **''अपनी आत्मा में रमण करने में आलौकिक सुख की प्राप्ति होती है।''** ऐसा सुख जो संसार में कहीं भी नहीं है, किसी भी चीज में नहीं। क्या होता वह सुख, कैसा होता है बस एक सवाल जो हमेशा के लिए दिल में समां गया, पर कोशिश करने पर भी जवाब नहीं मिला तो लगा शायद यह किताबी बातें है या मेरी सामर्थ्य के बाहर की बात है, शायद मेरा इतना पुण्य प्रबल नहीं कि मैं ऐसे किसी सुख को अनुभव कर सकूं। फिर लौकिक जिन्दगी के लिए जो आवश्यक है, मेरी शादी हुई और वह सभी सांसारिक क्रिया कलाप जो जरुरी होते हैं, जीवन जीने के लिए उनसे परिचित होता चला गया। जो-जो चाहा किसी हद तक सब कुछ मिला या यूं कहें व्यवहारिक जिंदगी से मुझे कोई शिकायत नहीं रही। यश, धन, प्यार सब पाया पर फिर भी वह सुख जिसके बारे में बचपन पढ़ा था आलौकिक सुख ऐसा सुख जो दिल में स्थाई रुप से रहे वह नहीं मिला। ईश्वर से जो प्रीति होनी चाहिये थी वह नहीं हुई। फिर शायद जिन्दगी को मुझ पर तरस आ गया और उसने मुझे उस सुख से परिचित कराने के लिए मिलाया पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा के बारे में क्या कहूं, उनकी वाणी तो ऐसी लगती थी जैसे अरहंतदेव की वाणी हो, माँ सरस्वती से तो उनका जन्मों का नाता लगता है, ब्रह्म तेज से जिनका मुख मण्डल दैदीप्यवान है, निश्छल, जल से निर्मल, सहज, कामदेव स्वरुप, अनगिनत दिलों पर जिनका राज था ओर आज भी है।

ऐसे गुरुवर जिनके बारे में कुछ भी कहने के लिए शब्द कम पड़ जायें पर मन नहीं भरे,पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा के दर्शन करते ही जिन्दगी के मायने बदल गये। दिल में, निगाह में, जबान में, विचार में गुरुदेव बस गये। सब लोगों ने कहा तुम्हें क्या हो गया तो बस मन ने इतना ही कहा-

क्या कहें क्या हो गया, गुरुवर से सामना हो गया।
गुरुवर से मिलने से पहले,
जितना जीवन जीया वह बेकार हो गया।

गुरुदेव के असाधारण प्रवचनों ने दिल में जगह बनानी शुरु कर दी। मन कहता बस गुरुदेव के चरणों में ही बैठे रहें, बस उस दिन से मन बना लिया कि गुरुदेव की शरण में ही रहना है, उनके पास बैठने मात्र से ही मन में अपार शांति की अनुभूति होने लगी, मन हर तरह की कषायों से दूर रहने लगा। गुरुवर ने हमसे कभी नहीं कहा कि ये करो ये न करो या ये त्यागों या न त्यागो, पर उनके व्यक्तित्व का स्वतः ही ऐसा असर होने लगा कि सांसारिक बुराईयों से मन हटने लगा मन करने लगा कि रोज देव दर्शन करना है, रात्रि भोजन नहीं करना है, सुपारी वगैरह नहीं खाना है और न जाने क्या- क्या। गुरुदेव की भक्ति में आनन्द आने लगा कि उसके आगे संसार का सारा सुख फीका लगने लगा। गुरुवर की मुस्कान के आगे तो संसार के किसी भी डॉक्टर की दवाई भी बेकार है। गुरुवर की बातों में, चाहे वह आध्यात्म से जुड़ी हो, चाहे वो किसी को समझाने के लिए हो, इतना आनन्द जो किसी मूवी को देखने से भी नहीं मिल सकता। गुरुदेव मुस्कुरा कर हाथ उठाकर आर्शीवाद देते है तो ऐसा लगता था जैसे संसार की सारी निधियाँ मिल गई हों, उसके आगे तो ब्लेंक चैक भी बेकार है। अब तक पढ़ा था कि गुरुदेव का सानिध्य किसी की भी जिन्दगी बदल सकता है, ईश्वर के दर्शन करा सकता है पर पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा के सानिध्य में यह चरितार्थ होते हुए देख रहा हूं।

किसी ने मुझसे पूछा कि पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा के सानिध्य में तुमने क्या सीखा, तो मैं पलभर को सोचने लगता कि इन्हें क्या जवाब दूं क्योंकि क्या सीखा ये बताना कहां से शुरु करुं। फिर उसे इतना ही कहा कि गुरुदेव के सानिध्य में मैंने अपने आप में खुश रहना सीखा, वर्तमान में जीना सीखा और एक ऐसे सुख को अनुभव किया जिसे ही शायद अलौकिक सुख कहते हैं। उस सुख को पूरा नहीं तो कम से कम थोड़ा सा तो ही लिया है जिस सुख को कृष्ण की भक्ति में कभी मीरा ने पाया था और अन्त में इतना ही कहूंगा-

पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा का भक्त बनकर मैंने सारा जहां पा लिया।
सिर्फ जमीं ही नहीं। सारा आसमां भी पा लिया।

धर्म और शाकाहार

संसार के सभी धर्मों में अहिंसा परमो धर्म कहा गया है और किसी भी निरीह प्राणी की हत्या का निषेध किया गया है। कुछ लोग स्वार्थवश अपने स्वाद और जिह्वा इन्द्रिय की लोलुपता के कारण मांसाहार को अपने धर्म में निषेध नहीं मानते। किन्तु धर्मशास्त्रों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि कोई भी धर्म मांसाहार और जीव हत्या को उचित नहीं मानता। हिन्दु धर्म में सभी जीव को ईश्वर का अंश माना गया है और सबके प्रति प्रेम, दया और अहिंसा का व्यवहार करने को कहा गया है-

विष्णुपुराण के अनुसार जो मनुष्य जिस पशु को मारता है, वह उस पशु शरीर में जितने रोग हैं, उतने ही हजार वर्ष तक नरक में घोर दुःख भोगता है। मांस खाने वाले का जाप जपना, होम करना, नियम करना आदि शुभ कार्य निरर्थक है। महाभारत में कहा गया है यदि कोई मांस खाने वाला न हो तो कोई बकरे, मछली आदि पशुओं को न मारे। मांस खाने वाले के लिये ही धीवर कषाई आदि पशु पक्षियों को मारते हैं। अतः मांस भक्षण करने वाला ही उनके द्वारा की गयी हिंसा के लिये उत्तरदायी है। महाभारत में भी मांस खाने वाले के तपस्वी वेष धारण कर तपस्या आदि करने को निरर्थक कहा है।

मनुस्मृति में कहा है जिसका मांस मैं खाता हूं, वह परलोक में मुझे खायेगा। इस प्रकार ज्ञानी जन ''मांसरु'' का अर्थ बतलाते हैं -

मांस भक्षियितामुत्रयस्य मांस्मिहाद् म्यहम।
एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदंति मनीषिण॥

जो ब्राह्मण तिल और सरसों के बराबर भी मांस खाता है, जब तक सूर्य और चन्द्रमा है, तब तक नरक में रहना पड़ता है। उन्हें चिरकाल तक कष्ट भोगने पड़ते हैं।

श्रीमद् भगवद्गीता में भोजन की तीन श्रेणियां बतायी है। प्रथम सात्विक भोजन, जिनमें फल, सब्जी, अनाज, मेवे, दूध, मक्खन आदि की गणना की गयी है जो आयु, बुद्धि और बल को बढ़ाते हैं, अहिंसा, दया, क्षमा, प्रेम आदि सात्विक भावों को उत्पन्न कर सुख शांति प्रदान करते हैं। द्वितीय राजसी भोजन है, जिसमें गर्म तीखे, कड़वे, खाट्टे मिर्च, मसालेवाले उत्तेजक पदार्थ है, जो दुःख, रोग तथा चिंता प्रदान करनेवाले हैं। तृतीय तामसी भोजन है जिसमें बासी, रसहीन, अधपके, सड़े-गले, अपवित्र, नशीले पदार्थ तथा मांस, अंडे आदि जो बुद्धि भ्रष्ट करनेवाले, रोग, आलस्य आदि दुर्गुणों को जन्म देनेवाले है, जिनके द्वारा क्रूर भाव उत्पन्न होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा है कि मांसाहार से मनुष्य का स्वभाव हिंसक हो जाता है, जो लोग मांस भक्षण या मदिरापान करते हैं, उनके शरीर तथा वीर्यादि धातु भी दूषित हो जाते हैं।

बौद्ध धर्म में पंचशील अर्थात् सदाचार के पांच नियमों में प्रथम और प्रमुख नियम किसी प्राणी को दुःख न देना है। बौद्ध धर्म के मत अनुसार बुद्धिमान व्यक्ति को आपातकाल में भी मांस खाना उचित नहीं है।

सिख धर्मः- गुरुवाणी में परमात्मा से सच्चे प्रेम करने वालों को हंस तथा अन्य लोगों को बगुला बताया गया है। उन्होंने हंस का भोजन मोती तथा बगुलों का भोजन मछली, मेंढक आदि बताया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा छपवाये गये गुरु साहब के हुक्मनामे के अनुसार मांस, मछली, प्याज, शराब आदि नशीले पदार्थ खाने की सख्त मनाही है। सभी सिख गुरुद्वारों में लंगर में शाकाहार ही बनता है।

इस्लाम धर्मः- इस्लाम के सभी संतों-शेख इस्माईल ख्वाजा मोहनद्दीन चिश्ती, हजरत, निजामुद्दीन औलिया, बूअली कलन्दर आदि ने नेकरहमी, आत्मसंयम, शाकाहारी भोजन तथा सबके प्रति प्रेम का उपदेश दिया था। उनका कहना था कि ''अगर तू सदा के लिये स्वर्ग में निवास पाना चाहता है, तो खुदा की सृष्टि के साथ दया हमदर्दी का बर्ताव कर'' ईरान के दार्शनिक अलगुजाली के अनुसार ''रोटी के टुकड़े के अलावा हम जो कुछ खाते हैं, वह सिर्फ हमारी वासनाओं की पूर्ति के लिये होता है।''

लन्दन के मस्जिद के इमाम अलहाफिज वशीर अहमदमसेरी ने लिखा है- ''यदि कोई इंसान बेगुनाह चिड़िया तक को मारता है तो खुदा को इसका जवाब देना होगा और जो किसी परिन्दे पर दया कर उसकी जान बख्शता है अल्लाह उस पर कयामत के दिन रहम करेगा।'' ज्ञातव्य है कि इस्लाम स्वयं शाकाहारी थे और सबको शाकाहार की सलाह देते थे।

ईसाई धर्मः- ईसामसीह की शिक्षा के दो प्रमुख सिद्धांत

हैं रु-जीवनैसींस छवज झपसस और स्वअम जेल छमपहीइवनत अपने पड़ोसी से प्यार करो।

उनका कथन है- ''सच तो यह है कि जो हत्या करता है वह असल में अपनी ही हत्या कर रहा है। जो मरे हुए पशु का मांस खाता है, वह अपना मुर्दा आप ही खा रहा है। जानवरों की मौत उसकी अपनी मौत है, क्योंकि इस गुनाह का बदला मौत से कम नहीं हो सकता है।'' वे कहते है- ''यदि तुम शाकाहारी भोजन अपनाओगे, तो तुम्हें जीवन और शक्ति मिलेगी। लेकिन यदि तुम मृत मांसाहार भोजन करोगे तो तुम्हें वह मृत आहार मार देगा। क्योंकि केवल जीवन से ही जीवन मिलता है, मौत से हमेशा मौत मिलती है।''

जैन धर्म:- जैन धर्म का मुख्य सिद्धांत ही अहिंसा है। हिंसा दो प्रकार की है- भाव हिंसा और द्रव्य हिंसा। किसी जीव को मारना द्रव्य हिंसा और मारने या दुःख देने का विचारमात्र मन में आना भाव हिंसा है। जैन धर्म के अनुसार किसी चींटी तक को जानकर या प्रमादवश मारना हिंसा कहीं गई है। यह हिंसा, मन, वचन, कार्य कृत स्वयं करना, दूसरे से करवाना, अनुमोदना करने का समर्थन करना, क्रोध, मान, माया, लोभ और संरभ हिंसा करने के लिए सामान जुटाना समारंभ की तैयारी करना आरम्भ के भेद से 100 प्रकार से हो सकती है। जहां स्वयं हिंसा करना दूसरों से करवाना तथा करते हुए अनुमोदन करना भी हिंसा है। क्रोध, मान, माया अथवा लोभ के कारण किसी के मन को दुखाना भी हिंसा है, वहां माँसाहार के समर्थन का तो प्रश्न ही नहीं उठता। जैनागम में कहा है-

''हिंसादिष्विहामुत्रपायावद्यदर्शनम् ''दुःखभेववा''

हिंसा, झूठ आदि पापों से इसलोक में राजदण्ड, समाजदण्ड, निन्दा आदि का कष्ट भोगने पड़ते हैं। अतः हिंसादि दुःख ही है। दुःख के कारण होने से इन्हें उपचार से दुःख जी कहा गया है।

प्राणियों के घात के बिना मांस की उत्पत्ति नहीं होती। अतः मांसभक्षी व्यक्ति की हिंसा अनिवार्य रुप से होती है। यदि कोई कहे कि हम तो स्वयं मरे हुए जीवों का मांस खाते है, जब हम जीव को मारते ही नहीं है तो हमें हिंसा का दोष कैसे लगेगा ? आचार्य कहते हैं- स्वयंमेव मरे हुए भैंस, बैल आदि का मांस खाने से भी उस मांस के आश्रित रहने वाले उसी जाति के अनंत निगोदिया जीवों का घात होता है। अतः स्वयं मरे हुए जीवों का मांस खाने में भी हिंसा होती है।

पकी हुई, बिना पकी हुई अथवा पकती हुई मांस की डलियों में उसी जाति के सम्मूर्च्छन जीव निरंतर उत्पन्न होते रहते हैं। अतः जो व्यक्ति कच्ची अथवा पकी हुई मांस की डली खाता है अथवा छूता है, वह निरंतर एकत्रित किये हुए अनेक जाति के जीव समूह को मारता है।

चमत्कार का दूसरा नाम है जैन मुनि भगवंत

दुनिया में चमत्कारों की कमी नहीं है फिर भी चमत्कारों को भी चमत्कृत कर दे वह है जैन मुनि ! उनसे बढ़कर कोई चमत्कार नहीं है। जब सारा विश्व कामना, वासना और भौतिक आकर्षणों में मदहोश है तब जैन मुनि इन तमाम आकर्षणों को नजर अंदाजकर भोगियों के बीच अनासक्त योगी बनकर श्रमण काया लेकर निर्विकारी होकर सड़कों पर एक स्थान से दूसरे स्थान विहार कर जगत को साधना व साधुता का पाठ पढ़ाकर नश्वर में ईश्वर का रुप दर्शाते हुए समाज और राष्ट्र का मार्गदर्शन कर उसे सत्यता की ओर ले जाने का भी भागीरथ प्रयास कर रहे हैं तो इस युग में इससे बढ़ा चमत्कार कौन सा हो सकता है ?

✻ एक साधु नदी तट पर बैठा हुआ माला जप रहा था। पास बैठे एक व्यक्ति ने जप का कारण पूछा तो उसने बताया स्वर्ग प्राप्ति के लिए। ब्राह्मण भी साधु के पास ही बैठ गया। वह एक-एक मुट्ठी बालू नदी में डालना लगा। पूछने पर बताया कि नदी का पूल बनाऊंगा। उस पर होकर पार जाऊंगा।साधु ने कहा- मित्र पुनः इस प्रकार नहीं बनता उसके लिये इंजीनियर, श्रमिक, सामान एवं आवश्यक धन जुटाना पड़ेगा। बालू डालने भर से पुल नहीं बंध सकता। उलटकर व्यक्ति बोला- मंत्र माला जपने से स्वर्ग कैसे मिल जाएगा। उसके लिये संयम, ज्ञान एवं परमार्थ जैसे पुण्य भी तो करने पड़ेंगे। साधु ने अपनी भूल समझी और कर्मयोगी बन गया।

विपदाएं स्थिर नहीं रहती

विपदाएं समुद्र में ज्वार की लहरों की तरह आती है, तटों से टकराती है, आसपास बने घरौंदों तथा वृक्ष-पौधों को नष्ट कर देती हैं और पुनः सागर में सिमट जाती है। विपदाएं लहरों की तरह पूरे वेग से आती हैं। मानव का अतीत, वर्तमान एवं भविष्य पर भरपूर चोट करती हैं। उस आघात से मानव बिखर जाता है और कुछ ''देर'' पश्चात समय के विशाल सागर में स्वतः सिमट जाती है। कभी-कभी मानव-जीवन पर उनका चिन्ह भी शेष नहीं रहता। समय का अन्तराल सब समतल कर देता है। वहीं सब से बड़ा मरहम माना जाता है।

क्या आपको याद है ? अब से बीस वर्ष पूर्व आपका शहर भूकम्प की चपेट में आकर बिल्कुल खण्डहर हो गया था या उससे भी पहले विश्व युद्ध की बलिवेदी पर आपके परिवार का मात्र रोटी कमाने वाला कुर्बान हो गया था। तब आपके परिवार पर विपदाओं का पहाड़ टूट पड़ा था। उस समय संसार का सबसे अधिक मुसीबतजदा आपका ही परिवार था। दिन-रात रोते-रोते गुजरता था। रोने के अतिरिक्त कुछ अन्य कार्य था ही नहीं किन्तु वही करुण स्थिति आज भी है। क्या आप उतना ही आज भी रोते हैं ? क्या उतना ही गहरा गम आज भी है ? क्या आप त्यौहार नहीं मानते ? पिकनिकों पर नहीं जाते ? घर पर अपने टीवी सैट पर मनोरंजक कार्यक्रमों का भरपूर आनन्द नहीं उठाते ? बच्चों की बाल लीलाओं से आपका वहीं मन गद्गद हो जाता है जिसमें तब सिवाय क्रन्दन के कुछ और था ही नहीं।

विगत चाहे कितना ही विपदाग्रस्त और संघर्षपूर्ण क्यों न रहा हो, आप उसके मात्र स्मरण से विजयपूर्ण रोमांच का अनुभव करते हैं क्योंकि आपने उसे ''बहादुरी'' से झेला है। आपका अतीत आपके अब किसी ''वीरतापूर्वक'' से कम शौर्यपूर्ण नहीं प्रतीत होता। आपने धैर्य से विपदा के प्रत्येक तूफान का मुकाबला किया था और कितने साहस के साथ आपने उसका सामना किया था। यह याद करके आप स्वयं को एक महान योद्धा से कम नहीं समझते। उस मुकाबले और उस बहादुरी के क्षण आज भी आपके मन-मस्तिष्क में गौरव की मशाल जाग्रत कर देते हैं। विजय एवं संतोष की मिली-जुली झिलमिलाती आभा आपके श्रीमुख पर सुशोभित हो जाती है।

किन्तु इसी अनुभव के साथ-साथ क्या आपने एक क्षण के लिये यह विचार करने का कष्ट उठाया है कि विपदाएं स्थिर नहीं रहती। शायद आपका उत्साह बढ़ाते हुए किसी ने कहा भी था- ''जीवन में ऊंच-नीच तो चलती रहती है। प्रत्येक भयंकर रात के पश्चात् हर्ष का सूर्योदय अवश्य होता है। मुसीबतें सदा के लिये नहीं आती....'' आदि-आदि.... और आप उन्हीं सूक्तियों के सहारे वह युद्ध लड़कर जीत सके थे- है न ?

यदि आपने आज से पहले गलतियां की है तो वह गलतियां भी काल प्रवाह के साथ बह गई और अतीत का हिस्सा बन गई। अब उन पर सोचने से कुछ लाभ नहीं। फैले हुए दूध पर पछताने से क्या फायदा ? यदि दुबारा गलती न करें ताकि दूध फैलने से बच जाए तो ही समझिए कि आपने सही अर्थों में अपनी गलतियों पर प्रायश्चित किया है। उन्हीं गलतियों पर सोचते रहने और उनको ही लेकर मन में ग्रंथियां तोड़-मरोड़कर संजोए रखने से सिवाय सांप निकल जाने के पश्चात लकीर पीटने के कुछ हाथ नहीं लगेगा।

एक व्यापारी जो कल किये गये घाटे के व्यापार के संबंध में ही सोचते रहता है और जो व्यतीत हो गया, उस पर ही किन्तु, परन्तु की झड़ी लगाकर बेकार की काल्पिनिक योजनाएं बनाता है और अपने चारों ओर प्रश्नों की लम्बी-लम्बी सलाखों का पिंजरा बना लेता है जबकि वह ''कल'' पर पहले ही पानी फेर चुका है।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो कभी-कभी गलती कर बैठते हैं या उनसे अनजाने में कोई भूल हो जाती है और अपने अभियान में बुरी तरह से पिट जाते हैं तो इतना कहकर वे तुरन्त अपनी ''स्लेट'' धो-पोंछकर साफ कर देते हैं- इस बार, इससे क्या फर्क पड़ता है। अगली बार इसे ठीक कर लेंगे.... इसी वर्ग में कुछ ऐसे भी होते हैं जो अगली बार का मतलब अगले जन्म से भी लगा लेते हैं। इस प्रकार की परिकल्पना अत्यन्त दूरगामी और संतोषप्रद होती है। ''दिल बहलाने को गालिब यह ख्याल अच्छा है।''

गत वर्ष जो भी आपने कष्ट झेले हैं, उनमें से आज कितने याद हैं, बताइए तो सोचकर। उस समय की मुसीबतें जो एक पल आप पर अहसान करके गुजरती थी, आपको कितनी

याद है ? यही सिद्धांत आज के वर्तमान संकटों पर लगाकर देखिए.... जब वे दिन नहीं रहे तो यह दिन भी नहीं रहेंगे। समय तो एक क्षण के एक करोड़ या एक अरब अंश के लिये भी नहीं ठहरता। प्रकृति ने यही एक प्वाइंट उन लोगों के हित में सुरक्षित रखा है जो विपदाओं को अस्थिर मानकर उसने बहादुरी से जूझते हैं जो कुछ भी घटता है, समय की पीठ पर बंधा हुआ रहता है, जो अस्थिर समय के साथ-साथ खिसकता चला जाता है। कालांतर में यह समय ही है जो समुद्र की लहर तट पर पड़े (मुसीबतों के) गड्ढों को पानी व

''आपदा का अर्थ किसी भी क्षेत्र में प्राकृतिक या मानव निर्मित कारणों से होने वाली दुर्घटना, घटना, आपदा या गंभीर घटना या दुर्घटना या लापरवाही से है जिसके परिणाम स्वरुप जीवन का पर्याप्त नुकसान होता है या मानव पीड़ा या क्षति और संपत्ती का विनाश या क्षति, या पर्यावरण का क्षरण होता है तथा वह घटना ऐसी प्रकृति और परिमाण की हो जिस से उभर पाना प्रभावित क्षेत्र के समुदाय की क्षमता से परे हो।''

आपदाओं को अक्सर खतरे के संपर्क, मौजूद संवेदनशीलता की स्थितियां और संभावित नकारात्मक परिणामों को कम करने का या उनका सामना करने के लिए अपर्याप्त क्षमता या उपायों के संयोजन के परिणाम के रुप में परिभाषित किया जाता है। आपदा के प्रभाव में, जीवन को हानि, चोट, बीमारी तथा मानव के शारीरिक, मानसिक व सामाजिक कल्याण पर विपरीत प्रभाव, के साथ संपत्ति के नुकसान, सेवाओं की हानि, सामाजिक व आर्थिक व्यवधान एवं पर्यावरण के नुकसान को समाहित किया जा सकता है। आपदा प्राकृतिक या मानव निर्मित कारणों का परिणाम है जो जान और माल की गंभीर क्षति करके अचानक सामान्य जीवन को उस सीमा तक अस्तव्यस्त करता है, जिसका सामना करने के लिए उपलब्ध सामाजिक तथा आर्थिक संरक्षण कार्यविधियां अपर्याप्त होती है अर्थात् आशंकित विपत्ति का वास्तव में घटित होना आपदा है...!

बालू से पाटता चला जाता है। वह ही बड़ा मरहम है जिससे बड़े से बड़े गहरे घाव भर जाते हैं-उसके सुखद स्पर्श से। इसे भूल जाना ही उत्तम है। आप यदि नहीं भूल पाए जो समय आपके स्मृति मंच पर अपनी यवनिका डालकर वर्तमान दृश्य के समान नया दृश्य प्रस्तुत कर देगा।

नई समस्याएं, नए संघर्ष और उनके समाधान करने के तरीके भी नए। याद रखिए, जो लोग अपने अतीत को अपने सीने से चिपकाए पड़े रहते हैं वे न तो वर्तमान संवार पाते है न ही भविष्य के लिए संजोकर रख पाते हैं। सिवाय तब, जब निराशा, निरुत्साह और हताशा का बोझ लादकर भटकते फिरें, आप कुछ भी नहीं कर पाते। इस स्थिति में भी आपको कुछ प्राप्त नहीं होता।

माना, आपने पहले भयंकर भूलें की हैं, जघन्य अपराध भी किये हैं, पर उनके बारे में सोचते रहने से क्या लाभ ? बस, अब सच्चे मन से वायदा कीजिए कि भविष्य के लिये आप सब कुछ सुधार चुके हैं और वह गलतियां अब नहीं दोहराएंगे- इतना काफी है। एक प्रकार से सबसे बड़ा प्रायश्चित। गलतियां सभी से होती है पर मानव वहीं है जिससे दुबारा नहीं होती।

एक बार मुझे एक परिवार में जाने का अवसर मिला। उसके घर की दीवार पर एक तख्ती पर एक वाक्यांश दिखाई दिया। उस पर लिखा था- ''इट इज नॉट दैट मैटर'' (किसी बात की चिन्ता नहीं)। उस परिवार का वहीं सिद्धांत था- जो कुछ होता है, होने दो। जिस पर हमारा नियंत्रण नहीं, उसको लेकर हम क्यों हाय तोबा करते फिरें। जिसको हम रोक नहीं सकते, उसके कारण हम चिन्ता क्यों करें। प्रत्येक आघात के प्रहार को हमें धैर्य और साहस के साथ सहन करना चाहिये। उससे निपटने के लिए हमें क्रियाशील रहना चाहिये। जो कुछ भी होता है, होने दीजिए। परवाह मत कीजिए। जितना महत्व आप उस विशेष घटना अथवा आघात को दे रहे हैं, हो सकता है, उसका महत्व आधा भी न हो। मगर आप हैं कि बेकार में डरे जा रहे हैं। '' खोदा पहाड़ निकला चूहा और वह भी भाग गया....''

प्रकृति हमारी सभी जरुरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध करवाती है, लेकिन हमारे लालच को पूरा करने के लिये नहीं।

प्रतीक्षा में न बैठें, स्वयं ही बढ़ चलें

सतयुग की वापसी इसी एक विधि व्यवस्था पर अवलंबित है कि लोक आस्था में यह विश्वास उभरे कि मनुष्य जीवन मात्र पेट और प्रजनन तक सीमित रहकर पशुओं की तरह श्वासों का भार ढोने के लिये नहीं है। वरन् उसमें आत्म कल्याण और लोक निर्माण के आदर्शों की पूर्ति किसी न किसी रुप में की जाती रहनी चाहिये।

इसके लिये आवश्यक है कि भारतीय संस्कृति की रीढ़ कहीं जाने वाली वानप्रस्थ परंपरा को पुनजीवित किया जाय। लोग यह रीति नीति अपनायें कि पूरा न सही आधा जीवन तो उस निमित्त लगाना चाहिये जिसके लिए मनुष्य जन्म की धरोहर सृष्टा ने सौंपी है। यह उद्देश्य पूजा-पाठ भर से पूरा हो सकता है, इस भ्रम में किसी को भी नहीं रहना चाहिये। शारीरिक स्वच्छता के लिये जिस प्रकार स्नानादि नित्य कार्य आवश्यक है उसी प्रकार मानसिक शुद्धि के लिये उपासना, साधना, आराधना की आवश्यकता है। इतने पर भी आत्म परिष्कार और लोक मंगल में संलग्न रहने की आवयकता बनी ही रहती है। इसकी पूर्ति के लिये अधिकाधिक समय दान और अंशदान नियोजित करते रहना चाहिये। इस निर्धारण को कार्यान्वित करने का नाम वानप्रस्थ है। उसी मनः स्थिति में ऐसा कुछ बन पड़ना संभव है जिसमें आत्म संतोष, लोक सम्मान और दैवी अनुग्रह के विविध लाभों से लाभान्वित हो सकना बन पड़ा।

प्रचलन के अनुसार व्यक्ति संकीर्ण स्वार्थपरता के भव बंधनों में जकड़े हुए ही अपना आयुष्य बिता देता है। युग क्रांति ऐसी होनी चाहिये जिसमें हर विचारशील को परमार्थ का भी ध्यान रहे और उसके लिये समय एवं साधनों का एक बड़ा अंश उपयुक्त वातावरण बनाने में नियोजित रहे। यह प्रवाह चल पड़े तो समझना चाहिये कि उलटे को उलट कर सीधा कर दिया गया और उज्जवल भविष्य की संभावना का स्वरुप बन गया, सरंजाम जुट गया।

वानप्रस्थ शब्द पुराने हैं। इनके साथ पाखंड की मात्र इतनी अधिक जुड़ गई है कि इस तत्व दर्शन का नया नाम देने की आवश्यकता पड़ी है ''गुरु'' शब्द कभी देवोपम स्तर का परिचायक था, पर अब वह धूर्तता के अर्थ में, व्यंग-उपहास के साथ लिया जाता है। इसलिये पुराने शब्दों के स्थान पर ''मार्गदर्शक'' शब्द का उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार पुरोहित को अब व्रतधारी कहा जाय यही उचित जाना। प्रज्ञा परिवार के लिए अपने को ''प्रज्ञापुत्र'' कहते हैं। इसलिये यदि लंबा नामकरण अभीष्टहो तो व्रतधारी प्रज्ञापुत्र भी कहा जा सकता है। संक्षेप करना हो तो ''व्रतधारी'' शब्द भी पर्याप्त है। परिव्राजक धर्म की व्याख्या भी इस शब्द में आ जाती है।

विश्व के हर कोने में युगदेवता ने अपना आव्हान गुंजाया है कि प्राणवान जीवंत भावनाशीलों में से जिन्हें भी विषमता का आभास हो वे समय की पुकार को सुन, युग धर्म को समझे और नवसृजन के क्षेत्र में श्रद्धा और साहसपूर्वक उतरे जिन्हें यों अध्ययन और परामर्श से भी तत्वज्ञान का एक बड़ा अंश प्राप्त हो सकता है। चिंतन और मनन का अध्यावसाय भी दिशा निर्धारण कर सकता है। पर उपयुक्त वातावरण में अभीष्ट ऊर्जा उपलब्ध करने का महत्व भी कम नहीं है। इसीलिये समय के अनुरुप अपनी गतिविधियों को उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर करने के लिये इन सत्रों में सम्मिलित होने के लिये कहा गया है। व्रतधारी को अपनी परिस्थिति के अनुरुप भावी कार्यक्रम बनाने में अधिक सुविधा रह सकती है। वैसे कुछ विचार विमर्श तो पत्र व्यवहार से भी सम्पन्न हो जाते है।

अच्छा होता आंशिक समयदान करनेवाले वानप्रस्थों में से एक ऊंची श्रेणी परिव्राजकों की, जीवनदानियों की उभरती। उन्हें प्राचीनकाल के संन्यासियों का आधुनिक संस्करण कहा जा सकता है। कुछ तो आंशिक रुप से सेवा कार्य करते रहने पर भी बन पड़ता है, पर यदि पूरा मन, पूरा समय और पूरा जीवन ही लक्ष्य के लिये नियोजित किया जा सके तो उसे सोने में सुहागे की उपमा दी जा सकती है।

यह भ्रम मन में से निकाल ही देना चाहिये कि जो मात्र खुदगर्जी को ही सोचते, समझते और अपनाते हैं वे नफे में रहते हैं। मजे में रहते और मौज उड़ाते हैं। जो परामर्श में समय और साधन लगाते हैं वे घाटे में रहते हैं। वास्तविकता इससे ठीक उलटी है। स्वार्थी भले ही कुछ संचय कर लेते और सुविधा-साधनों की दृष्टि से भारी पड़ते हों पर संकीर्णता के साथ और जो अनेक दुर्गुण जुड़े होते हैं उनके कारण व्यक्ति की आंखों में गया गुजरा ही सिद्ध होता रहता है। निष्ठुरता, अनुदारता को सघन बनाये रहने पर कोई आज तक व्यक्तित्व की दृष्टि से न तो ऊंचा उठ सका है, न आगे बढ़ सका। सड़ी-कीचड़ में उपजने और कुलबुलाते रहने वाले घिनौने कीड़ें से अधिक भारी वे बन ही नहीं पाते। अपने परायों की श्रद्धा-सहानुभूति से उन्हें वंचित ही रहना पड़ता है। ऐसे मनुष्य अपने

आपको अकेला अनुभव करते रहते हैं और सुनसान में रहनेवाले भूत पलीतों जैसी जिंदगी जीते हैं। ऐसों के पास कुछ सुविधा रहते भी हों तो वे साथी-सहयोगियों के अभाव में, निरानंद एवं भारभूत बनकर ही रहते हैं।

सुख बाँटने की वस्तु है और दुःख बंटा लेने की। इसी आधार पर आंतरिक उल्लास और अन्यायों का सद्भाव प्राप्त होता है। महानता इसी आधार पर उपलब्ध होती है।

प्रगतिशील स्तर के श्रेष्ठ जन सहज हो अपने अंदर ऐसे सद्गुण विकसित कर लेते हैं, जिनके आधार पर वे जन जन का सद्भाव अर्जित करते हैं। सराहना के पात्र बनते हैं। लोकपरलोक सुधारते और महामानव की पंक्ति में अपना प्रतिष्ठित स्थान बनाते हैं। ऐसे लोग भूखे-नंगे भी नहीं रहते। खुशहाली के लिए जन सहयोग की अनिवार्य आवश्यकता पड़ती है। वह उन्हें अनायास ही प्राप्त होती रहती है। उदारता के बदले अन्यान्यों की उदारता भी मिल कर रहती है। प्रसन्नता और प्रफुल्लता इसी पर अवलंबित हैं। पुरोहित वर्ग को इसीलिए समाज का मूर्द्धन्य माना जाता रहा है कि वे मात्र पदार्थ-जन्य सेवा ही नहीं करते वरन् पिछड़ों को ऊंचा उठाये, आगे बढ़ने वाली प्रेरणाएं भी बरसाती हैं। आर्थिक सहायता तो कुछ समय ही किसी का काम चलाती है। कुपात्रों द्वारा दुरुपयोग बन पड़ने पर तो वह अनर्थकारी भी बन जाती है। ऐसी दशा में ग्रहीता ही नहीं दाता भी नरक जैसे अपयश का भाजन बनता है। किन्तु आदर्शवादी प्रेरणाएं ऐसी है जिन्हें पाकर कोई भी भौतिक एवं आत्मिक क्षेत्र में निश्चित रुप से प्रगति ही करता है। इस अनुदान के बदले प्रतिदिन न सही कृतज्ञता तो मिलती ही है। भले ही वह वाणी से व्यक्त न भी की गई हो। ऐसे उदारमना लोग ही देश, धर्म, समाज, संस्कृति की कुछ कहने योग्य सेवा कर पाते हैं। बदले में वे वह उच्चस्तरीय प्रतिफल प्राप्त कर लेते हैं। जिससे नर वानरों को वंचित ही रहना पड़ता है।

आधी आयु परमार्थ में लगाने की प्राचीन देव परंपरा का ही सत्यपरिणाम था कि सतयुगी वातावरण में जन्में लोग देवमानव कहलाते रहे और इसी धरती को स्वर्गोपम बनाने की भूमिका निभाते रहे। उज्ज्वल भविष्य की संरचना होने की पुण्य वेला में ऐसे ही देवमानवों के प्रयासों की आवश्यकता पड़ेगी। उसकी पूर्ति के लिए जिनमें भी भाव संवेदना विद्यमान हो उन्हें उसी राजमार्ग पर चलने का साहस जुटाना चाहिये जिस पर कि अपने पूज्य पूर्वज चलते रहे हैं। उच्चस्तरीय लोक-सेवियों की कमी न रहने पर जन-जन की भौतिक और आत्मिक प्रगति प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगेगी। युग की इस मांग को पूरा करने के लिये हमें स्वयं ही सोचना और बिना साथियों की अग्रगामियों की प्रतीक्षा किये स्वयं ही बढ़ चलने का आदर्श उपस्थित करना चाहिये। व्रतधारी द्वारा यही अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया भी जाता रहा है। आगे भी ऐसे अनेकानेक व्यक्ति नरपशु के पास से मुक्त हो इस कार्य में जुड़ेंगे- ऐसा विश्वास हैं।

गुरु

नहीं होता है....

डॉक्टर के पास कपट करनेवाला दर्दी निरोगी नहीं होता है। वकील के पास कपट करनेवाला मुक्किल विजयी नहीं होता है। शिक्षक के पास कपट करनेवाला विद्यार्थी पास नहीं होता है। पिता के पास कपट करनेवाला पुत्र यशस्वी नहीं होता है। गुरु के पास कपट करनेवाला शिष्य भवपार नहीं होता है।

गुरु के आठ प्रकारः-

1- नील चास पक्षी समान :- देखने में सुंदर, आचरण में हीन, मिथ्यात्वी कुगुरु।

2- क्रौंच पक्षी समानः- देखने में असुंदर, आचरण में हीन परन्तु वाणी में मधुर, वेश-क्रिया रहित शुद्ध प्ररुपक मरीचि जैसे।

3- भ्रमर समान :- देखने में असुंदर, आचरण शुद्ध वाणी अस्पष्ट, प्रत्येक बुद्ध, मुनिवेश रहित, क्रिया से शुद्ध उपदेश नहीं देनेवाले, करकंडु इत्यादि।

4- मयूर समान :- देखने में वाणी में सुंदर परन्तु आचरण में अशुद्ध, मुनिवेश में रहे हुए कुगुरु, मंगु आचार्य वगैरह।

5- कोयल समानः- देखने में असुंदर, वाणी मीठी।

6- हंस समानः- देखने में सुंदर, क्रिया भी प्रायः शुद्ध वाणी नहीं, उपदेशाधिकारी नहीं, जैसे धन्ना शालिभद्र।

7- शुक समानः- दिखावा, वाणी एवं आचरण तीनों शुद्ध सुगुरु जैसे जंबूस्वामी।

8- कौए के समान :- दिखावा, वाणी, आचरण- तीनों अशुद्ध, जैसे पाखंडी।

प्रथम गुरु

माता : ज्ञान का प्रथम गुरु
पिता : कर्म का प्रथम गुरु
पत्नी : प्रेम का प्रथम गुरु
पुत्र : कर्त्तव्य का प्रथम गुरु

आत्मिक प्रगति को सरल बनाती है, संयम साधना

ऋषियों-मुनियों, साधकों, विरक्तों की तपश्चर्या कष्ट साध्य होती है। उसमें कितनी ही तितिक्षाएं करनी पड़ती है। एकांत में रहने, विरक्त बनने, मन मारने, ब्रह्मचर्य साधने, शरीर को अनेक प्रकार के कष्ट देने जैसे कृत्यों में एक निष्ठभाव से दीर्घकाल तक संलग्न रहना पड़ता है। लंबे व्रत, उपवास करने, इच्छाओं को दमन करने के लिये कष्ट साध्य क्रिया कलाप अपनाना पड़ता है जो किन्हीं बिरलों के लिये ही संभव है। साथ ही एक कठिनाई और भी है कि यदि व्रत खंडित हो चले तो उलटे हानि कारक परिणाम भी हो सकते हैं। लेने के देने पड़ सकते हैं। लंबी छलांग लगाने वाले कभी चूक जाते हैं तो टाँग टूटने जैसे कष्टदायक जोखिम भी उठानी पड़ती है।

सरल मार्ग तलाश करना सदा सुविधाजनक रहता है। धीमी चाल से चलने में समय तो अधिक लग जाता है पर साथ ही यह सुविधा भी है कि दौड़नेवालों की तरह बेचैनी का, उतावली का, सामना भी नहीं करना पड़ता और पिछड़ जाने पर उपहास का पात्र भी नहीं बनना पड़ता मनोबल भी नहीं टूटता। भविष्य में चलते रहने की हिम्मत भी बनी रहती है साथ ही गतिशीलता छोड़ बैठने की आवश्यकता भी नहीं पड़ती।

तप का सर्व सुलभ रुप है- संयम। छट्ठम मन की निर्बाध रुप से किसी भी दिशा में दौड़ चलने की आदत अधिकतर उच्छृंख लता के रुप में देखी जाती है। मर्यादाओं और वर्जनाओं को तोड़ते रहने की कुटेव जब परिपक्क हो जाती है तो फिर नशेबाजी की तरह उससे पीछा छुड़ाना कठिन पड़ता है। विषवेल को फैलाने से पहले ही उसे दबोच लेने में कठिनाईयों का सामना नहीं करना पड़ता जो गहरी जड़ जमा लेने पर निर्मूल करने में कठोर प्रयास करना होता है। असंयम एक प्रकार की अनुशासन हीनता है जिसे आरंभ में ही नियंत्रित किया जाना चाहिये। गीली लकड़ी को झुकाया जा सकता है। पर पक जाने या सूख जाने पर तो वह टूटने ही लगती है। गीली मिट्टी के बरतन बनते हैं। सूख जाने पर तो उसकी कठोरता बेकार ही हो जाती है। तब उसे किसी साँचे में ढालना संभव नहीं रहता।

जिसे सरल स्वाभाविक जीवनयापन करते हुए तप साधना के लाभों से लाभान्वित होना है उन्हें सर्वतोमुखी संयम साधना अपनाने के लिए तत्पर होना चाहिये। उस पर संकल्पपूर्वक निष्ठा भी जमानी चाहिये।

इंद्रिय निग्रह में व्रत और उपवास का दर्जा ऊंचा है। उपवास का अर्थ किसी दिन साधारण भोजन का क्रम बदल देना भर नहीं है वरन् यह भी है कि पेट को अपना उलझा हुआ काम सुलझा लेने के लिए एक दिन की छुट्टी देना। अच्छा हो यह दिन केवल जल लेकर बिताया जाय। न बन पड़े तो कुछ अ ाहारी वस्तुएं सीमित मात्रा में लेकर एकासणा किया जाय। जिव्हा की लोलुपता और जल्दबाजी मिलकर निकलने में जल्दबाजी दिखाती है। उस कार्य को बेगार समझ कर जैसे-तैसे निबटाने की कोशिश करते हैं। यह नहीं होना चाहिये। समझा जाना चाहिये कि आधा भोजन पेट में पचता है और आधा मुंह के लार व स्रावों से। इसलिये ग्रास को मुंह में देर तक रखा जाना चाहिये दांतों का काम भोजन को चक्की की तरह पीस कर बारीक करना है साथ ही आहार के स्वाद का आनंद लेना भी। भोजन सात्विक, हरा, सजीव और शाकाहार वर्ग का होना चाहिये, उसमें मिर्च मसाले, शक्कर, चिकनाई की भरमार न हो। इस प्रकार भूख से कम मात्रा में नियत समय पर किया गया आहार जीवन दाता कहा जाता है। इन मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए आहार नियमन का व्रत पाला जाता रहे तो शरीर स्वस्थ और दीर्घ जीवी बना रह सकता है साथ ही उसकी अधिक मात्रा खर्चने बनाने में ढेरों समय खराब करने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। ''जैसा खाए अन्न वैसा बने मन।'' की उक्ति शत प्रतिशत सही है यदि आहार में नशों का, मिष्ठान्न पकवानों का, आचार मुरब्बों का समावेश रहेगा तो उससे न केवल शरीर पर वरन् मन पर भी प्रभाव पड़ेगा। अखाद्य खाने वालों की मानसिक चंचलता बढ़ी-चढ़ी रहती है। वे किसी महत्वपूर्ण कार्य पर मन टिका ही नहीं पाते। बे सिर पैर की रंगीली उड़ाने उड़ते रहने में बहुमूल्य मानसिक शक्तियों का अपव्यय ही होता है, उस चेतन ऊर्जा का सदुपयोग बन पड़ने पर जो प्रयोजन सिद्ध हो सकते हैं उन पर सदुपयोग ही नहीं बनता। शरीरगत क्रिया कलापों की नियमित दिन चर्या होनी चाहिये। समय विभाजन करने और फिर उसके निर्वाह पर पूरा ध्यान देना, जीवन संपदा की सुव्यवस्था है जो उसे स्वभाव का अंग बनाए रहते हैं वे अधिक उपयोगी कार्य अधिक मात्रा में कर पाते हैं। इसका अर्थ यह

हुआ कि जो खाया गया है उसका आधा चौथाई ही शरीर में लग पाता है। बाकी सब निरर्थक चला जाता है। उलटे कब्ज उत्पन्न करके अंग-प्रत्यंगों में विषाक्तता बढ़ाता है।

आहार की ही तरह इंद्रिय संयम में ब्रह्मचर्य को प्रधानता दी गयी है। कामुकता का एक प्रकार की विकृति माना गया है। शारीरिक उत्तेजना तो गर्भधारण की आवश्यकता के लिये ही यदा-कदा उभरती है। खाली दिमाग पर शैतान छाया रहता है। यह कहावत प्रधानतया कामुक विचारों के संबंध में ही लागू होती है। देखा जाता है कि अश्लील चित्रण एवं क्रिया कलाप ठाली बैठने वालों के सिर पर चढ़ा रहता है और उसका आकर्षण चिंतन को किन्हीं महत्वपूर्ण प्रयोजनों में लगने से रोके रहता है। वैज्ञानिक, विद्वान, मनीषी, बुद्धिजीवी, कलाकार, साहित्यकार, अपने मन को साधने की कुशलता में निष्णात होते हैं वे मस्तिष्क में बंदर जैसी उछल-कूद नहीं मचने देते। जिस कार्य को उपयोगी एवं आवश्यक मानते हैं उसी में एकात्म भाव से तन्मयता, स्थापित करते हैं, उथले मन से, सरसरी नजर से जिन भी विकारों को आते देखते हैं, तुरन्त उन पर नियंत्रण स्थापित कर लेते हैं।

बिखराव का एकीकरण करना कितना चमत्कारी है इसे सभी जानते हैं। तिनकों से रस्से बटे जाते हैं और धागे मिलकर कपड़ा बनाते हैं। भव्य भवन बिखरी ईटों को एकत्रित करके ही बनाए जाते हैं। विचारों के संबंध में भी यही बात है। जो विद्यार्थी एकाग्र भाव से रुचि पूर्वक पढ़ते हैं वे अच्छे डिवीजन में उत्तीर्ण होते हैं। प्रतिस्पर्द्धाओं में इसी प्रकार की मनोभूमि वाले सफल होते हैं। आर्चीटेक्ट, इंजीनियर, साहित्यकार, वैज्ञानिक आदि की सफलताओं का श्रेय उनकी एकाग्रता पर ही निर्भर रहता है। बया पक्षी इसी आधार पर सुंदर घोंसला बनाता है। इंद्रिय संयम की ही तरह विचार संयम भी एक प्रकार की साधना तपश्चर्या है जिसे साधारण मनुष्य की जागरुकता अपनाकर अपने अभ्यास में उतार सकता है और अभीष्ट दिशा में उत्साह वर्धक सफलता प्राप्त कर सकता है। मन की एकाग्रता उन्हीं से सधती है जो अपने समय को साध लेते हैं अर्थात् दिनचर्या बनाकर समय के श्रेष्ठतम विभाजन की योजना बनाते हैं। समय का एक क्षण भी बर्बाद नहीं होने देते। आलस्य-प्रमाद से बचते और साहसिकता पूर्वक समय को, जीवन-संपदा को बहुमूल्य समझकर उसके छोटे से छोटे घटक को भी सुव्यवस्थित रुप से प्रयोग में लगाते रहते हैं।

इन्हीं सतर्कताओं में ईमानदारी का श्रम-सिक्त उपार्जन भी सम्मिलित है और उसके उपयोग में औसत नागरिक के निर्वाह स्तर के साथ तुलना करते रहना भी। जो कमाया जाय, वह असीम हो यह आवश्यक नहीं। श्रमपूर्वक ईमानदारी से थोड़ा ही कमाया जा सकता है। उतने से ही संतोष करना हो और प्रसन्न रहना हो तो उसका एक ही उपाय है कि खर्च करते समय इस बात का ध्यान रखा जाय कि उसमें कहीं अपव्यय को स्थान तो नहीं मिल रहा है। आम तौर से लोगों को अपना बड़प्पन जताने के लिये कपड़ों की,जेवरों की श्रृंगार प्रसाधनों की, ठाट बाट के प्रदर्शनों की आवश्यकता पड़ती है व इसके लिये ढेरों पैसा और समय बर्बाद करना पड़ता है। सोचा यह जाता है कि इस आधार पर अमीरी की छाप छोड़ी जा सकेगी। बड़प्पन प्रकट किया जा सकेगा किन्तु होता ठीक उलटा है। अपनी और दूसरों की आँखों में बचकाना, ओछा, मनचला और घटिया समझे जाने का ही उपहार मिलता है। यह न हो व अर्थ संयम भी सभी संयमों की तरह सध सके तो व्यक्तित्व विकास की क्रिया सफलतापूर्वक सम्पन्न होती रह सकती है।

रोटी- *एक भूखा आदमी एक मकान के बाहर स्वयं गृहिणी से रोटी मांग रहा था। दरवाजा खोलकर गृहिणी बाहर आयी और उसको रोटी दे दी। जैसे ही रोटी उसके हाथ में आयी वैसे ही एक कुत्ता वहां आ पहुंचा और रोटी को ललचायी निगाहों से देखने लगा। ऐसा लगता था जैसे बहुत भूखा हो! उसने कुत्ते को वह रोटी दे दी। यह देखकर गृहिणी आश्चर्यचकित रह गई। पूछ बैठी- ''तुम तो भूखे थे फिर रोटी उस कुत्ते को क्यों दे दी ?''*

क्या करता, वह मुझसे अधिक भूखा लगता था। मैं तो कहीं जाकर मांग सकता हूं। मगर वह कुत्ता किससे मांगता ? कौन देता ? आदमी ने कहा। अब यहां तक तुम्हारी समझ है, तो कहीं कोई काम करके खाने के लिए क्यों नहीं सोचता ? गृहिणी ने पूछा। ''रहम खाकर कोई भीख दे सकता है, मगर कोई काम नहीं देता। यदि कोई काम मिल ही जाता तो मेरी यह दशा क्यों होती ? मैं भीख क्यों मांगता ?'' उस आदमी ने कहा।

गुरु-शिष्य के अन्तर्संबंधों पर टिकी संस्कृति चेतना

आर्ष वाङ्मय में उपनिषदों को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। वेदों के ही ज्ञान भाग का आख्यान ये है। उपनिषद् शब्द का अर्थ है निकट बैठकर दिया गया ज्ञान। तात्विक विवेचन के विषयों पर किया गया रहस्य भरा प्रतिपादन जिस समय गुरु अपने पास शिष्य को बिठाकर समझाते थे, तब वह ज्ञान शास्त्रों में लिपिबंध होकर एक विलक्षण सम्पदा बन गया। जिज्ञासु शिष्य के तत्वज्ञान संबंधी जिज्ञासा का समाधान एक ऐसी गुरुसत्ता करती है जिसने स्वयं उसका अपने जीवन में साक्षात्कार कर लिया हो, हमारी संस्कृति की आदि परम्परा यही रही है।

गुरु-शिष्य परम्परा ही आदिकाल से ज्ञानसंपदा का संरक्षण कर उसे श्रुति के रुप में क्रमबद्ध करती आयी है। इसका वर्णन किये बिना साधना प्रसंग तथा संस्कृति का प्रकरण अधूरा रह जाता है। स्वयं भारत को जगदगुरु की उपमा इस कारण दी जाती रही है कि उसने विश्व-मानवता का न केवल मार्गदर्शन किया बल्कि ज्ञान के आदर्शों को जीवन में उतार कर औरों के लिए वह प्रेरणा स्रोत बना। गुरु व शिष्य के परस्पर महान संबंधों एवं समर्पण भाव द्वारा अपने अहंकार को गला कर ज्ञान प्राप्ति की महत्ता का विवरण शास्त्रों में स्थान-स्थान पर मिलता है। सुकरात व उनके शिष्य प्लेटो तथा प्लेटो के शिष्य अलक्षेन्द्र एवं गुरजिएफ व आस्पेन्स्की की परम्पराएं तो बाद के विकास की है, जैसा कि ऊपर कहा गया। आदिकाल से ही भारतवर्ष में यह परम्परा चली आयी है कि गुरु अपने ज्ञान द्वारा उचित पात्र समझे गये शिष्य पर पड़े अविद्या-अज्ञान के पर्दे को हटाएँ व उसका उँगली पकड़ कर मार्ग दर्शन करें।

गुरु कौन व कैसा हो, इस विषय में क्षति कहती है- '' विशारदं ब्रह्मनिष्ठं श्रोत्रियं गुरुकाश्रयेत्''

''श्रोत्रिय'' अर्थात् जो ज्ञान से श्रुतियों का शब्द ब्रह्म का ज्ञाता हो, उनका तत्व समझता हो, ''ब्रह्मनिष्ठ'' अर्थात् आचरण से श्रेष्ठ जैसा ब्रह्म में निवास करने वाला हो, परोक्ष साक्षात्कार जो कर चुका हो तथा ''विशारद'' अर्थात् जो अपने आश्रय में शिष्य को लेकर उस पर शक्तिपात करने को सामर्थ्य रखता हो, आद्य शंकराचार्य के शतश्लोकी के पहले श्लोक में सद्गुरु की बड़ी सुन्दर परिभाषा इस वृत्तांत में की है।

दृष्टांतों नैत्र दृष्टस्त्रिभुवनजठरे सद्गुरोर्ज्ञानदातः
स्पर्शश्चेत्तत्र कल्प्यः स नयति यदही
स्वर्णतामश्मसारम् ।
न स्पर्शत्वं तथापिश्रित चरणयुगे सद्गुरुः स्वीयशिष्ये
स्त्रीयं साम्यं विघत्ते भवति निरुपमस्तेन या
लौककोऽपि ॥

अर्थात् ''इस त्रिभुवन में ज्ञानदाता सद्गुरु के लिये देने योग्य कोई दृष्टांत ही नहीं दिखता। उन्हें पारसमणि की उपमा दें तो वह भी ठीक नहीं जंचती। कारण पारस लोहे को सोना तो बना देता है पर पारस नहीं बना पाता। परन्तु सद्गुरु चरण युगल का आश्रय करने वाले शिष्य को सद्गुरु निज साम्य ही दे डालते है स्वयं अपने जैसा बना देते है। इसलिये सद्गुरु की कोई उपमा नहीं। संत ज्ञानेश्वर ने गीता की भावार्थ दीपिका में लिखा है कि ''यह दृष्टि (गुरु की दृष्टि) जिस पर धमकती है अथवा यह करार बिन्दु जिसे स्पर्श करता है वह होने की तो चाहे जीव हो, पर बराबरी करता है महेश्वर-श्रीशंकर की।'' ज्ञानेश्वरी में उनने योगीराज श्री कृष्ण द्वारा अपने शिष्य अर्जुन पर बरसायी। अनुकम्पा का वर्णन करते हुए गुरु का स्तर स्वरुप बता दिया है। वे लिखते है ''तब शरणागत भक्त शिरोमणि अर्जुन को उन्होंने अपना सुवर्ण कंकण विभूषित दक्षिण बाहु फैलाकर अपने हृदय से लगा लिया। हृदय-हृदय एक हो गये इस हृदय में जो था, वह उस हृदय में डाल दिया। द्वैत का नाता तोड़े बिना अर्जुन को अपने जैसा बना लिया।''

वस्तुतः गुरु-शिष्य संबंध इसी स्तर के आध्यात्मिक होते हैं जिनमें उच्च स्तरीय आदान-प्रदान होता है। शिष्य अपनी सत्ता को-अहं को गुरु के चरणों में समर्पित करता है। गुरु शक्तिपात द्वारा अपनी अनुकम्पा द्वारा उसे ज्ञान प्राप्ति का अधिकारी बनाता व जीवन मुक्त कर देता है। संबंधों में शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, आत्मिक चार प्रकार के वर्णित किये गये है। लोकाचार में प्रथम तीन प्रकार के संबंध तो कहीं भी किसी से भी स्थापित हो सकते हैं किन्तु सिर्फ गुरु से ही आत्मिक स्तर के संबंधों की संभावना है।

गुरु के विषय में ऊपर बताया गया। शिष्य के संबंध में कहा गया है ''समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठ'' हाथ में समिधा लेकर शिष्ट विनम्रभाव से श्रोत्रिय-ब्रह्मनिष्ठ गुरु के पास जाए। समिधा क्यों ? समिधा अग्नि पकड़ती है। गुरु ज्ञान की ज्योति के रुप में जीती-जागती ज्वाला है। यदि साधक समिधा

जैसी पात्राता लेकर जायेगा व स्वयं को उस अग्नि को स्पर्श कर देगा तो ज्ञान की अग्नि में तपकर वह भी ज्ञान का प्रकाश विस्तार करने वाले तंत्र के रुप में विकसित होगा। भीगी लकड़ी अग्नि में जाकर तो धुंआ ही देती है। ऐसा शिष्य न हो। जिसने अपनी अहंकार रुपी सीलन मिटा दी स्वयं को तप द्वारा सुखा लिया हो, वही समिधा बन सकता है।

आध्यात्मिक प्रगति के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति का यह मानना है कि बिना गुरु के अवलम्बन के यह संभव ही नहीं है। आत्मिक प्रगति का क्षेत्र एक जीवन समर-महाभारत के सदृश है। इसे एक प्रकार से प्रवाह विरुद्ध उपक्रम कहना चाहिये। जनसमुदाय की प्रवृत्तियां विचारणाएँ, इच्छाएं, आदतें, गतिविधियाँ प्रायः पेट-प्रजनन में निरत स्वार्थी कुसंस्कारी जैसी ही होती है। इस प्रवाह में सामान्य स्तर के व्यक्तित्व नदी में बढ़नेवाले पत्ते, आँधी में उड़नेवाले तिनके सदृश होते हैं। जैसा अधिकांश सोचते व करते हैं, उसी का अनुकरण सामान्य स्तर के लोगों से भी बन पड़ता है। आत्मिक प्रगति के लिए भिन्न स्तर का चिंतन क्रम अपनाना पड़ता है। इसके लिये कोई न कोई अवलम्बन चाहिये। बिना किसी समर्थ आदर्शवादी व्यक्तित्व के साथ घनिष्टता स्थापित किये ऊपर चढ़ पाना संभव नहीं। बेल अपने बलबूते पर नहीं पनपती रह सकती है यूं ही धरती पर फैलकर वह अनगढ़ बन जाती है किन्तु समर्थ वृक्ष का सहारा मिलते ही वह चढ़ती चली जाती है व आकाश घूमने लगती है। ऊँचा उठना एक बड़ा काम है। गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध जाने के लिये बड़ी ताकत की जरुरत पड़ती है। समर्थ गुरु का वरण या गुरु दीक्षा इसी कारण जरुरी बताई गई है। बिना किसी अवलम्बन के अपने बलबूते, पूर्व संचित संस्कारों के सहारे कोई ऊंचा उठ सके, यह असंभव तो नहीं पर अपवाद रुप ही देखा या कहा जाएगा। सामान्यतः आत्मिक उत्कर्ष का प्रसंग आते ही यह कहा जाता है कि उसके लिये ऐसे समर्थ व्यक्ति के साथ घनिष्ठता स्थापित की जाय तो उस प्रयोजन को सम्पन्न कर पाने में सक्षम हो, स्वयं उतना तप जिसने किया हो। यही गुरु चरण है। गुरु चरण की महिमा शास्त्रों में इतनी बतायी गई है कि बिना गुरु वाले व्यक्ति को ''निगुरा'' नामक निंदक उपाधि देकर अपमानित किया गया है।

गुरु मानवी चेतना का मर्मज्ञ माना गया है। वह शिष्य की चेतना में उलट फेर करने में समर्थ होता है। गुरु का हर आघात शिष्य के अहंकार पर होता है तथा वह यह प्रयास करता है कि किसी भी प्रकार से डॉट से, पुचकार से, विभिन्न शिक्षणों द्वारा वह अपने समर्पित शिष्य के अहंकार को धोकर साफ कर उसे निर्मल बना दे। प्रयास दोनों ओर से होता है तो यह कार्य जल्दी हो जाता है नहीं तो कई बार अधीरतावश शिष्य गुरु को समझ पाने में असमर्थ हो भाग खड़े होते हैं। हमारी आध्यात्मिक परम्परा गुरु प्रधान ही रही है। इसी परम्परा के कारण साधना पद्धतियों भी सफल सिद्ध हुई। सदा से गुरुजनों ने अपने जीवन में प्रयोग किया है तथा सफल पाने पर सुपात्र साधकों के ऊपर रिसर्च लेबोरेट्री की तरह परीक्षण किया है। उन्हें श्रेष्ठ देवमानव बनाने का प्रयास किया है। गुरु-शिष्य परंपरा ने ही इतने नररत्न इस देश को दिये हैं जिससे हम सब स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं।अनेक नाम है जो इस परम्परा में देव संस्कृति के पन्नों में पढ़े जा सकते हैं न जिनका जीवन उनके समर्पण भाव से लेकर गुरु के आत्मभाव के प्रसंग अपने आप में अद्भूत है। युगों-युगों तक ये प्रसंग आत्मिक प्रगति के इच्छुक साधकों को प्रेरणा देते रहेंगे, ऐसी महात्म्य भरी यह पुनीत परम्परा रही है।

भारतीय संस्कृति में श्रद्धा, जो शिष्य में गुरु के प्रति होनी चाहिये की बड़ी तर्क सम्मत वैज्ञानिक व्याख्या स्थान-स्थान पर की गयी है। सामान्यतया व्यक्ति का मन बिखराव लिए होता है। चित्त वृत्तियां बहिरंग में रुचि लेने के कारण बिखारी होती है। बिखराव को समेट कर मन को समग्र बना लेना महानता की ओर मोड़लेना ही श्रद्धा है। इस मन को ''इन्टीग्रेटेड माइण्ड'' कहा गया है। इतना होने पर संशय नहीं रहता, पूर्ण समर्पण-विसर्जन-विलय-तादात्मय हो जाता है। समग्रता का गुरु की चेतना में गीताकार के वचनानुसार विलय कर दिया जाय तो समर्पण पूरा माना जाता है। गीतकार ने कहा हैः-

मध्ये य मन आघात्व मयि बुद्धि निवेशय।
निवसिव्यसि मय्येव, अत ऊर्ध्व न संशयः ॥ 8/12

''हे अर्जुन ! तू मुझ में मन को लगा और मुझ में ही बुद्धि को लगा। इसके उपरांत तू मुझ में ही निवास करेगा, इसमें कुछ संशय नहीं है।'' किसी को गुरु से कितना मिला, किसी को अधिक, किसी को कम क्यों मिला, इसके मूल में यही कारण है कि जिसने गुरुसत्ता के आदर्शों में मन व वृद्धि को लगा दिया, संशय मन से निकाल दिया, श्रेष्ठता के प्रति समर्पण कर दिया, उसका सारा जीवन ही बदल गया। श्री अरविन्द कहते थे- ''डू नथिंग ट्राइ टू थिंक नथिंग विह्च इज अनवर्थी टू डिवाइन'' (जो देवत्वधारी सत्ता के योग्य न हो, ऐसा न सोचो, न करो)। श्री रामकृष्ण परमहंस ने सतत् यही कहा है

कि कामिनी काँचन से दूर परमात्मा सत्ता में मन-बुद्धि को लगाने पर स्वयं ईश्वर गुरु के रुप में आकर मार्गदर्शन करते हैं। वे कहा करते थे कि आज की स्थिति बड़ी विषम है। चारों ओर नकली गुरु है। उनकी उपमा श्री रामकृष्ण ने अपनी शैली में पनेले साँप से दी है जो मेंढ़क को निगलने की कोशिश में मुंह में तो उसे जकड़ चुका है पर वह भी परेशान है तथा मेंढ़क भी। साँप छोड़ सकता नहीं, मेंढ़क निगला जा सकता नहीं। आज गुरु व शिष्य दोनों की स्थिति ऐसी है।

वस्तुतः समर्पण एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति का रुपान्तरण कर देती है व जब श्रेष्ठ गुरु के प्रति यह समर्पण होता है तो व्यक्ति तत्सम हो जाता है। तप संसिद्धि मिल सकती है, किन्तु भगवान नहीं मिल सकता, किन्तु समर्पण से गुरु व भगवान दोनों एक साथ मिल जाते हैं। श्री रामकृष्ण कहते थे- सामान्य गुरु कान फूंकते है, अवतारी महापुरुष-सद्गुरु प्राण फूंकते है, ऐसे सद्गुरु का स्पर्श व कृपा दृष्टि ही पर्याप्त है, परम पूज्य गुरुदेव एक ऐसी ही सत्ता के रुप में हम सबके बीच आए। अनेकों व्यक्तियों ने उनका स्नेह पाया, समीप्य पाया, पास बैठाकर मार्गदर्शन पाया, अनेक प्रकार से उनकी सेवा करने का उन्हें अवसर मिला पर जो उनके दक्षिणा मूर्ति स्वरुप को समझा कर उनके निर्देशों के अनुरुप चलता रहा, उसे यह सब न भी मिला हो तो भी आत्मिक प्रगति पथ के पथ पर चल पड़ने का मार्गदर्शन मिला। ऐसे व्यक्ति साधना क्षेत्र में ऊँचाईयों को प्राप्त हुए। गुरुजी कहे बिना कोई विकल्प प्रस्तुत किये, बिना कोई तर्क दिये उसे करना ही साधना है। गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं-

गुरु के वचन प्रतीत न जेहिं,
सपनेहूँ सुख सुलभ न तेहिं।

वास्तविकता यही है कि समर्पण भाव से गुरु के निर्देशों का परिपालन करने वालों की जो भर कर गुरु के अनुदान मिले हैं। श्रद्धा की परिपक्वता समर्पण की पूर्णता शिष्य में अनन्त संभावनाओं के द्वार खोल देती है। उसके सामने देहधारी गुरु की चेतना की रहस्यमयी परतें खुलने लगती है। इनका ठीक-ठीक खुलना शास्त्रीय भाषा में उनके गुरु के दक्षिणा मूर्ति रुप का प्राकट्य है। जो यह रुप समझ सका, परावाणी को सुन सका उसे स्थुल का अभाव भी अभाव नहीं प्रतीत होता। गुरु का यह रुप जान लेने पर मौन व्याख्यान शुरु हो जाती है। हृदय में निःशब्द शक्ति का प्रस्फुटन होने लगता है। प्रश्न जन्म लेने से पूर्व ही उत्तरित हो जाते हैं। महाशून्य से उत्सर्जित चित्तशक्ति का निर्झर खुल जाता है। स्वामी विवेकानंद की दो शिष्याएं थी एक नोबुल (निवेदिता) दूसरी क्रिस्टीन (कृष्ण प्रिया)! स्वामीजी से निवेदिता तो तरह तरह के सवाल पूछती परन्तु कृष्ण प्रिया चुप रहती। स्वामीजी ने उनसे पूछा- ''तेरे मन में जिज्ञासाएँ नहीं उठती ?'' उन्होंने कहा- ''उठती है पर आपके जाज्वल्यमान रुप के समक्ष वे बिगलित हो जाती है- (Everything melts before that eternal radiance) ''मेरी जिज्ञासा ओं का मुझे अंतःकरण में समाधान मिल जाता है।'' लगभग यही स्थिति हम सबकी हो, यदि हम अपनी गुरु सत्ता के शाश्वत रुप, उनके दक्षिणामूर्ति स्वरुप को समझ उनके आश्वासन व हर गुरुसत्ता के संस्कृति सत्य को ध्यान में रखें कि- ''जब तक एक भी शिष्य पूर्णता प्राप्ति से वंचित है, गुरु की चेतना का विसर्जन परमात्मा में नहीं हो सकता।'' सूक्ष्म शरीरधारी यह सत्ता अपने शिष्यों आदर्शोन्मुख संस्कृति साधकों की मुक्ति हेतु सतत् प्रयत्नशील है व रहेगी जब तक कि अंतिम व्यक्ति भी इस पर मुक्त नहीं हो जाता।

✲ समझदारी का परिचय जिह्वा से नहीं जीवन पद्धति से देना चाहिये। महान व्यक्तियों की जबान कम बोलती है, जीवन ज्यादा बोलता है।

अच्छी नीयत

किसी भी कार्य का शुभ या अशुभ होना उसके उद्देश्य पर निर्भर होता है कि वह कार्य किस हेतु से किया जा रहा है। अच्छे हेतु से लोकहित के अनुकूल किया गया बुरा कार्य भी बुरा नहीं होता और बुरे हेतु से लोकहित के प्रतिकूल किया गया अच्छा कार्य भी अच्छा नहीं होता। गलत तरीके से किया गया अच्छा काम भी अच्छा फल नहीं देता और न अच्छे तरीके से किया गया गलत काम ही अच्छा फल देता है। हम क्षमा तो करें पर धर्म के कारण नहीं बल्कि अक्षमता के कारण करें, घर-संसार के भोग-विलास का त्याग करें पर संतोष के साथ न करें, जीवन के दुःख और अभाव तो सहें पर गरीबों के कारण सहें तप की भावना से नहीं, हम ध्यान तो करें पर ईश्वर का नहीं बल्कि संसार के ऐश्वर्य का ध्यान करें, दान-पुण्य भी करें तो यश या स्वर्ग-सुख की प्राप्ति के लिये करें, परोपकार व सेवा के उद्देश्य से नहीं तो हमारा ऐसा आचरण अच्छा होते हुए भी हमारे लिये अच्छे फल देनेवाला न होगा क्योंकि हमारी नीयत अच्छी न थी, कार्य का हेतु उचित न था। नीयत अच्छी होने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि बुरे काम करने का विचार तक नहीं आता करना तो दूर की बात है।

वर्ग पहेली क्रमांक-*322*

✽ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		3	■	4	5		6
7		■	8	9			■	
■	10	11	■		■	12	13	
14	■		15			■	16	
	■	■		■	■	17	■	
18	19	■	20	21			22	
23		24	■		■	25		■
	■	26	27	■	28	■	29	30
31				■	32			

बाएं से दाएं:-

1- भगवान आदिनाथ का प्रथम भव (4)
4- सुपार्श्व प्रभु का भदैनी तीर्थ इस शहर में स्थित है (4)
7- बीस विहरमानजी में से एक-अ---वीर्यस्वामी (2)
8- आंध्र में कृष्णा नदी के किनारे स्थित चिंतामणी पार्श्व प्रभु का तीर्थ---ती (4)
10- श्री केक राजा रिश्ते में भ.महावीर के--- होते थे (2)
12-खेलों में हा---होती रहती है (3)
16- कावेरी-नर्मदा नदी के एक तट पर ओंकारेश्वर तथा दूसरे तट पर जैन तीर्थ सिद्धव---ट स्थित है (2)
18-पंच परमेष्ठि के पांच रंगों से मिलकर बना है जैन--- (2)
20-चूली, गुजरात स्थित नूतन तीर्थ का नाम है---धाम (3,3)
23-जय जयकारा, जय ज--- स्वामी देना साथ हमारा (1,2)
25-मठ का प्रधान कहलाता है मठा--- (2)
26-पार्श्वनाथ प्रभु के 108 तीर्थ में शामिल है सुखसागर---र्श्वनाथ (1,1)
29-प्रसिद्ध जैन तीर्थ बावनगजा स---ड़ा की मनोरम पहाड़ियों में स्थित है (2)
31-शिरपुर, महाराष्ट्र में बिराजे है श्री अंत---नाथ भगवान (2,2)

वर्ग पहेली क्रमांक-321 का परिणाम

भ	द्रा	दे	वी	■	ते	■	ओ	ड़
टे	■	व	■	वा	रा	ण	सी	■
वा	मा	■	वि	मा	■	मं	■	हा
■	ण्ड	■	हा	दे	■	दि	व	स
अ	व	■	र	वी	र	■	र्ध	न
न	ग	जा	■	के	मु	■	मा	■
न्त	■	ह	■	सु	नि	■	न	वा
■	वी	रा	य	त	■	ज	■	न
सा	णा	■	क्ष	■	न	य	सा	र

ऊपर से नीचे:-

1- गो-धन,गज-धन,वाजि-धन और रतन-धन खान,जब आवे संतोष---सब धन धूरि समान (2)
2- चौदहवें तीर्थकर है श्री अ---थ स्वामी (3)
3- अड़स---क्षर एना जानु,अड़सठ तीरथ सार (1,1)
4- दुख में घ---ओं नाही मेरे साथी, ये जीवन में मानव का सिंगार है (2) -फिल्म महासती मैनासुंदरी का एक गीत
5- सम्प्रति राजा द्वारा प्रतिष्ठित धार जिले का भ. आदिनाथ का तीर्थ बद--- (3)
6- बारह चक्रवर्ती में से एक--- (6)
9- अठारहवें तीर्थकर की माता का नाम--- वी (3)
11-नंदीवर्धन--- है महावीर प्रभु के बड़े भाई का (2)
13-शतरंज के खेल में होता है यह मोहराः व ---(2)
14-पालीताना के निकट तलाजा में स्थित भ. सुमतिनाथजी का तीर्थ--- (6)
15-बीमार या अस्वस्थ होने की अवस्था--- (3)
17-राजा सुग्रीवजी के तीर्थंकर पुत्र---नाथजी (3)
19-एक चक्रवर्ती का नाम---सेन (2)
21-पार्श्व प्रभु के 108 तीर्थ में शामिल है श्री मनो---न पार्श्वनाथ (2)
22-भगवान महावीर के दस मुख्य श्रावकों में से एक है म--- (4)
24- कालुपुर अहमदाबाद में बिराजे है श्री ह्रीं---र्श्वनाथ (2,1)
27-मरुभूति एक भव था---नाथ भगवान का (2)
28- कोका नो पाड़ो, पाटण में बिराजे है श्री---पार्श्वनाथ (2)
30-नदी-नाले को पार करने का मार्ग, सेतु (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-322

❋ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

नीचे दिये गये पात्र मृत्यु पाकर कौन सी गति में गये।

1- जीरण सेठ, 2- श्रीमद् राजचन्द्र जी, 3- पडिमा धारक कार्तिक सेठ, 4- माणेक शाह, 5- समराशि, 6- सुदर्शन सेठ, 7- धनुधारी अर्जुन, 8- बलसाणा तीर्थपति विमलनाथजी, 9- जीवानंद वैद्यराज

❋ सर्वनाशः- वृद्धावस्था से बल और सौन्दर्य का नाश होता है, लालसा से धैर्य का नाश होता है, मृत्यु से शरीर का नाश होता है, द्वेषभाव से प्रीति का और कामावेग से लज्जा का नाश होता है। कुसंगति से चरित्र का नाश होता है, क्रोध से विवेक का नाश होता है और अभिमान से तो सर्वनाश ही हो जाता है।

नोटः- वर्गपहेली क्रमांक-321 में बांये से दांये-4 का सही उत्तर ओड़ है न कि ओर। एक ही पाठक ने सही उत्तर लिखा है परन्तु आपकी मेहनत को ध्यान में रख आपके नाम प्रकाशित कर रहे है।

इसी प्रकार ज्ञान गंगोत्री में 6 नम्बर पर माँ सरस्वती का बजाक्षर ऐं है न कि क्लीं है।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)

खाताः-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं. 030001000331

IFSC Code ICIC0000300

वर्गपहेली क्रमांक-321 के परिणाम

विजेताः-

1- रेशम बहन कोठारी, नीमच, (म.प्र.) - प्रथम

इनके भी उत्तर सही थेः-

श्रीमती प्रभा जैन, देवास, श्रीमती कुसुम गौतम जैन, आगर, श्रीमती मीना जैन, देवास, श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास, प्रिय दर्शना चौधरी, देवास, हंसा वैभव जैन, देवास, सुधा लोढ़ा, उज्जैन, श्रीमती विद्या संघव, बदनावर, श्रीमती स्नेहलता जैन, मंदसौर, श्रीमती सरोज तल्लेरा, इन्दौर।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-321 के परिणाम

विजेताः-

1- सौ. मंगला बेन शहा, बालापुर (महा.) - प्रथम

सही उत्तर -

1- श्री, 2- क्ष, 3- दो, 4- ख, 5- भू, 6- ऐं 7- घी, 8-जी, 9- स्त्री, 10-सा, 11- धो।

❋ आप किसी काम को हाथ में लेते हैं तो उसे करने का निश्चय कीजिए और करके खत्म कीजिये, बीच में लटकाकर मत रखिए। यदि कार्य समय पर न किया जाए तो काल उस कार्य के फल को चाट जाता है।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-3-2022 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसुरीजी को 50वां जन्मदिन पर आराधक आयंबिल की गिफ्ट भेंट करेंगे

✻ मालवा राज के अनेक श्रीसंघों में 50 दिन की सांकली आयंबिल हो रहे है। ✻ जन्मदिन का कार्यक्रम उज्जैन में मनाने की तैयारी। ✻ श्री नागेश्वर में उपधान माल और महामांगलिक 3 मार्च को होगी। ✻ चैत्र ओली आराधना उज्जैन में होगी। ✻ पूज्यपाद गुरुदेव का 79 वां जन्मदिन 21 मार्च को मनाया जायेगा। ✻ माल के बाद मालवा के संघों में विचरण होगा। ✻ अप्रेल के प्रथम सप्ताह में उज्जैन आगमन होगा। ✻ उज्जैन से राजगढ़ में प्रतिष्ठा हेतु विहार होगा। ✻ मालवा सम्मेलन 19-20 फरवरी को हुआ। ✻ श्री नमिऊण पार्श्वनाथ प्रभु का महाजाप चल रहा है। ✻ चार्तुमास मुंबई या मालवा में शीघ्र तैय होगा।

नागेश्वर- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यभगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के गुरु कुल के रत्न पूज्यश्री के नाम को रोशन करने वाले अपने युवा शिष्यों मंडली के साथ जिन शासन को शोभायमान करने वाले गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवाहृदय सम्राट, महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म.सा., प.पू. मुनि श्रीतीर्थरत्न सागरजी म. सा., प.पू. मुनि श्री उदयरत्नसागरजी म.सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ज्वलरत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीगंभीररत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीरम्य रत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीलब्धि रत्न सागरजी म. सा.आदि ठाणा के दर्शन वंदन के लिये श्री संघों का मंगल आगमन लगातार नागेश्वर तीर्थ में हो रहा है ।आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. की श्री नमिऊ ण पार्श्वनाथ प्रभु के महाजाप का चल रहे है। आपके चार्तुमास की विनंती मालवा के साथ महाराष्ट्रऔर गुजरात के अनेक श्री संघों के द्वारा की गई है। मुंबई के अनेक संघों की विनंती है साथ ही ठाना श्री संघ की भी जोरदार विनंती है। चार्तुमास के बारे में शीघ्र ही निर्णय लेकर एक बड़े कार्यक्रम में श्रीसंघों की उपस्थिति में उद्घोषणा की जायेगी ।मालवा श्रीसंध का सम्मेलन 19-20 फरवरी को हुआ। उपधान माल 3 मार्च के बाद तक श्री नागेश्वर तीर्थ में स्थिरता बनी रहना है इसके बाद बड़ा आयोजन पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा का 79 वां जन्म दिवस चैत्र वदी-3 दिनांक 21 मार्च 2022 को आ रहा है। आयोजन कहां होगा इसकी घोषणा भी श्री नागेश्वर तीर्थ में होगी इसके अलावा अन्य महत्वपूर्ण महोत्सव आयोजनों की घोषणा भी होगी। उपधान के दौरान आगामी कार्यक्रम के बारे में विस्तार से रुपरेखा बनेगी। आपका 50 वां जन्मदिन उज्जैन में चैत्र ओली के साथ मनाया जायेगा। मालवा और राजस्थान के साथ अन्य श्री संघों में जन्मदिन की अनुमोदनार्थ 26 फरवरी से 16 अप्रेल तक लगातार 50 दिन तक सांकली आयंबिल तपाराधना श्री संघों में चल रही है। इसके अलावा जन्मदिन पर अन्य अनेक कार्यक्रम भी होंगे।

✻ पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में राजगढ़ में जीर्णोद्धार कर नवनिर्मित हुए दादा श्री आदिश्वर प्रभु के भव्य जिनालय का प्रतिष्ठा महोत्सव मई माह में होगा उज्जैन में चैत्र नवपद ओली आराधना करवायेंगे साथ ही आपके जन्म का 50 वां महोत्सव का आयोजन उज्जैन में होगा।

अपूर्व मंगल गुरुकुल त्रिपरी मुनिश्री की निश्रा में डग से नागेश्वर का छ:रि पालित संघ का आयोजन होगा

✽ चार्तुमास मुबंई श्री संघ में होने की संभावना है।

पालीताना- पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार श्री नव-अपूर्व- अमर कृपापात्र बंधु त्रिपुटी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म. सा.आदि साधु-साध्वीवृंद निश्रा में में डग के श्री लाडकुंवरबहन धीगं परिवार के द्वारा डग से नागेश्वर महातीर्थ का छ रि पालित संघ का आयोजन हो रहा है। संघ का प्रयाण दिनांक 14 मार्च को को होगा तथा संघमाल 16 मार्च को दादा के दरबार में होगी।स्मरण रहे मुनिमंडल का आगाामी चार्तुमास मुबंई श्री संघ में होने की संभावना है।

श्री गिरनार महातीर्थ में 18 अभिषेक तथा दादा के जिनालय पर ध्वजारोहण का मंगल प्रसंग

जूनागढ़-परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय हेमवल्लभ सूरिजी म.सा. एवं जूनागढ़ में विराजमान पूज्य आचार्य भगवंत पदस्थ मुनि भगवंतों तथा अन्य पूज्य साधु साध्वीजी म.सा. श्री गिरनार महातीर्थ के मूलनायक परमात्मा श्री नेमिनाथ दादा, श्री आदिश्वर भगवान जिनालय श्री अमिजरा पार्श्वनाथ भगवान की देरी, श्रीवस्तुपाल तेजपाल, श्री संप्रतिराजा, श्री मेरकवसहि, श्री संग्रामसोनी श्री कुमारपाल के जिनबिम्ब तथा तलेटी के जिनालय स्थित जिनबिंब एवं पगलिये आदि के अट्ठारह अभिषेक वि.सं. 2078 (गुजराती) फाल्गुन-वद-तेरस चौदस, अमावस्या, बुधवार-गुरुवार-शुक्रवार 30-31 मार्च, 1 अप्रेल 2022 के दिनों में अट्ठारह अभिषेक एवं मूलनायक दादा के जिनालय की 893 वीं सालगिरह वि.सं.2078, वैशाख-सूद-पूनम, सोमवार, दिनांक 16-5-2022 के शुभ दिन में श्री नेमिनाथ दादा जिनालय के शिखर की ध्वजा, श्री आदिश्वर भगवान जिनालय, श्री अमिजरा पार्श्वनाथ भगवान की देरी तथा अंबिकादेवी की देरी पर ध्वजारोहण होने जा रहा है।

चौमुखजी भगवान की प्रतिष्ठा सम्पन्न

ईसवाल तीर्थ (राज.) - 2200 वर्ष प्राचीन श्री चिंतामणी आदिनाथ जिनालय के परिसर में श्री शत्रुंजय तीर्थ रचना, चौमुखजी भगवान, श्री गौतम स्वामीजी गणधार, पिंडवाड़ा रत्न आचार्यदेव श्री प्रेमसूरीजी म.सा.,मेवाड़ देशोद्धारक आचार्य श्री जितेन्द्रसूरीजी म.सा., 108 पार्श्वनाथ पट्ट, कवड्य आदि, मुख्य शिखोरपरि नूतन ध्वजदंडादि की प्रतिष्ठा दीक्षा दानेश्वरी आ.श्री गुणरत्नसूरीजी म.सा.के शिष्य सूरिमंत्र समाराधक आचार्य श्री रविरत्न सूरीश्वरजी म.सा., पंन्यास श्री वैराग्य-रत्नविजयजी म.सा., साध्वी श्री विरलरेखा श्रीजी आदि साधु-साध्वीजी भगवंतों की शुभ निश्रा में लघु शांतिस्त्राय पूजा सहित सम्पन्न हुई । प्रतिष्ठा महावद-5 दिनांक 23-1-2022 को हुई।

आचार्य पद प्रदान किया जायेगा

मुंबई- भुवनभानुसूरी समुदाय के गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा से पूज्य पंन्यास श्री जयेशरत्नविजयजी एवं पंन्यास श्री प्रेमसुन्दर विजयजी म.सा. को आचार्य पद पर आरुढ़ करने की उद्घोषणा श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन संघ घाटकोपर मुंबई से दिनांक 8 नवंबर को की गई। आचार्य पद दिनांक 24 अप्रेल को अहमदाबाद में प्रदान किया जायेगा।

चांदी की प्रतिमा का निर्माण हुआ

पालीताना- पूज्य आचार्य श्री पूर्णचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में कच्छ वागड़ धर्मशाला में दिनांक 3 फरवरी को प्रातः नव्वांणु यात्रा के आराधकों द्वारा चांदी की प्रतिमा का निर्माण करवाया गया।

श्री जीरावला में 5 वीं ध्वजारोहण

जीरावला- पूज्य आचार्य श्री रत्नशेखर सूरीश्वरजी म.सा., आचार्य श्री राजशेखर सूरीश्वरजी म.सा. एवं आचार्य श्री रत्नाकर सूरीश्वरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीजी की निश्रा में महातीर्थ की 5 वीं ध्वजारोहण का महोत्सव त्रिदिवसीय आयोजन के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक 4 से 6 फरवरी तक हुए आयोजन के अंतर्गत श्री पार्श्व पंचकल्याणक, स्नात्र महोत्सव तथा दिनांक 6 फरवरी को ध्वजा की शोभायात्रा तथा ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ।

गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी ने भोपावर में द्वार का भूमि-खनन पूजन सम्पन्न करवाया

✻ दादा शांतिनाथ प्रभु जिनालय का ध्वजारोहण 5 मार्च को : 18 अभिषेक होगें। ✻ 150 साधु-साध्वी भगवंतों का आगमन। चार्तुमास उदयपुर में होगा। ✻ आगामी महामांगलिक श्री भोपावर तीर्थ में।

भोपावर-आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में आयोजित हुवे कोद से श्री भोपावर महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ का भोपावर पहुंचने के पूर्व मार्ग में श्री रमण भाई मुथा तथा अन्य ट्रस्ट मंडल के सदस्यों के साथ संघ की आगवानी की। 2 फरवरी को संघ की माल एवं महा मांगलिक सम्पन्न हुई इसके बाद आपने महातीर्थ में बननेवाले द्वार के लिये भूमि पूजन खानन मुहूर्त सम्पन्न कराया, प्रथम ढांकना भी हुआ। आगामी महा मांगलिक 3 मार्च के साथ दादा के दरबार में 18 अभिषेक का आयोजन होगा। 87000 हजार वर्ष प्राचीन श्री शांतिनाथ प्रभु का महातीर्थ अब विश्व ख्याति प्राप्त कर चुका है। 5 मार्च को दादा के जिनालय की वर्षगांठ पर ध्वजारोहण होगा।चैन्नई निवासी श्री तेजराज कोठारी परिवार ध्वजा के लाभार्थी है। इस अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेवश्री के मंदिर पर भी ध्वजा चढ़ाई जावेगी। श्री रमणभाई, श्री हितेशभाई आदि के साथ अनेक विशिष्ट अतिथियों का आगमन होगा। गणिवर्यश्री के द्वारा दिनांक 7 से 22 मार्च तक भोपावर महातीर्थ में पूर्ण से मौन रहते हुए श्री नवकार महामंत्र की 18 दिवसीय आराधना का संकल्प लिया गया है इसके साथ ही विगत दिनों मुनिपुंगश्री अक्षत रत्नसागरजी म.सा. को गणिवर्यश्री के सानिध्य में सूयडांग आगम अनुसार योगादोहन की क्रिया में प्रवेश करवाया गया। स्मरण रहे गणिवर्यश्री का आगामी चार्तुमास उदयपुर निश्चित हुआ है। आगे वर्षों के लिये भी आपके चार्तुमास की विनंतियां है। 8 अप्रेल से 17 अप्रेल तक नवपद ओलीजी की आराधना होगी। संपूर्ण लाभार्थी मोंटेक्सग्रुप वाले श्री रमणभाई है।

मुमुक्षु शिवांगी की प्रवज्या पंचान्हिका महोत्सव के साथ 17 फरवरी को सम्पन्न

ब्यावरा- पूज्य आचार्य भगवंत श्री पद्मभूषणरत्नसूरीश्वरजी एवं आचार्य देव श्री निपुणरत्नसूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में कुमारी शिवांगी का प्रवज्या पर्वोत्सव पंचान्हिका महोत्सव के साथ व्यावरा श्री संघ में दिनांक 13 से 17 फरवरी तक आयोजित हुआ। दिनांक 17 फरवरी को संयम जीवन पर प्रवचन भक्ति अनुष्ठान दिनांक 15 फरवरी को मात्-वित् वंदनांजलि, संयम उपकरण वंदनांजलि हुई। दिनांक 16 फरवरी को परमात्मा की स्नात्र पूजन और दीक्षार्थी का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित किया गया। दिनांक 17 फरवरी को दीक्षार्थी का रजोहरण ग्रहण महोत्सव पूज्य गुरु भगवंतों की अमृत निश्रा में शुभ लग्नांश वेला में सम्पन्न हुई।

भगवान आदिनाथ मंदिर की प्रतिष्ठा दिसंबर में

जयपुर- गलता गेट के बाहर जयपुर-दिल्ली हाइवे पर स्थित जयपुर खरतरगच्छ संघ द्वारा तथा मरुधर ज्योति प.पू.श्री मणिप्रभा श्रीजी म.सा. की प्रेरणा से निर्माणाधीन श्वेत संगमरमर के विशाल जैन मंदिर की प्रतिष्ठा दिसंबर वर्ष 2022 में होना निश्चित हुआ है, प्रतिष्ठा महोत्सव में खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.के अतिरिक्त खरतरगच्छ संघा के अधिकांश साधु-साध्वियों के पधारने की पूर्ण संभावना है,

आचार्यश्री का चार्तुमास शिवपुरी में

शिवपुरी- शास्त्र विशारद प.पू. जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मसूरीजी म. सा. की परम्परा के गुरुदेव श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. के आजीवन चरणोपासक आचार्य श्री कुलचंद्रसूरीजी म.सा. पंन्यास प्रवर श्री कुलदर्शन विजयजी म. आदि ठाणा का सन् 2022 का चार्तुमास शिवपुरी (म.प्र.) में होना निश्चित हुआ है। स्मरण रहे सन् 2022 में श्री धर्म-सूरीश्वरजी म.सा.की 100 वीं पुण्यतिथि आ रही है।100 वीं पुण्यतिथि पू.आ. श्री कुलचंद्रसूरीजी (के.सी.म.) की निश्रा में धूमधाम से मनाई जाये तथा आपके चार्तुमास से विजय धर्मसूरि समाधि मंदिर का विकास तथा कायाकल्प हो सके इसलिये आपका चार्तुमास शिवपुरी में होना चाहिये।

मुनिपुंग श्री पद्मकीर्तिसागरजी को 94 ओली का पारणा देपालपुर में हुआ

✻ उज्जैन में दादा श्रीमणिभद्रवीर के जन्मोत्सव की निश्रा रही। ✻ श्री शांतिनाथ प्रभु जिनालय का ध्वजारोहण हुआ। ✻ पूज्यश्री का रतलाम होकर अहमदाबाद की ओर विहार होगा।✻ चार्तुमास अहमदाबाद नरोड़ा में।

उज्जैन- भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा ने उज्जैन से देपालपुर की ओर दिनांक 7 फरवरी से विहार किया इसके पूर्व उज्जैन में आपकी निश्रा में दिनांक 5 फ रवरी को अधिष्ठायकदेव श्री माणिभद्र दादा का जन्मोत्सव धूमधाम के साथ भैरवगढ़ तीर्थ में मनाया गया। हवन महापूजन पढ़ाई गई। विभिन्न बोलियां भी हुई। पूज्यश्री की निश्रा में देपालपुर में मुनि श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. को 94 ओली का पारणा 19 फरवरी को जोरदार शासन प्रभावना के साथसम्पन्न हुआ। यहां श्री शांतिनाथ जिनालय का ध्वजारोहण भी आपकी निश्रा में हुआ। देपालपुर से आपश्री ने रतलाम की ओर विहार किया है। यहां कुछ दिनों तक स्थिरता के बाद आपश्री पेटलावद होते हुए अहमदाबाद की ओर विहार करेंगे यहां आपकी निश्रा में प्रतिष्ठा महोत्सव होगा। **आपश्री का चार्तुमास अहमदाबाद नरोड़ा में निश्चित हुआ है।**

चैन्नई में जैनाचार्य श्री तीर्थभद्रसूरीजी की निश्रा म11 दीक्षा एक साथ हुई

चैन्नई- आचार्य भगवंत श्री तीर्थ भद्रसूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में उनके सुशिष्य मुनिप्रवर श्री तीर्थरुचिविजयजी म.सा. गणी और पंन्यास पद से विभूषित किया गया। पूज्यश्री की निश्रा में 11 मुमुक्षुओं की एक साथ दीक्षा का मुर्हूत 17 फरवरी 2022 दिया गया है। दीक्षा श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ वेपेरी चैन्नई के तत्वावधान में होगी। पूज्यश्री के आगामी चार्तुमास की जय श्री विजयवाड़ा श्री संघ की उपस्थिति में बोली गई। **आपका आगामी चार्तुमास विजयवाड़ा में होगा।**

राष्ट्र संत की निश्रा में संघ

अहमदाबाद-जैनाचार्यश्री कैलाश सागर सूरीजी महाराज के समुदायवर्तीय जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्री पद्मसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की पावन निश्रा में मीराम्बिका अहमदाबाद से श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ दिनांक 24 फरवरी को प्रस्थान कर दिनांक 3 मार्च को श्री शंखेश्वर महातीर्थ पहुंचेगा, दिनांक 4 मार्च को संघ माल होगी।

पूज्यपाद गच्छाधि पति आचार्य देवेश श्री राजयशसूरीजी महाराज के कार्यक्रम

✻ फागण सुद-3 दिनांक 5 मार्च श्री स्त्रंभन तीर्थ खंभात।✻ धणाय तीर्थ में पोष दशमी अष्टम आराधना 28 से 30 दिसंबर।✻ जीवनधारा वृद्धाश्रम का उद्घाटन 15 जनवरी 2022।✻ दिनांक 4 फरवरी गच्छाधिपति पद की प्रथम वार्षिकी।✻ दिनांक 5 फरवरी मोडासा 67 जिनालय तीर्थ का भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव।✻ आगामी चार्तुमास पूज्यश्री एवं बहन महाराज आंबावाड़ी-अहमदाबाद (गुज.)✻ हैदराबाद टी-19 जिनालय के 5 जिनबिंब अंजन प्रतिष्ठा अरिहंत नगर अहमदाबाद (गुज.)।

श्री सिद्ध गिरीराज में प्रवज्या महोत्सव

पालीताना- पूज्य आचार्य भगवंत श्री रविदेव सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में श्री सिद्धाचल श्रुत तीर्थ में 12 से 14 फरवरी तक प्रवज्या महोत्सव का आयोजन हुआ। दीक्षार्थी देवीबहन, अल्पेशभाई का वर्षीदान वरघोड़ा 12 फरवरी को आयोजित किया गया। दिनांक 13 फरवरी को श्री कल्याण मंदिर महापूजन पढ़ाई गई एवं दिनांक 14 फरवरी को शुभ लग्नांश बेला में पूज्यश्री की निश्रा में दीक्षा सम्पन्न हुई इसके पूर्व अहमदाबाद गृह नगर में भी त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन दिनांक 5 से 7 फरवरी तक हुआ।

साध्वीवर्या श्री भव्यदर्शना श्रीजी म.सा. को 100 वी ओली का पारणा 11 मार्च को

शंखेश्वर- सागर समुदाय में एक बार फिर आयंबिल तपाराधना का डंका बजा। सागर समुदाय को गौरव प्रदान करनेवाली महातपाराधिका साध्वी श्री प्रशमप्रज्ञश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी दिव्यदर्शनाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री भव्यदर्शना श्रीजी म.सा. 99 वीं ओलीजी चाणस्मा तीर्थ में चार्तुमास में पूर्ण की। आपका पारणा यहां दिनांक 24 अक्टूबर को हुआ था एवं 100 वीं ओली आरंभ की। आपको 100 वीं ओली का पारणा श्री शंखेश्वर महातीर्थ में अष्टान्हिका महोत्सव के साथ होगा। महोत्सव का शुभारंभ दिनांक 4 मार्च को होगा एवं पारणा दिनांक11 मार्च को होगा। सागर समुदाय के उपाध्याय श्री वैराग्य रत्न सागरजी म.सा.ने हरिद्वार में153-154 ओली संलग्न, स्मितदर्शना श्रीजी ने 52 वीं ओली पूर्ण की है।

जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी जीरावला से वागड़ होते हुए उज्जैन की ओर विहार करेगें

✻ पादरु में महामांगलिक हुई।

उदयपुर- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरी जी म.सा. के तीसरे सुशिष्य आचार्य भगवंत वागड़ विभूषण प.पू. आचार्य श्रीमृदुरत्नसागर सूरीजी म.सा. .मुनिश्री पवित्ररत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणाने श्री जीरावला पार्श्वनाथ तीर्थ से विहार कर वागड क्षेत्र में पहुंचे है यहां आपकी स्थिरता दिनांक 20जनवरी तक रही वहां के विभिन्न श्रीसंघों में आपको विहार कर शासन प्रभावना की। छोटीबोडीगामा में 17 से 19 फरवरी तक आपने स्थिरता की यहां आपका 58 वां जन्म दिवस श्री संघों में बड़े उत्साह से मनाया गया। दिनांक 17 फरवरी को श्री नाकोड़ा भैरव की महापूजन तथा हवन का आयोजन हुआ। आपकी इस क्षेत्र में प्रतिवर्ष अगवानी से धर्म जाग्रति बनी हुई है। चैत्री ओलीजी आराधना उज्जैन तीर्थ में होने की संभावना है।चार्तुमास गुजरात में होने की संभावना है। मुनिश्री मोक्ष रत्न सागरजी म.सा. को 96 वां ओली चल रही है।

श्री मांडवगढ़ में ध्वजारोहण हुआ

मांडव- सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री भव्यपूर्णा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में दिनांक 12 फरवरी को श्री मांडवगढ़ महातीर्थ में दादा श्री सुपार्श्वनाथ प्रभु के भव्य शिखर पर 35 वीं ध्वजारोहण का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई।

उपधान तपाराधना

चैन्नई- सभर साधना पथ उपधान का आयोजन पू.आचार्य श्री मेघदर्शनासूरीजी की निश्रा में प्रवेश दिनांक 21 अप्रेल तथा मालारोपण दिनांक 8 जून को होगी। श्री चन्द्रप्रभ जैन श्वेतांबर सेवा मंडल ट्रस्ट दक्षिण पावापुरी तीर्थ एयरपोर्ट मंदिर पल्लावरम् में उपधान होगा।

मुनि भगवंतों का श्री शंखेश्वर तीर्थ की ओर विहार

तारंगा- पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के गुरुकुल के दो रत्न मुनिपुंग 96 ओली आराधक श्री मोक्षरत्नसागरजी म.सा. एवं मुनिश्री अर्हमरत्नसागरजी म.सा. का विहार श्री शंखेश्वर तीर्थ की ओर हो रहा है। आप श्री शंखेश्वर तीर्थ में पूज्य साध्वीवर्या श्री भव्यदर्शना श्रीजी का 100 वीं ओली का पारणा 11 मार्च को होना है, इसमें निश्रा प्रदान करेंगे।

खुली पुस्तक प्रतियोगिता

उज्जैन- पू.आचार्य श्री जितरत्न सागरसूरीजी द्वारा लिखित पुस्तक पर ''खुली पुस्तक प्रतियोगिता'' का आयोजन हो रहा है। रत्नाकार पच्चीसी नाम की पुस्तक के लिये फीस की अंतिम तिथि 30 मई है। विजेता को अनेक पुरस्कार किये जायेंगे।

गुरु गौतमस्वामी के गुणयाजी तीर्थ का जीर्णोद्धार

गुणयाजी- श्री गौतमस्वामीजी महाराज की केवलज्ञान भूमि गुणयाजी तीर्थ का आमूल जीर्णोद्धार के लिये पूज्य साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी के सानिध्य में दिनांक 11 फरवरी को भूमि पूजन तथा खनन मुर्हूत किया गया। लाभार्थी श्रीमती पनिदेवी मोहनलालजी मुथा सोनवाड़िया परिवार, चैन्नई तथा श्रीमती शांतिदेवी पुखराजजी गुलेच्छा परिवार बैंगलुर थे।

कालधर्म....

✻ सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री मोहजिताश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा. (69) दीक्षा पर्याय 49 का दिनांक 3 फरवरी को सूरत गोपीपुरा लीमड़ी उपाश्रय में कालधर्म हुआ।

उपधान नव्वांणु यात्रा का समापन

पालीताना- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जगतचंद्रसूरीजी, श्री कुलचंद्र सूरीजी, श्री अभयचंद्र सूरीजी, श्री संयमरत्नसूरीजी, श्री हीरचंद्रसूरीजी, श्री रश्मिराजसूरीजी, श्री जिनेशरत्न सूरीजी एवं श्री हेमवल्लभसूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में श्रमण-श्रमणी वृंद की निश्रा में गज भवन में उपधान तप मालारोपण विधान 10 फरवरी 2022 को हुआ। नव्वांणु यात्रा का समापन भी 10 फरवरी को हुआ। इसके साथ ही त्रिदिवसीय छःरिपालित संघ यात्रा तथा अंजन प्रतिष्ठा के भी आयोजन हुवे।

पू. जैनाचार्य श्री जयानंदसूरीजी की निश्रा में श्री शंखेश्वर तीर्थ- दीक्षा तीर्थ बना

शंखेश्वर- श्री शंखेश्वर महातीर्थ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जयानंद सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में दिनांक 23 जनवरी को तीन तथा दिनांक 26 जनवरी को 17 प्रवज्या हुई दिनांक 27 जनवरी को बड़ी दीक्षा सम्पन्न हुई साथ ही श्रावक से श्रवण बनने की धर्माराधना उपधान तप का आगाज दिनांक 30 जनवरी को हुआ था। श्रावक सम्मेलन का आयोजन आपकी निश्रा में दिनांक 5 फरवरी को हुआ, दिनांक 6 फरवरी को मुनिश्री दिव्यानंद विजयजी को उपाध्याय पद पर आरुढ़ किया गया।विविध आयोजनों के साथ दिनांक 9 फरवरी को अंजनशलाका भी हुई। दिनांक 17 फरवरी को बड़ी दीक्षा सम्पन्न हुई ।आयोजन में बड़ी संख्या में राजस्थान के साथ देशभर के धर्मिष्ठों की उपलब्धि रही।

श्री सिद्धाचल महातीर्थ में नव्वांणु एवं छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होगा

पालीताना- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जगतचंदसूरीजी म.सा. के सुशिष्यआचार्य श्री अभयचंद्रसूरीजी म.सा.आदि ठाणा-50 की अमृत निश्रा में यहां नव्वांणु यात्रा एवं छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। नव्वांणु यात्रा 16 अप्रेल 2022 से आरंभ होगी। 22 मई को छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होगा। 26 मई को नव्वांणु यात्रा की माल का आयोजन किया गया, यात्रा की पूर्णाहुति 14 जुन को होगी। यह आयोजन जैन संस्कार वाटिका हैदराबाद के द्वारा हो रहा है।

सुमेरपुर में शाश्वती चैत्र ओली का आयोजन

सुमेरपुर- श्री वल्लभ समुदाय के आचार्य भगवंत श्री चिदानंद सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में शाश्वती चैत्र ओली का आयोजन होने जा रहा है। उत्तर पारणा दिनांक 7 अप्रेल को होने के साथ दिनांक 8 से 16 अप्रेल तक ओली आराधना होगी। पारणा 17 अप्रेल को होगा। ओलीश्री अभिनव महावीर घास वर्धमान जैन बोर्डिंग हाउस छात्रावास में होगा।

चार्तुमास.... चार्तुमास....

✻ **अहमदाबाद-** पू.पंन्यास हंसबोधि विजयजी म.सा.आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास सेटेलाईट श्री प्रेरणा तीर्थ संघ अहमदाबाद में निश्चित हुआ है।

✻ **सूरत-** आगमोद्धारक श्री सागर समुदाय के आचार्य भगवंत वर्धमान तपोनिधि श्री नयचंदसागर सूरीजी म.सा.का आगामी चार्तुमास ऊंकार सूरी आराधना भवन, पाल-सूरत में निश्चित हुआ है।

✻ **जयपुर-** परम पूज्य खतर गच्छाधिपति आचार्य श्री जिन मणिप्रभ सूरीजी का 2022 का चार्तुमास जयपुर श्री संघ में होगा। श्री गिरनार तीर्थ में श्री संघ को पूज्यश्री ने स्वीकृति प्रदान की।

✻ **इन्दौर-** सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य श्री चन्द्रकीर्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा. का आगामी चार्तुमास श्री तिलकेश्वर पार्श्वनाथ श्री संघ तिलकनगर, इन्दौर में होगा। पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में श्री संघ की विनंती पर पूज्यश्री ने स्वीकृति प्रदान की।

✻ **मुंबई-** श्री कलापूर्ण सूरी समुदाय के आचार्य भगवंत श्री पूर्णचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. का चार्तुमास श्री नगर जैन श्वेतांबर जैन संघ श्री आदिनाथ जिनालय, एम.जी.रोड़, गोरेगांव (वेस्ट) मुंबई (महा.) में होगा।

✻ अक्ल का जिनके दिवाला होता है, विनय विवेक का अभाव होता है, अहंकार और क्रोध की पूंजी हृदय में लबालब भरी होती है, उन्हें उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं रहता है।

जैनाचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी का आगामी चार्तुमास आगम मंदिर सिद्धक्षेत्र में होगा

✻ प्रतापगढ़ में उपधान तप की पूर्णाहुति हुई
✻ पालीताना में नव्वाणुं का आयोजन होगा।

नागेश्वर- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज 258 ओली आराधक श्री आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, मुनिश्री चैत्य रत्नसागरजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी, मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा. आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास सिद्धक्षेत्र गिरिराज की छत्र छाया में स्थित आगम मंदिर में होगा साथ ही आगामी कार्तिक पूनम में वहां भव्य नव्वाणुं यात्रा और संभवतः उपधान तप का आयोजन भी होगा।डग के बाद सिंहगढ़ में प्रतिष्ठा के बाद आचार्यश्री का विभिन्न श्री संघों में निरंतर विहार चल रहा है। मालवा के श्री संघों में भी विहार होकर आपकी उज्जैन आदि संघों में आगमन होगा। यहां से धार की ओर विहार होकर गुजरात की ओर प्रस्थान करेंगे।

उपधान माल सम्पन्न

पालीताना- श्री आदिनाथ दादा के दरबार में नवकारधाम प्रांगण में आयोजित श्रावक से श्रमण बनने की आराधना, उपधान तप की भव्य माल का आयोजन दिनांक 5 फरवरी को सम्पन्न हुआ। सैकड़ों आराधकों तथा धर्मिष्ठों की उपस्थिति में पूज्य आचार्य देवेश श्री रत्नचंद सूरीश्वरजी म.सा. डहेलवाला की तथा आचार्यश्री उदय रत्नसूरीजी म.सा.आदि साधु-साध्वी की निश्रा में मालरोपण अच्छी बोलियों के साथ सम्पन्न हुआ।

पार्श्वनाथ मंदिर का शिलान्यास

डग- भगवान के मंदिरों की संस्कृति भारत देश में तब से बनी है जब से मानव सभ्यता का विकास हुआ है। भारत देश की संस्कृति ऋषि और कृषि की संस्कृति है और जहां संतों महंतों का निवास होगा वहां मंदिरों का होना सहज है। पुरानी झील पर स्थित धींग परिवार द्वारा स्वद्रव्य से पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर का शिलान्यास पर जैन आचार्य श्री जीतरत्नसागर सूरीजी म.सा. ने धर्मसभा में व्यक्त किये। मंदिर हमारी ऊर्जा के केन्द्र है जहां व्यक्ति आत्मशांति पाता है एवं समाधिमय जीवन जीने का आर्शीवाद पाता है वे लोग भाग्यशाली है जो मंदिर का निर्माण होते हुए देखते है ।जैन मंदिर का शिलान्यास न सिर्फ जैनों बल्कि संपूर्ण नगरजनों के विकास एवं अभ्युदय का कारण है । शिलान्यास समारोह में शिलान्यास 5 फरवरी को सम्पन्न हुआ । पूज्यश्री की निश्रा में यहां 5 फरवरी को श्री माणिभद्रवीर के जन्म दिवस पर 108 हवन तथा महापूजन भी पढ़ाई गई।

✻ **सादड़ी-** श्री वल्लभसूरी समुदाय के श्री धर्मनंदविजयजी ध्रुव म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास-सादड़ी (राज.) में होगा। आपके चार्तुमास की घोषणा दिनांक 17 जनवरी को श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय पायधुनी मुंबई में हुई।

सिलेहगढ़ में प्रतिष्ठा महोत्सव

सिलेहगढ़- बोलिया के समीप सिलेहगढ़ में श्री केशरिया आदिनाथ दादा आदिजिनबिम्ब अधिष्ठायक देवा देवी के प्रतिष्ठा के अंतर्गत पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 8 से 12 फरवरी तक यह आयोजन पूज्यपूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज एवं साध्वीश्री सौम्ययशा श्रीजी एवं साध्वी श्री अर्पिता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में सम्पन्न हुआ। दिनांक 8 फरवरी को आरंभ हुए महोत्सव के अंतर्गत पूज्यश्री का प्रवेश दिनांक 9 फरवरी को श्री माणिभद्र वीर का हवन पूजन तथा परमात्मा के 18 अभिषेक हुए। परमात्मा की भव्य रथयात्रा का आयोजन 10 फरवरी को हुआ। दिनांक 11 फरवरी को पूज्य आचार्यश्री के वरद हस्ते शुभ लग्नांश बेला में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। दिनांक 12 फरवरी को द्वारोद्घाटन तथा सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई।

कच्छ वागड़ धर्मशाला में गुणानुवाद सभा

पालीताना- योगीराज जैनाचार्य श्री कलापूर्णसूरीजी की 20 वीं पुण्य तिथि एवं मुनिप्रवर श्री जंबु विजयजी की जन्म शताब्दी पर कच्छ वागड़ धर्मशाला में दिनांक 4 फरवरी को भव्य गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। धर्मसभा पूज्य आचार्यश्री पूर्णचंद्र सूरीजी म.सा. एवं आचार्य श्री पुंडरिक रत्नसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में की गई।

सागर समुदाय में पूज्यपाद गच्छाधिपतिजी के साथ आगामी चार्तुमास की महत्वपूर्ण उद्घोषणा

✻ गच्छाधिपतिश्री का आगामी चार्तुमास का निर्णय होना बाकी।

पूना- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवालेपूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा की 83 वीं दीक्षा तिथि कार्तिक वद-10 दिनांक 29-11-2021 को पूज्यश्री की ओर से अभी तक निर्धारित कुछ महत्वपूर्ण चार्तुमास की घोषणा की गई जो निम्न हैः- ✻ भोपावर प्रतिष्ठाचार्य पूज्य आचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री नववल्लभ पार्श्वनाथ जैन संघ नरोड़ा, अहमदाबाद (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री जिनचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा., पूज्य आचार्य श्री हेमचंद्रसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास सूरत उमरा संघ तथा जैन महाजन पेढ़ी चाणस्मा दो क्षेत्रों में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री चन्द्रशेखर सागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री पादलिप्तपुरम्, पालीताना (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री चन्द्रानन सागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री लक्ष्मीवर्धन तपागच्छ भवन, पाल-सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी एवं आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी आदि ठाणा का चार्तुमास आगम मंदिर, पालीताना (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री मुक्तिसागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री अभ्युदयपुरम्, उज्जैन (म.प्र.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री सागरचंद्र सागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री आगमोद्धारक धानेरा आराधना भवन, वेसु-सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री नयचंद्रसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास ॐकारसूरी आराधना भवन, पाल-सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री अक्षयचंद्र सागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास मेरीन डाईव जैन संघ, मुंबई (महा.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री गुणचंद्रसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास वड़चौटा संघ, सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य पंन्यास प्रवर श्री लब्धि चंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास ओपेरा जैन संघ पाली-अहमदाबाद (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य गणिवर्य श्री आगमचंद सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास रांदेर रोड़, जैन संघ, सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य गणिवर्य श्री तारकचंद्र सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास जैन महाजन पेढ़ी, ऊंझा (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास मालदास स्ट्रीट जैन संघ, उदयपुर (राज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री सुधर्मसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास अहमदाबाद (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री कुलरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास नेमुभाई की वाड़ी, गोपीपुरा सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री दीपरत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास पार्श्व विहार जामनगर (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री सुमतिसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास पालीताना गांव (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री देवप्रभसागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास बाबुलनाथ जैन संघ चौपाटी-मुंबई (महा.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री आगमरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास मुबंई जैन संघ में होने की संभावना है।

✻ पूज्य मुनिश्री अभिनंदनचंद सागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास बीजापुर जैन संघ कर्नाटक में होगा।

✻ पूज्य मुनि श्री निपुण्यचंद सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास राजस्थान में होगा।

आचार्य श्री विजयविज्ञानप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. आगामी कार्यक्रम

✻ 8-3-2022 सेल्वास में सूरिमंत्र की पांचवीं पीठिका पूर्णाहुति कार्यक्रम।
✻ 9-3-2022 सेल्वास में सूरिमंत्र की पांचवीं पीठिका पूर्णाहुति मांगलिक।
✻ 15-3-2022 सूरत-अठवा लाइन्स में पूज्यरी का प्रवेश।
✻ 20-3-2022 सूरत-अठवा लाइन्स में पूज्यश्री की निश्रा में पू.सा. सर्वज्ञाश्रीजी म.सा. की 100 वीं ओली पारणा।
✻ 6-4-2022 भिवंडी-गोकुलनगर में पूज्यश्री का प्रवेश।
✻ 8-4-2022 भिवंडी-गोकुलनगर में पूज्यश्री की निश्रा में सामूहिक चैत्री ओली की आराधना।
✻ 17-4-2022 भिवंडी-गोकुलनगर में पूज्यश्री की निश्रा में सामूहिक चैत्री ओली का पारणा।
✻ 27-4-2022 शाहपुर-मानस मंदिर में मुमुक्षु स्वीटीकुमारी की भागवती प्रवज्या।
✻ 4-5-2022 भायखला-मुंबई में अक्षयतृतीया के दिन वर्षीतप का पारणा।
✻ 11-5-2022 गोडीजी-पायधुनी में 210 वीं ध्वजा सुबह 8.00 बजे गोडीजी-पायधुनी में सूरिमंत्र की पांचवीं पीठिका छट्‌ठी बार प्रारंभ।
✻ 26-5-2022 गोडीजी-पायधुनी में सूरिमंत्र की पांचवीं पीठिका का पूर्णाहुति पूजन।

चार्तुमास....

आचार्यश्री तीर्थभद्रसूरीजी म.सा. के सुशिष्यों के आगामी चार्तुमास-

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थतिलक विजयजी म.सा., साध्वी श्री पूर्णयशा श्रीजी का चार्तुमास मैसूर श्वेतांबर मूर्ति पूजक संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थपूर्ण विजयजी म.सा. का चार्तुमास तेनाली श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थसुन्दर विजयजी म.सा. का चार्तुमास सिकन्दराबाद श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थनन्दन विजयजी म.सा. का चार्तुमास मदुराई श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा. का चार्तुमास चुलई श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थध्यान विजयजी म.सा. का चार्तुमास कडप्पा श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थचैतन्य विजयजी म.सा. का चार्तुमास कोयबंटूर श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थपूर्ण विजयजी म.सा. का चार्तुमास तेनाली श्री संघ में होगा।

✻ परम पूज्य आचार्य श्री राजशेख सूरीश्वरजी म.सा., आचार्य श्री रत्नाकर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री सांचोर श्री संघ में होगा।

मेरुगिरी उत्सव

पालीताना- बंधु त्रिपुटी आचार्य भगवंत श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी आचार्य भगवंत पूज्यपाद जिनचंद्रसागर सूरीजी एवं पूज्यपाद श्री हेमचंद्र सागर सूरीजी महाराजा आदि लगभग 500 साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में दिनांक 15 फरवरी को मेरुगिरी उत्सव के अंतर्गत गिरिराज के सभी जिनमंदिर में अष्ट प्रकार की पूजन हुई प्रेरणास्त्रोत अनुयोगाचार्य श्री लब्धि चंदसागरजी म.सा. है।

अरसीकेरे में बसंत पंचमी मेला लगा

अरसीकेरे- दक्षिण भारत के शांतिसूरीधाम में दिनांक 5 फरवरी को पूज्य योगाचार्य श्री शांतिसूरीजी महाराज के जन्मदिवस पर बसंत पंचमी मेला आयोजित किया गया। तीर्थप्रेरक मार्गदर्शक अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबुमलजी हरण रहे। वरघोड़ा, गुरुदेव की अष्ट प्रकार की पूजा का आयोजन हुआ।

श्री अवंति पार्श्वनाथ दादा की ध्वजा चढ़ाई गई

उज्जैन- खारतागच्छाधिपति जैनाचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में सुप्रसिद्ध तीर्थ श्री अवंति पार्श्वनाथ दादा के भव्य शिखर पर दिनांक 15 फरवरी को गुलेच्छा परिवार के द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इसके पूर्व दिनांक 13 फरवरी को दादा के दरबार में 18 अभिषेक का आयोजन किया गया।

पूज्यपाद सागर गच्छाधिपति की स्थिरता पूना में बनी हुई है

✻जैन वर्धमान आगम मंदिर का ध्वजारोहण हुआ
✻ स्वास्थ्य और मौसम से विहार स्थगित किया।
✻ चार्तुमास के बारे में विचरणा चल रही है।
✻ समयानुसार आगे का निर्णय लिया जायेगा।

पूना- पूज्यपाद सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करने वाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा पूज्य आचार्य भगवंत अजातशत्रु श्री नंदीवर्धनसागर सूरीजी, एवं आचार्य श्री हर्षसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में श्री जैन वर्धमान आगम मंदिर की 26 वीं ध्वजारोहण के पावन प्रसंग पर त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन दिनांक 14 से 16 फरवरी तक आयोजित किया गया। 16 फरवरी को ध्वजा चढ़ाई गई।

अभ्युदयपुरम् में प्रतिष्ठा 4 फरवरी 2023 को

उज्जैन-पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा.,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागर जी म.सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में अभ्युदयपुरम् का प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 4 फरवरी 2023 को 23 दिवसीय भव्य आयोजन के साथ होगा। प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 700 चार्तुमास स्थलों पर 250 आचार्य भगवंतों को आमंत्रण दिया गया है साथ ही प्रतिष्ठा हेतु 108 युवाओं की टीम बनाई जा रही है। लगभग 70-75 जिनबिम्बों के साथ नवग्रह मंदिर, 45 जिनालय का निर्माण यहां हुआ है। प्रतिष्ठा महोत्सव को सफल बनाने की तैयारियां आरम्भ हो गई है।

जैन ज्ञान भण्डारों का इतिहास विमोचन हुआ

पूना- श्री आगमोद्धारक देवर्धि जैन आगम मंदिर कात्रज पूना में आचार्य श्री पुण्यरत्नसूरी आचार्य श्री यशोरत्न सूरीजी एवं गणिवर्य श्री वैराग्यरति विजयजी आदि की निश्रा में ''ज्ञान भण्डारों का इतिहास'' पुस्तक का विमोचन 3 मार्च को किया गया।

कृति कोठारी साध्वी कृतार्थप्रभाजी बनी

इन्दौर- महावीरबाग इन्दौर में गच्छाधिपतिश्री जिनमणिप्रभसागर सूरीजी की निश्रा में कृति कोठारी की दीक्षा महोत्सव 21 फरवरी को हुआ। 100 से अधिक साधु-साध्वी की निश्रा में आयोजित दीक्षा महोत्सव में कृति कोठारी दीक्षित होने के बाद साध्वीश्री कृतार्थप्रभा श्रीजी म.सा. के नाम से जानी जावेगी। दीक्षा महोत्सव आयोजन में श्री दिलसुखमलजी कटारिया का सहयोग रहा।

ध्वजारोहण

कैवल्यधाम का 15 वां ध्वजारोहण आचार्य श्री जिनपीयूष सागरसूरीजी म.सा. की निश्रा में 25 फरवरी को 18 अभिषेक के बाद 26 फरवरी को हुआ। सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई। आचार्यश्री का विहार भोपाल (म.प्र.) की ओर हुआ है।

✻ अयोध्यापुरम् तीर्थ की 19 वीं वर्षगांठ बंधुबेलड़ी श्रीपूज्य आचार्य श्री जिनचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा., पूज्य आचार्य श्री हेमचंद्रसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में 22 फरवरी को ध्वजा यात्रा के बाद विजय मुर्हूत में ध्वजारोहण हुआ। इस अवसर पर अष्टप्रकारी पूजन के वार्षिक आदेश दिये गये।

श्री शंखेश्वर में उपधान

शंखेश्वर- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जयानंद विजयसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में बागरेचा परिवार के द्वारा उपधान तपाराधना का आयोजन होने जा रहा है। 44 उपधान तप की निश्रा प्रदान करनेवाले आचार्य श्री की निश्रा में शंखेश्वर में उपधान की माल की रथयात्रा दिनांक 3 मार्च को आयोजित होगी एवं मोक्षमाल 4 मार्च को होगी।

जिसे (लगन) लगी है, उसी को लगी है और उसी ने उसको जाना है वहीं ''पी पी'' पुकारता है उसके ही चरणसंग से लगती है और जब लगती है, तभी छुटकारा होता है।

अष्टान्हिका प्रवज्या महोत्सव के साथ रिद्म ने संयम ग्रहण कर दीपदर्शना नाम पाया

महिदपुर- वर्तमान जिनशासन को आगे ले जाने का कार्य संयमी आत्माओं के द्वारा ही संभव परमात्मा के शासन की प्रभावना वर्तमान युग में सर्वश्रेष्ठ साधन संयम मार्ग ही है। महिदपुर में कोचर परिवार की संयमी आत्मा रिद्म ने इस सत्य को सबके सामने स्वीकारते हुए परमात्मा के कल्याणकारी मार्ग संयम को अंगीकार कर सागर समुदाय का नाम एक बार फिर गौरवान्वित किया है। रिद्म का अष्टान्हिका प्रवज्या महोत्सव 9 से 16 फरवरी तक भव्य रुप से महिदपुर में सम्पन्न हुआ। दिनांक 9 फरवरी से आरंभ हुए संयम महोत्सव में श्री माणिभद्र महापूजन-हवन-श्री सिद्धचक्र, श्री वीश स्थानक महापूजन पढ़ाई गई। दिनांक 12 फरवरी को महोत्सव निश्रादाता जैनाचार्य पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा., पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागर जी म.सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा का मंगल प्रवेश हुआ। दिनांक 13 फरवरी को महिदपुर संयम के रंग में रंग गया। मुमुक्षु आत्मन् का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित हुआ जिसमें महिदपुर में शासन की जोरदार प्रभावना की। दिनांक 14 फरवरी को दीक्षा मंडप में हजारों धर्मिष्ठों की उपस्थिति में पूज्य आचार्यश्री ने शुभ लग्नांशवेला में दीक्षा क्रिया विधि का शुभारंभ किया। संयम उपकरणों की बोलियां बहुत ही अच्छी रही, रजोहरण ग्रहण करने के बाद मुमुक्षु आत्मन् रिद्म कोचर ने साध्वीवर्या श्री निरागदर्शना श्रीजी का शिष्यत्व ग्रहण कर साध्वीश्रीदीपदर्शना नाम पाया। इस प्रसंग पर पूज्य साध्वीश्री प्रियदर्शनाश्रीजी की सुशिष्या साध्वी श्री मुक्तिदर्शनाश्री आदि ठाणा के साथ अन्य साध्वी भगवंतों की मंगल निश्रा रही। दिनांक 15 फरवरी को नूतन साध्वीजी के पगले सांसारिक परिवार के निवास पर हुए। श्री शत्रुंजय आदिनाथ तीर्थधाम किला मंदिर में आयोजन होने के साथ परमात्मा के 18 अभिषेक भी हुए है। दिनांक 16 फरवरी को परमात्मा का शक्रस्तव अभिषेक किया गया।

जैनाचार्य श्री जयानंदसूरी का चार्तुमास पालीताना

शंखेश्वर- त्रिस्तुतिक संघ के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री जयानंद सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा-140 का चार्तुमास पालीताना सुनिश्चित हुआ है। प्रवेश 8 जुलाई को होगा। मई में आपश्री की निश्रा में 20 दीक्षा की संभावना है। शंखेश्वर में चल रहे 800 आराधकों के उपधान तप की माल 20 मार्च को होगी। पालीताना में 12 सितंबर से उपधान तप होगा। माल 2 नवंबर को होगी।

उपाध्यायश्री का चार्तुमास

शंखेश्वर- पू. नूतन उपाध्यायश्री दिव्यानंदविजयजी का चार्तुमास पालीताना होगा। प्रवेश 8 जुलाई को होगा।

गच्छाधिपतिश्री का मध्यप्रदेश की ओर विहार

बोरट- पुण्य सम्राट युग प्रभावक श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी महाराजा की जन्मभूमि पेपराल तीर्थ से गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा.,वरिष्ठ मुनिराज श्री वीररत्न विजयजी म.सा., मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा., मुनिराज श्री प्रशमसेन विजयजी म.सा. मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा.आदि ठाणा-11 का 14 फरवरी को बोरटा नगर में अंजनशाला की प्रतिष्ठा में निश्रा प्रदान की। प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न होने के बाद गच्छाधिपतिश्री आदि ठाणा मध्यप्रदेश पधारेंगे।

इन्दौर रेसकोर्स में चार्तुमास

पालीताना- आचार्य त्रिपुटी बंधु आचार्यश्री के द्वारा पूज्य गणिवर्य सम्यकचंद सागरजी म.सा.का चार्तुमास रेसकोर्स-इन्दौर घोषित हुआ है।

कालधर्म....

सागर समुदाय की साध्वीवर्या पू. विनीतायशा श्रीजी के ग्रुप के साध्वी श्री सत्वयशाश्रीजी (70) दीक्षा (8) का सूरत में कालधर्म 18 फरवरी को हुआ। 19 फरवरी को पालकी निकली।

आगमोद्धार का अप्रेल 2022 का अंक श्री महावीर स्वामी जन्म कल्याणक एवं चैत्र नवपद ओलीजी विशेषांक रहेगा।
- सम्पादक

हमारे तीज-त्यौहार

1- फाल्गुन सुदी-3	शनिवार	5/3/2022	20 विहरमान का दीक्षा कल्याणक
2- फाल्गुन सुदी-8	गुरुवार	10/3/2022	चौमासी अट्ठाई आरम्भ
3- फाल्गुन सुदी-13	बुधवार	16/3/2022	फाल्गुनी तेरस सिद्धाचलजी की छः गांव की यात्रा
4- फाल्गुन सुदी-14	गुरुवार	17/3/2022	चौमासी चवदस
5- फाल्गुन सुदी-15	शुक्रवार	18/3/2022	भोमियाजी होली महोत्सव शिखरजी तीर्थ
6- चैत्य वदी-3	सोमवार	21/3/2022	आचार्य गुरुदेव नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा का 79 वां जन्म दिवस
7- चैत्य वदी-6	बुधवार	23/3/2022	आचार्य श्री मालवोद्धारक चन्द्रसागरसूरीजी का कालधर्म दिन
8- चैत्य वदी-8	शुक्रवार	25/3/2022	श्री ऋषभदेव प्रभु का जन्म कल्याणक वर्षीतप आरंभ
9- चैत्य वदी-9	शनिवार	26/3/2022	शंखेश्वर आगम मंदिर संस्थापक पंन्यास अभ्युदयसागरजी म.सा.का कालधर्म दिन

पुष्प नक्षत्र :

आरम्भः-फाल्गुन सुदी-10, रविवार, दिनांक 13/03/2022, समय- 20.07 बजे से

समाप्तः-फाल्गुन सुदी-11, सोमवार, दिनांक 14/03/2022, समय- 22.09 बजे तक

पंचक :–

आरम्भः- चैत्य वदी-11, सोमवार,
दिनांक 28/03/2022, समय- 23.56 बजे से

समाप्तः- चैत्य सुदी-1, शनिवार,
दिनांक 02/04/2022, समय- 11.22 बजे से

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

❊ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चातुर्मास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

❊ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

❊ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

❊ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

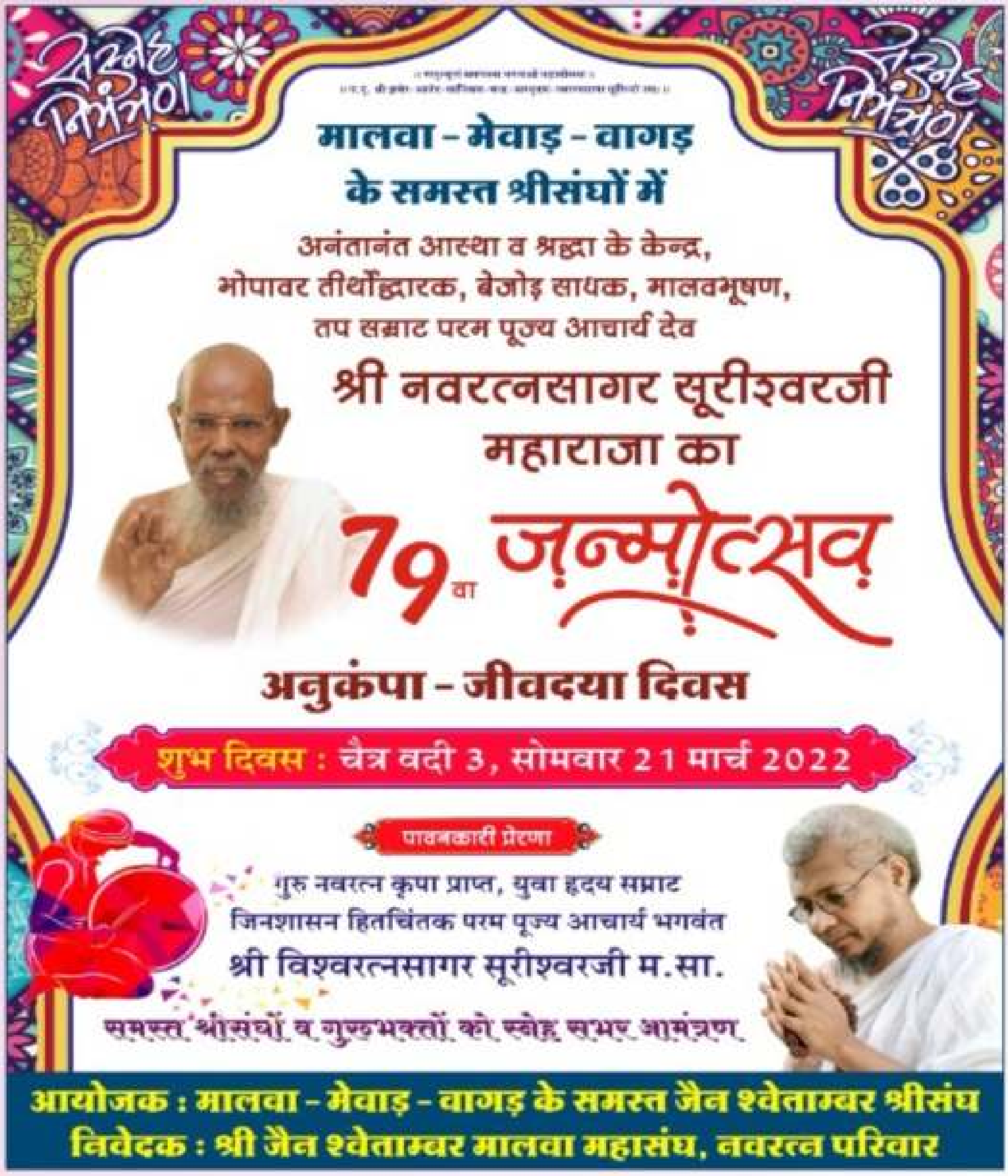

वर्ष 27 | फाल्गुन-चैत्र | मार्च-2022 | अंक 1 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्रति, बुक पोस्ट

श्रीमान् ....

....

....

स्टाम्प टिकिट

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-
डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड़, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897